अपने
विश्वास को
बोलें

यीशु ने उसको उत्तर दिया, "परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा" (मरकुस 11:23)

आशीष रायचूर

केवल विनामूल्य वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च अँड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा मुद्रित और वितरित।

प्रथम संस्करण: डिजिटल प्रति मई 2020 (संस्करण 1.3)

सम्पर्क

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA
Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: **apcwo.org**

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सर्व हक्क स्वाधीन।

बाइबल परिभाषाएं, इब्रानी और ग्रीक शब्द तथा उनके अर्थ निम्नलिखित स्रोतों से लिए गए हैं :

Thayer's Greek Definitions, Published in 1886,1889; public domain
Strong's Hebrew and Greek Dictionaries, Strong's Exhaustive Concordance by JamesStrong, T. D.LLD. Published in 1890; public domain
Vine's Complete Expository Dictionary of Old and New Testament Words,@1984,1996, Thomas Nelson, Inc, Nashville, TN.

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

डाक सूची

यदि आप हमारी नई पुस्तके पाने के लिए अपना नाम हमारी डाक सूची में चाहते हैं, तो कृपया ईमेल द्वारा अपना सही पता हमें भेजें :

contact@apcwo.org

भारत में विनामूल्य बल्क ऑर्डर

आपकी स्थानीय कलीसिया में, बायबल अध्ययन समूह, बाइबल कॉलेज, सेमिनारों, सभाओं, पुस्तकालयों, व्यापार केन्द्रों में वितरण हेतु हम आनंद के साथ हमारी पुस्तकें विनामूल्य भेजना चाहते हैं। कृपया ईमेल द्वारा पुस्तकों की संख्या और पाने वालों के पते भेजें : bookrequest@apcwo.

अपने विश्वास को बोलें

मरकुस 11:22,23

यीशु ने उसको उत्तर दिया, "परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।"

नायसीन विश्वास

नायसीन विश्वास मसीही विश्वास के महान सिद्धांतां के विषय में समस्त कलीसिया जो विश्वास करती है उसकी पवित्र शास्त्र के आधार पर घोषणा है। इसे सर्वप्रथम सन 325 में बिशपों की एक सभा में नायसीन परिषद में मान्य किया गया था और सदियों से इसे विश्वास के साहसपूर्ण अंगीकार के रूप में उपयोग किया जा रहा है। अंग्रेजी का 'क्रीड' शब्द लैटिन भाषा के 'क्रिडो' से आता है जिसका अर्थ है 'मैं विश्वास और भरोसा रखता हूं।'

हम एक परमेश्वर, सर्वशक्तिमान पिता पर,
जो आकाश और पृथ्वी का, सारी देखी और अनदेखी वस्तुओं का सृजनहार है,
विश्वास करते हैं।
हम एक प्रभु, यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास करते हैं,
जो सनातन रूप से परमेश्वर से उत्पन्न हुआ,
परमेश्वर से परमेश्वर, ज्योति से ज्योति, सच्चे परमेश्वर से सच्चा परमेश्वर,
बनाया न गया परन्तु उत्पन्न हुआ,
पिता के साथ एक; उसके द्वारा सबकुछ उत्पन्न हुआ।
हमारे लिए और हमारे उद्धार के लिए वह स्वर्ग से उतर आया,
पवित्र आत्मा से देहधारी हुआ,
और कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ और मनुष्य बनाया गया।
हमारे लिए वह पन्तियुस पिलातुस के राज्य में क्रूस पर चढ़ाया गया;
वह मारा गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन फिर से जी उठा
और पवित्र शास्त्र के अनुसार
वह स्वर्ग पर चढ़ गया और पिता के दाहिने हाथ जा बैठा।
वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने के लिए फिर महिमा में आएगा,
और उसके राज्य का कभी अंत न होगा।
हम प्रभु, जीवन के दाता, पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं
जो पिता और पुत्र से निकलकर आता है,
जो पिता और पुत्र के साथ आराधना और महिमा पाता है,
जिसने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की।
हम पवित्र कैथलिक (सार्वत्रिक) और प्रेरितीय कलीसिया में विश्वास करते हैं।
हम पापों की क्षमा के लिए एक बपतिस्मे का अंगीकार करते हैं।
हम मृतकों के पुनरूत्थान की, और आने वाले जगत के जीवन की बांट जोहते हैं। आमेन।

टिप्पणी : "कैथलिक" शब्द का अर्थ "समस्त" या "सार्वत्रिक" है।

हमारी घोषणा

हम आम तौर पर अपनी रविवार की आराधना सभाओं के दौरान परमेश्वर के वचन को सुनने से पहले, मण्डली के रूप में एक साथ मिलकर यह घोषणा करते हैं।

यह परमेश्वर का वचन है।

यह परमेश्वर मुझसे बोल रहा है।

मैं वह हूं जो परमेश्वर कहता है कि मैं हूं।

मैं वही कर सकता हूं जो परमेश्वर कहता है कि मैं कर सकता हूं।

मैं वह सब कुछ बन जाऊंगा जिसका वादा परमेश्वर ने किया था।

मैंने उद्धार पाया, मैं चंगा हो गया, बचाया गया, छुड़ाया गया।

मैं धन्य, विजयी, समृद्ध, जयवन्त हूं।

मैं परमेश्वर का सेवक हूं, मसीह का सेवक हूं।

और कई लोगों के लिए परमेश्वर की आशीष का जरिया हूं।

मुझे उसका वचन प्राप्त है, मैं उसके वचन पर विश्वास करता हूं, और मैं उसके वचन के अनुसार जी रहा हूं।

मसीह मेरा स्वामी है, और मैं उसे पूर्ण रूप से समर्पित हूं।

यीशु के नाम में, आमेन।

मेरे जीवन पर परमेश्वर के वचन की मेरी घोषणा

इन्हें इस बात के उदाहरण स्वरूप दिया गया है कि आपके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर आप परमेश्वर के वचन में अपना विश्वास बोलकर कैसे व्यक्त कर सकते हैं। परमेश्वर के वचन पर ध्यान-मनन करें। परमेश्वर का वचन आपके दिल में विश्वास उत्पन्न करने पाए। तो फिर, अपने विश्वास को बोलें।

अधिकार और प्रभुता

यीशु ने मुझे उनके नाम का उपयोग करने, उनकी ओर से उस कार्य को करने का अधिकार दिया है जो वह चाहता है कि किया जाए। उसके नाम में मैंने दुष्टात्माओं को निकाला और बीमारों को चंगा किया। यीशु ने मुझे शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है और किसी भी तरह से कुछ भी मुझे हानि नहीं पहुंचाएगा। मैं यीशु मसीह में पिता का दाहिनी ओर, प्रभुता और अधिकार के स्थान पर बैठा हूं। (मरकुस 16:17-18, लूका 10:19, इफिसियों 2:6)।

प्रार्थना का उत्तर

प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि जो कुछ मैं उसके नाम में पिता से विश्वास करके मांगूंगा, उसे मैं पाऊंगा। जब मैं प्रार्थना करता हूं, तब मैं जो कुछ मांगता हूं, तब विश्वास करता हूं कि मैंने उसे पा लिया है, और मैं उन्हें प्राप्त करूंगा। मैं उस में बना हूं, उसका वचन मुझमें बना रहता है, और जो कुछ मैं प्रार्थना में उससे मांगता हूं, वह मेरे लिए पूरा होता है (यूहन्ना 16:23-24, मत्ती 21:22, मरकुस 11:24, यूहन्ना 15:7)।

अभिषेक और सामर्थ

मैंने सामर्थ पाई है क्योंकि पवित्र आत्मा मुझ पर आया है और मैं यीशु मसीह का गवाह हूं। प्रभु का आत्मा मुझ पर है और वह मुझे चंगा करने, छुटकारा देने और कैदियों को आज़ाद करने की सामर्थ देता है। जिसने मुझे बुलाया है और अभिषेक किया है वह परमेश्वर है। मेरे जीवन पर पवित्र आत्मा का जो अभिषेक है वह शैतानी जुए को तोड़ देता है और लोगों से दुष्टात्माओं के सारे बंधनों को हटा देता है (प्रेरितों के काम 1:8, लूका 4:18-19, 2 कुरिन्थियों 1:21, यशायाह 10:27)।

आशीषें

मैंने हर प्रकार की आशीष पाई है जो परमेश्वर की ओर से आती है और परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जिन आशीषों को रखा है उनमें मैं भागी हूं और उनका मैं आनंद उठाता हूं। मैं जिस काम में हाथ डालता हूं उसमें आशीष पाता हूं। परमेश्वर मुझे संपन्नता सिखाता है और मेरे मार्गों में मेरी अगुवाई करता हूं। मैं परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में चलता हूं और उसकी आशीषें सोते की नाई बहती हैं जो कभी सूखता नहीं। विजय मेरे पास उन लहरों की नाई आती है जो समुद्र तट पर हिलोरे लेती हैं (इफिसियों 1:3, कुलुस्सियों 1:12, व्यवस्थाविवरण 28:6, यशायाह 48:17-18)।

हिम्मत और हियाव

मैं दृढ़ और अत्यंत साहसी हूं। मैं सिंह की नाई नीडर हूं। परमेश्वर ने मुझे भय का आत्मा नहीं दिया, परन्तु सामर्थ, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है। प्रभु मेरा भरोसा और सुरक्षा है (यहोशू 1:9, नीतिवचन 28:1, 2 तीमुथियुस 1:7, नीतिवचन 14:26)।

बड़े काम

मैं अपने परमेश्वर को जानता हूं, मैं बलवान हूं और मैं परमेश्वर के राज्य के लिए बड़े कामों को करूंगा। परमेश्वर अपनी सामर्थ के अनुसार कार्यों को पूरा करने के लिए मुझमें और मेरे द्वारा मेरी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम करता है (दानिय्येल 11:32, इफिसियों 3:20)।

भविष्य

परमेश्वर उन योजनाओं को जानता है जो उसने मेरे लिए रखी हैं, मेरी उन्नति की योजनाएं, मुझे आशापूर्ण भविष्य देने की योजनाएं। परमेश्वर ने समय से पहले उन बातों की योजना बनाई है जो वह चाहता है कि मैं करूं और मैं उनमें चल रहा हूं। सारी बातें मेरी भलाई के लिए कार्य कर रही हैं क्योंकि मैं उसके उद्देश्यों के लिए बुलाया गया हूं। जिन बातों को आंखों ने नहीं देखा, कानों ने नहीं सुना और जिन बातों की अब तक किसी ने कल्पना भी नहीं की उन्हें परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार किया है क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूं। (यिर्मयाह 29:11, इफिसियों 2:10, रोमियों 8:28, 1 कुरिन्थियों 2:9)।

भविष्य, घर और बच्चे

परमेश्वर ने मेरे घर को आशीष दी है। जयजयकार और उद्धार की ध्वनि मेरे घर को भर देती है। मेरे घर में शांति है, और मेरा घर शांति का स्थान, सुरक्षा का स्थान है और चिन्ताओं से मुक्त है। परमेश्वर मेरे बच्चों पर अपना आत्मा और अपनी आशीष उण्डेलता है। मेरे बच्चे प्रभु के सिखाए हुए हैं और उन्हें बड़ी शांति है। (नीतिवचन 3:33, भजनसंहिता 118:15, यशायाह 32:18, यशायाह 44:3, यशायाह 54:13)।

विश्वास

परमेश्वर ने मुझे विश्वास का एक परिमाण दिया है। मैं विश्वास से जीवित हूं, और देखकर नहीं। मैं विश्वास करता हूं और मैं परमेश्वर की महिमा देखूंगा। मेरे हृदय में विश्वास के साथ मैं पहाड़ों से बोलता हूं और वे हट जाते हैं और मेरे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है (रोमियों 12:3, 2 कुरिन्थियों 5:7, यूहन्ना 11:40, मत्ती 17:20)।

कृपा और रिश्ते

परमेश्वर ढाल की नाई मुझे कृपा से घेर लेता है। परमेश्वर मुझे आदर और सम्मान का कारण बनाता है। मैं दया और खराई से और दूसरे लोगों के साथ अच्छी समझ से चलता हूं। परमेश्वर मेरे दुश्मनों का भी मुझसे मेल कराता है। मैं प्रभु को आदर देता हूं यह देखकर जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं वे आनंदित होते हैं (भजनसंहिता 5:12, नीतिवचन 22:4, नीतिवचन 3:3-4, नीतिवचन 16:7, भजनसंहिता 119:74)।

मार्गदर्शन

पवित्र आत्मा मेरी अगुवाई करता है और मुझे सारे सत्य के मार्ग में ले चलता है। प्रभु मेरी अगुवाई करता है और मुझे उस मार्ग की शिक्षा देता है जहां मुझे जाना चाहिए। वह अपनी सचेत नज़रों से मेरा मार्गदर्शन करता है। प्रभु मेरी गति जानता है क्योंकि वह मेरे मार्गों से प्रसन्न होता है। मैं गिर भी जाऊं तौभी वह मुझे उठाता है और मुझे वापस ऊपर लाता है। परमेश्वर का वचन मेरा मार्गदर्शन करने वाला दीपक है और मेरे मार्ग की ज्योति है। मैं उसके वचन का अनुसरण करता हूं। (यूहन्ना 16:13, भजनसंहिता 32:8, भजनसंहिता 37:23-24, भजनसंहिता 119:105)।

स्वास्थ्य और चंगाई

स्वयं प्रभु यीशु ने मेरे सारे रोगों को और बीमारियों को क्रूस पर उठा लिया। क्रूस पर यीशु ने मेरे लिए जो कोढ़े खाए उसके घावों से मैं चंगा हूं। मेरा परमेश्वर मेरा चंगाई करने वाला है। परमेश्वर मुझे भोजन और जल देता है और मेरे सारे रोगों को मुझसे दूर करता है। वह मेरे सारे पापों को क्षमा करता है और मेरे सारे रोगों को चंगा करता है (मत्ती 8:17, 1 पतरस 2:24, निर्गमन 15:26, निर्गमन 23:15, भजनसंहिता 103:3)।

आनंद

प्रभु का आत्मा मुझे आनंद से भर देता है। मैं धार्मिकता से प्रेम करता हूं और दुष्टता से नफरत और इस कारण परमेश्वर मुझे आनंद और हर्ष से अभिषिक्त करता है। प्रभु का आनंद मुझे सामर्थ देता है और मुझे बल से भर देता है। आशा का परमेश्वर मुझे आनंद और शांति से परिपूर्ण करता है। मैं पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद के साथ चलता हूं (गलातियों 5:22, भजनसंहिता 45:7, नहेम्याह 8510, रोमियों 15:13, रोमियों 14:17)।

धर्मी ठहराया गया और धर्मी

मैं मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराया गया हूं। मैं मानो ऐसा हूं ‘जिसने कभी पाप न किया हो’ क्योंकि यीशु मसी मुझे सारे पापों से शुद्ध करता है। मैंने धार्मिकता के वस्त्र धारण किए है और मैं परमेश्वर के सामने बिना किसी दोषभावना के विश्वास और आश्वासन के साथ खड़ा हूं। पवित्र आत्मा मुझे इस आश्वासन से भर देता है कि मैं उसकी सन्तान हूं, और मैं उसे ‘अब्बा और पिता’कहकर पुकारता हूं (रोमियों 3:22, 1 यूहन्ना 1:7, 2 कुरिन्थियों 5:21, रोमियों 8:1,15)।

प्रेम

परमेश्वर के आत्मा ने परमेश्वर का प्रेम मेरे हृदय में उण्डेला है। मैंने परमेश्वर के प्रेम से लोगों से प्रेम करने की सामर्थ पाई है। मुझमें जो परमेश्वर का प्रेम है वह मुझे धीरजवंत, दयालू बनाता है, वह मुझे ईर्ष्यालू, घमण्डी, शिष्टाचार रहित, स्वार्थी और तुनक मिजाज बनने से रोकता है। मेरे साथ किए गए अन्याय का मैं हिसाब नहीं रखता (रोमियों 5:5, 1 कुरिन्थियों 13:4-5)।

दीर्घायु

परमेश्वर मुझे दीर्घायु से तृप्त करता है। प्रभु मेरे जीवन को अच्छी बातों से भर देता है, ताकि मैं उकाब की नाई जवान और दृढ़ रहूं (भजनसंहिता 91:16, निर्गमन 23:26, भजनसंहिता 103:5)।

मन और विचार

मेरा मन पवित्र भूमि है। मैं मेरे मन में केवल उन्हीं विचारों की अनुमति देता हूं जो शुद्ध, उत्तम, सदाचारी, सही और आदर के योग्य हैं। मुझमें स्वस्थ मन, स्वस्थ स्मरण शक्ति, स्वस्थ एकाग्रता और स्वस्थ समझ है। मैं अपने विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को परमेश्वर को समर्पित करता हूं और प्रत्येक विचार को मसीह का आज्ञाकारी बनाता हूं (फिलिप्पियों 4:8, 2 तीमुथियुस 1:7, 2 कुरिन्थियों 10:4-5)।

संसार पर और शरीर पर जय पाना

मैं परमेश्वर से जन्मा हूं और मैं संसार पर और जो कुछ उसमें है, उस पर जय पाता हूं। मैं शरीर की पापमय अभिलाषाओं पर, आंखों की लालसाओं और घमण्ड जय पाता हूं। मैं परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव का भागी हूं और मैं नैतिक सड़ाहट से जो संसार में है, दूर रहता हूं। पवित्र आत्मा की सामर्थ से मैं मेरे शरीर के सारे पापमय कामों का अंत करता हूं। मैं आत्मा

में चलता हूं और मेरे शरीर की पापमय इच्छाओं के अधीन नहीं होता। (1 यूहन्ना 5:4, 2 पतरस 1:3-4, रोमियों 8:13, गलातियों 5:16)।

शांति, संतोष और विश्राम

मैं अपनी चिन्ताओं को परमेश्वर के सामने रखता हूं और परमेश्वर की शांति जो मानवीय समझ से परे है, मेरे हृदय और मन को भर देती है। मैं संतोष और भरोसे के साथ चलने का चुनाव करता हूं और यह मुझे बल से भर देता है। मैं उस विश्राम में चलता हूं जो प्रभु मुझे देता है। (1 पतरस 5:7, फिलिप्पियों 4:7, यशायाह 30:15, मत्ती 11:28,29)।

लहू की सामर्थ

यीशु के लहू ने मुझे खरीदा है और छुड़ाया है, और मुझे परमेश्वर की परम पवित्र उपस्थिति में प्रवेश करने का साहस दिया है। यीशु के लहू ने मुझे छिपा लिया और सुरक्षा दी है। मैं यीशु के लहू के द्वारा परमेश्वर के साथ वाचा में हूं। यीशु के लहू ने मुझे मेरे पूर्वजों के गलत मार्गों से छुड़ाया है। मैं यीशु के लहू से दुश्मन पर जय पाता हूं। (प्रेरितों के काम 20:28, इफिसियों 1:7, 1 यूहन्ना 1:7, इब्रानियों 13:12, निर्गमन 12:13, 1 पतरस 1:18-20, प्रकाशितवाक्य 12:11)।

संपन्नता और सफलता

मैं उस वृक्ष के समान हूं जो नदी के किनारे लगा है। मैं अपनी ऋतु में फल देता हूं। मेरे पत्ते मुरझाते नहीं और जो कुछ मैं करता हूं वह सफल होता है। मैं अपने हाथों के सभी कामों में आशीष पाता हूं। मैं प्रभु का, उसके वचन का और उसके मार्गों का अनुसरण करता हूं, और वह मुझे सम्पन्नता देता है और सफल बनाता है। जब मैं नम्रता के साथ और परमेश्वर के भय में चलता हूं, तब वह मुझे संपन्नता, आदर और लम्बी आयु देकर आशीषित करता है (भजनसंहिता 1:1-3, व्यवस्थाविवरण 28:8, यहोशू 1:8, नीतिवचन 22:4)।

सुरक्षा और छुटकारा

मैंने परमेश्वर को मेरा बचाने वाला बनाया है, परम प्रधान को मेरा रक्षक बनाया है। मुझ पर कोई विपत्ति नहीं पड़ेगी, कोई दुख मेरे डेरे के निकट नहीं आएगा। संकट के समय परमेश्वर मेरे साथ रहता है। वह मुझे उत्तर देता है और मुझे छुड़ाता है। मेरे विरोध में बनाए गए कोई भी हथियार मुझे हानि नहीं पहुंचा पाएंगे। परमेश्वर मेरी रक्षा करता है और मुझे विजय देता है। और मेरे विरोध में उठने वाली प्रत्येक जीभ को परमेश्वर मेरे सामने नीचा कर देगा (भजनसंहिता 91:10,11,15, भजनसंहिता 34:7, यशायाह 54:17)।

तरक्की

तरक्की, उन्नति और बढ़ौतरी परमेश्वर की ओर से आती है। परमेश्वर मेरी तरक्की के लिए जगह बनाता है। जब मैं प्रभु के अधीन होता हूं तब वह मुझे अपने समय में उंचा उठाता है। परमेश्वर ही है जिसने मुझे नेतृत्व, अधिकार और प्रभाव के स्थान में रखा है (भजनसंहिता 7:6-7, याकूब 4:10, व्यवस्थाविवरण 28:13)।

प्रयोजन और पूर्ति

मेरा परमेश्वर मेरी सारी ज़रूरतों को उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है पूरा करेगा। यहोवा मेरा चरवाहा है और मुझे कुछ घटी न होगी। परमेश्वर मेरे लिए सूर्य और ढाल है। वह कोई अच्छा पदार्थ मुझ से रोक नहीं रखता। वह मुझे ज़रूरत से अधिक देता है ताकि मेरे पास हमेशा मुझे आवश्यक सब कुछ हो और दूसरों को आशीषित

करने के लिए भरपूर हो। परमेश्वर ही है जो मुझे धन कमाने की सामर्थ देता है। (फिलिप्पियों 4:19, भजनसंहिता 23:1, भजनसंहिता 84:11, 2 कुरिन्थियों 9:8, व्यवस्थाविवरण 8:18)।

चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्म

विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे, मैं उसके नाम में नई भाषाएं बोलता हूं, मैं दुष्टात्माओं को निकालता हूं, मैं बीमार पर हाथ रखता हूं और वे चंगे होते हैं। परमेश्वर मेरे साथ है और वह चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों से अपने वचन की पुष्टि करता है। जो काम यीशु ने किया उन्हें मैं भी करूंगा और उनसे बड़े कामों को करूंगा क्योंकि यीशु पिता के पास गया है। जब मैं यीशु के सुसमाचार को बताता हूं तब परमेश्वर चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों से और पवित्र आत्मा के वरदानों से गवाही देता है (मरकुस 16:17-18, मरकुस 16:20, यूहन्ना 14:12, इब्रानियों 2:3-4)।

नींद

परमेश्वर मुझे अच्छी नींद देता है। मैं लेट जाता हूं और मैं नहीं डरता। मैं लेट जाता हूं और मेरी नींद मीठी होती है। मैं नया होकर जाग उठता हूं और ताज़गी महसूस करता हूं (भजनसंहिता 127:2, भजनसंहिता 4:8, नीतिवचन 3:24, भजनसंहिता 3:5)।

मेरे जीवन में परमेश्वर का आत्मा

मैं पवित्र आत्मा का मंदिर हूं। परमेश्वर का आत्मा मुझमें वास करता है। वह मेरी अगुवाई और मार्गदर्शन करता है। वह मुझे सारी बातें सिखाता है। जब मैं आत्मा में चलता हूं तब मैं अपनी शारीरिक अभिलाषाओं के अधीन नहीं होता। वह मुझ पर होता है और मुझे सामर्थ देता है। उसकी उपस्थिति मुझमें से नदी की नाई बहती है और मेरे आसपास के लोगों को आशीष देती है, चंगा करती है, और छुटकारा देती है। (1 कुरिन्थियों 3:16, रोमियों 8:14, 1 यूहन्ना 2:27, गलातियों 5:16, यूहन्ना 7:38-39)।

विजयोल्लास और जीत

परमेश्वर मुझे सारी बातों में विजयोल्लास में ले चलता है। मैं उस विजय में चलता हूं जो प्रभु ने मेरे लिए क्रूस पर हासिल की। परमेश्वर की सहायता से मैं वीरता दिखाऊंगा (2 कुरिन्थियों 2:14, कुलुस्सियों 2:14, यशायाह 53:12, भजनसंहिता 60:12)।

बुद्धि, समझ और प्रेरणा

मसीह मेरी बुद्धि है। बुद्धि, समझ, युक्ति और सामर्थ का आत्मा मुझ पर ठहरा है। प्रभु ने मुझे सारी बातों की समझ दी है। उसका वचन मुझे ज्योति और समझ से भर देता है। मेरे भीतरी मनुष्यत्व में परमेश्वर मुझे समझ प्रदान करता है। (1 कुरिन्थियों 1:30, यशायाह 11:1-2, 2 तीमुथियुस 2:7, भजनसंहिता 119:130, अय्यूब 32:8)।

गवाह

मैं यीशु मसीह के लिए सिंह की नाई निडर हूं। मैं यीशु मसीह के सुसमाचार से लज्जित नहीं होता। मैं उसे मनुष्यों के सामने कबूल करता हूं, वह मुझे स्वर्ग में पिता के सामने कबूल करता है (प्रेरितों के काम 1:8, रोमियों 1:16, मत्ती 10:32)।

मेरे जीवन में परमेश्वर का वचन

मैं घोषणा करता हूं कि परमेश्वर का वचन सत्य है। उसका वचन मेरे जीवन में प्रबल है। उसने अपने वचन की सामर्थ से मेरे जीवन संभाला है, थाम लिया है और नियंत्रित किया है। मेरी दुनिया में सब कुछ परमेश्वर के वचन के अधीन है और परमेश्वर के वचन के अनुरूप अपने आप को ढालता है (यूहन्ना 17:17, भजनसंहिता 119:128, इब्रानियों 11:3)।

मेरी "मसीह में" घोषणाएं

मैं मसीह में जो हूं, वही मैं वास्तव में हूं। मेरी पहचान, सुरक्षा, महत्व, और आत्म-मूल्य उसमें, उससे और उसके लिए है। परमेश्वर ने मसीह में मुझे जो बनाया है उसी पर मेरी अपनी छवि, मेरी आत्म-प्रतिष्ठा और भरोसा आधारित है। मैं मसीह में जो हूं वह पूर्णतया इस बात पर आधारित है कि परमेश्वर ने मेरे प्रति अपने अत्याधिक, बिनशर्त प्रेम के कारण क्या किया है।

मैं घोषणा करता हूं कि मैं मसीह में जो हूं वही मैं वास्तव में हूं।

मैं मसीह में नई सृष्टि हूं। पुरानी बातें बीत गई हैं। मैं अंदर से नया हो गया हूं (2 कुरिन्थियों 5:17)। मेरा पुराना जीवन खत्म हो चुका है और मेरा नया जीवन मसीह में सुरक्षित है। यह नया जीवन जो मैं जी रहा हूं वह स्वयं मसीह की ओर से आता है (कुलुस्सियों 3:3)। मैं जो नई सृष्टि हूं, वह परमेश्वर के स्वरूप में सृजी गई है और परमेश्वर के चरित्र, धार्मिकता, और पवित्रता से परिपूर्ण है। मैं मसीह में नई सृष्टि के रूप में जीवित हूं (इफिसयों 4:24)। सन्तान आश्वस्त हुई
मसीह में मैं परमेश्वर की सन्तान, परमेश्वर का वारिस और मसीह यीशु का संगी वारिस हूं। मैं परमेश्वर के परिवार का और परमेश्वर के राज्य का हिस्सा हूं (रोमियों 8:17)। मसीह में पिता मुझे उसी तरह प्रेम करता है जैसे वह अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करता है। मैं इस प्रेम के विषय में आश्वस्त हूं (यूहन्ना 16:27, यूहन्ना 17:23)। मुझे मसीह में परमेश्वर के प्रेम से कुछ भी अलग नहीं कर सकता। मेरे लिए उसके प्रेम के कारण, मैं हर परिस्थिति में जयवन्त से भी बढ़कर हूं (रोमियों 8:37,39)। मसीह में मुझ पर पवित्र आत्मा की मुहर लगी है। परमेश्वर ने मुझ पर अपने स्वामित्व का चिन्ह अंकित किया है (इफिसियों 1:13-14)। मसीह में मैं परमेश्वर के पवित्र मंदिर का, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके निवास का स्थान हूं। परमेश्वर मुझमें वास करता है और मेरे द्वारा अपने आपको प्रगट करता है (इफिसियों 2:21-22)।

मैं धर्मी ठहराया गया, दोष मुक्त हूं, परमेश्वर की नज़रों में योग्य बनाया गया हूं और यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेरा मेल है। मैं मसीह में परमेश्वर के साथ सही स्थान रखता हूं (रोमियों 5:1-2)। मसीह में मेरे विरोध में दंड की आज्ञा नहीं है। मैं परमेश्वर के साथ मुक्त रूप से, भरोसे के साथ बिना किसी लज्जा, दोष, या दंड के बात कर सकता हूं (रोमियों 8:1)। मसीह में मैं परमेश्वर के निकट लाया गया हूं और आत्मा के द्वारा स्वयं पिता के पास मुझे सीधे प्रवेश है (इफिसियों 2:13,18)।

पुराना पापमय स्वभाव मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, मेरे जीवन पर से पाप की सामर्थ तोड़ दी गई है और मैं पाप के बंधन से आज़ाद हूं। अब मुझ पर पाप की प्रभुता नहीं है (रोमियों 6:6,14)। मसीह में मैं अंधकार की शक्तियों से छुड़ाया गया हूं और यीशु मसीह के राज्य में पहुंचाया गया हूं। शैतान को मुझमें कोई स्थान नहीं, मुझ पर कोई दावा नहीं और न कोई अधिकार है। मैं परमेश्वर की सम्पत्ति हूं - आत्मा, प्राण और शरीर (कुलुस्सियों 1:13-14, 1 कुरिन्थियों 6:20)। मैं यीशु मसीह के लहू से छुड़ाया गया हूं। मैं मोल लिया गया हूं। मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमेश्वर का है (इफिसियों 1:7)। मसीह में मैं पाप की सामर्थ से आज़ाद किया गया हूं। मैं मसीह में मर गया और मसीह के साथ जिलाया गया हूं।

पुराने जीवन की सामर्थ तोड़ दी गई है (कुलुस्सियों 2:11-12)।

मैं आत्मिक रीति से मसीह के साथ एक हो गया हूं। वह दाखलता है और मैं उससे जुड़ी हुई डाली हूं। वह मुझमें है और मैं उसमें हूं। उसका जीवन मेरे द्वारा प्रवाहित होता है और मेरे द्वारा अभिव्यक्त होता है। मेरे द्वारा प्रवाहित होने वाले उसके

जीवन की सामर्थ और चरित्र को मैं व्यक्त करता हूं। मैं उसकी महिमा के लिए बहुत फल लाता हूं (1 कुरिन्थियों 6:17, यूहन्ना 15:1-7)। मैं उसमें पूर्ण हूं और परमेश्वर की सारी बहुतायत से सारी भरपूरी से परिपूर्ण हूं। वह मुझे अपने आप से सरोबार करता है (कुलुस्सियों 2:9-10)। मैं यीशु में हूं और जैसे यीशु चलता है वैसे मैं चलता हूं। मैं उसके प्रेम में, उसके अनुग्रह में और उसकी सामर्थ में चलता हूं (1 यूहन्ना 2:6)। मैं अंगीकार करता हूं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और मैं परमेश्वर में वास करता हूं और परमेश्वर मुझमें वास करता है। मैं उसके साथ एकता में अपना जीवन जीता हूं (1 यूहन्ना 4:15)।

प्रभु यीशु स्वयं मेरी बुद्धि है। उसमें मैं परमेश्वर के साथ सही स्थान में रखा गया हूं। मैं पवित्र हो गया हूं और परमेश्वर के लिए अलग किया गया हूं और स्वतंत्र किया गया हूं (1 कुरिन्थियों 1:30)। मसीह में मैं उसके हाथों की रचना हूं और उसने मुझे भले कामों के लिए उत्पन्न किया है जो उसने मेरे करने के लिए नियोजित किया है (इफिसियों 2:10)।

मैंने परमेश्वर का भरपूर अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान पाया है और मैं जीवन में राज्य करता हूं। यीशु मसीह के द्वारा मैं जीवन में प्रभुता रखता हूं (रोमियों 5:17)। परमेश्वर हमेशा, हर परिस्थिति में और हर हालात में मुझे मसीह में जयवन्त बनाता है। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि वर्तमान में परिस्थितियां कैसी दिखती हैं, मैं यीशु में विजयी होता हूं (2 कुरिन्थियों 2:14)। मैं परमेश्वर से जन्मा हूं और मैं संसार पर, अंधकार के कामों पर और इस संसार की बुराई पर जय पाता हूं। मैं विजयी हूं (1 यूहन्ना 5:4)। परमेश्वर ने मुझे जिलाया है और मुझे मसीह में स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ पर बैठाया है। मैं अंधकार की सारी शक्तियों पर, शैतान पर और सारी दुष्टात्माओं पर अधिकार के स्थान पर विराजमान हूं (इफिसियों 2:4-6)।

मैंने मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आशीष पाई हैं। परमेश्वर की सारी आशीषें मेरी हैं। विश्वास से मैं उन्हें ग्रहण करता हूं और उनमें चलता हूं (इफिसियों 1:3)। मसीह में मैं अब्राहम की आशीष का वारिस हूं। मैं धर्मी ठहराया गया हूं। मैं परमेश्वर का मित्र हूं। मैंने सारी बातों में आशीष पाई है। मैं राष्ट्रों के लिए आशीष बनने हेतु आशीषित किया गया हूं। मेरे दुश्मनों पर मैंने जय पाई है (गलातियों 3:29)। परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएं हां और आमेन हैं। मैं मेरे जीवन के लिए उसकी प्रतिज्ञाओं की परिपूर्णता प्राप्त करता हूं (2 कुरिन्थियों 1:20)।

मैं मसीह में जो हूं वही मैं वास्तव में हूं।

विषयसूची

1. शब्द दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होते हैं

2. प्रभुता शब्दों के द्वारा की जाती है

3. उसके वचन के अनुसार अपने आप को पुकार

4. आपके शब्द आशीष को जारी करते हैं

5. परमेश्वर का वचन समय से पहले लिखी गई आपकी रिपोर्ट है, उसे बोलें!

6. वचन आपके निकट है - वचन बोलें

7. उसके वचनों को अपने मुंह में रखें

8. उसकी प्रतिज्ञाएं बनी रहती हैं - और हमारी घोषणा भी

9. परमेश्वर के साथ आपकी वाचा की घोषणा करें

10. ऐसे वचन बोलें जो परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण योग्य हैं

11. हर परिस्थिति में परमेश्वर आपके लिए कौन है यह घोषित करें

12. प्राकृतिक विश्व परमेश्वर की आवाज़ का उत्तर देता है

13. प्राकृतिक विश्व उसके वचन के द्वारा रचा गया

14. आपकी जीभ उत्तम दिनों को और दीर्घायु को ला सकती है

15. उसके वचन की घोषणा करना उसकी वाचा को दावे के साथ मांगना है

16. मैं यहोवा के विषय कहूंगा

17. स्वर्गदूत उसके वचन के स्वर को सुनते हैं

18. यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा कहें

19. उत्सव और उद्धार की ध्वनि को बनाए रखें

20. आपके हृदय के अंदर से वो ताकतें आती हैं जो आपके जीवन को आकार देती हैं

21. धार्मिकता के वचन जीवन और बल को मुक्त करते हैं

22. शब्द चंगा कर सकते हैं और स्वस्थ बना सकते हैं

23. मनभावने वचनों की सामर्थ मुक्त करें

24. आपका जीवन आपके वचनों के फलों से भर जाता है

25. आपके वचनों में जीवन और मृत्यु की सामर्थ है

26. आपके मुंह में उसके वचन राष्ट्रों को प्रभावित कर सकते हैं

27. सूखी हड्डियों से बोलें कि वे जी जाएं

28. आपके वचन स्वर्ग में सुने जाते हैं

29. वचन आत्मिक से प्राकृतिक क्षेत्र में संचरित होते हैं

30. जो बलहीन हो वह कहे, मैं वीर हूं

31. अपने वचनों से परमेश्वर को दुखी न करें

32. ‘लिखा है’ कहना सीखें - यीशु ने ऐसा ही किया

33. वचन से दुष्टात्माओं को निकालें

34. जब आप उसे पृथ्वी पर मान लेते हैं, तब स्वर्ग में आपका जिक्र होता है

35. आपके हृदय में जो है उसे आपके जीवन में जारी करें

36. आप आपके वचनों से धर्मी सिद्ध होते हैं या दोषी ठहराए जाते हैं

37. वचन बांधने और खोलने के लिए राज्य के अधिकार को जारी करते हैं

38. पहाड़ से बोलें

39. अपने इच्छित परिणाम को बोलें

40. विश्वास करें कि आप जो कहते हैं वह पूरा होगा

41. प्रार्थना में विश्वास के वचन बोलें

42. उसके वचन के साथ सहमत हों

43. बीमारियों को जाने की आज्ञा दें

44. आंधी से बोलें

45. घोषित करें कि लोग बंधनों से मुक्त हों

46. अभिषिक्त वचन आत्मा का जीवन ले चलते हैं

47. विश्वास से आज्ञा दें

48. वचन आपकी मीरास में ले आते हैं

49. मैं विश्वास करता हूं कि वह वैसा ही होगा जैसा मुझे बताया गया था

50. जो बातें हैं ही नहीं उन्हें ऐसा बुलाएं मानो वे हैं

51. उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार बोलें

52. जीवन में राज्य करें - प्रभुता के वचन बोलें

53. विश्वास इस प्रकार बोलता है

54. उद्धार के लिए अंगीकार

55. उसकी सभी प्रतिज्ञाओं के लिए आपके ”हां और आमेन“ की घोषणा करें

56. हम विश्वास करते हैं और इसलिए हम बोलते हैं

57. अनुग्रह प्रदान करने हेतु शब्दों का इस्तेमाल करें

58. आत्मा की तलवार इस्तेमाल करें

59. भविष्यद्वाणी के शब्दों के साथ अच्छा युद्ध लड़ें

60. मसीह में प्रत्येक अच्छी बात को कबूल करें

61. उसका वचन आपकी दुनिया को संभाल सकता है और क्रमबद्ध कर सकता है

62. यीशु हमारा महायाजक है जिसे हम अंगीकार करते हैं

63. अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें

64. उसके वचनों ने जगत की रचना की

65. परमेश्वर ने कहा है, इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं

66. अपनी जीभ पर काबू रखें, अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर काबू रखें

67. आपके वचन आपके जीवन का मार्गदर्शन करते है, शासन करते हैं और आशीष देते हैं।

68. लगातार विश्वास की भाषा बोलें

69. शैतान का सामना करें

70. आशीष के वचनों को जारी करें

71. वचन विजय के लिए आपके विश्वास को जारी करते हैं

72. हम परमेश्वर के हैं, इसलिए हम जैसे परमेश्वर की ओर से बोलते हैं

73. मेम्ने के लहू के द्वारा और अपनी गवाही के वचन के द्वारा जय पाते हैं

परिचय

जब मैं पीछे पलटकर यीशु में अपने आत्मिक सफर की ओर देखता हूं, तो पाता हूं कि जिस अनुशासन या आदत ने मुझे मज़बूत बनाने में मदत की वह थीं मेरे विश्वास को बोलना। मुझे याद है कि मेरी नवयुवास्था में मैंने परमेश्वर के साथ अपने समय के एक भाग के रूप में 30 मिनटों या उससे अधिक समय अलग निकाला था, जब मैं केवल मेरे जीवन, मेरे वर्तमान और भविष्य पर परमेश्वर के वचन की घोषणा करता था। मैं शुरू से आखिर तक, मेरे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर परमेश्वर का वचन बोलता था और घोषणा करता था कि मैं मसीह में कौन हूं। इससे प्रतिदिन मेरे विश्वास का पोषण हुआ। फिर लगभग हर परिस्थिति में इस तरह सोचना, जो परमेश्वर कहता है वह कहना और अपने विश्वास को बोलना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया बन गई। ऐसा करने से हर परिस्थिति के मध्य ऊपर उठने में और विजय हासिल करने में सहायता मिली। इसी तरह मैं अंत तक जीना चाहूंगा - उसके सामर्थी, अटल वचन में मेरे विश्वास को बोलना। इस पुस्तक की योजना आप तक ऐसा कुछ पहुंचाने के लिए की गई है जिसने मुझे बहुतायत से समृद्ध बनाया है - हर समय परमेश्वर में और उसके वचन में आपके विश्वास को बोलने का सरल अभ्यास। इसे अपने जीवन का मार्ग बना लें।

परमेश्वर ने समस्त सृष्टि की योजना बनाई। उसने नियमों को कायम किया ताकि उसके द्वारा रचे गए संसार को शासित किया जा सके। हम प्राकृतिक, भौतिक क्षेत्र के नियमों को समझते हैं। हमने भौतिकी, रसायन शास्त्र और अन्य क्षेत्रों में इनमें से कई नियमों या सिद्धांतो को परिमाणित किया है, और हमारे लाभ के लिए उनका उपयोग किया है और इन नियमों का उल्लंघन न करने के बारे में हम सावधान हैं यह जानते हुए कि इसके परिणाम खतरनाक हो सकते हैं। उसी तरह आत्मिक नियम भी है जो आत्मिक और प्राकृतिक क्षेत्रों के साथ हमारे व्यवहार या बातचीत को शासित करते हैं। जो स्वाभाविक है वह आत्मिक से निकल आया है, इसलिए ये आत्मिक नियम हमारे स्वाभाविक क्षेत्र को भी प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछ आत्मिक नियम हमारे लिए परमेश्वर के वचन में प्रगटकिए गए हैं, ताकि हम उन्हें समझ सकें और उनके अनुसार जी सकें।

पवित्र शास्त्र में प्रगटकिए गए कई नियमों या आत्मिक सच्चाइयों के मध्य, हम परमेश्वर के वचन की सामर्थ के बारे में, हमारे द्वारा कहे गए शब्दों की सामर्थ, विश्वास में हमारे द्वारा कहे गए परमेश्वर के वचन की सामर्थ और पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर कहे गए शब्दों (भविष्यद्वाणी के वचन) की सामर्थ के बारे में सीखते हैं। परमेश्वर के वचन में अंतर्निहित सामर्थ है। बायबल परमेश्वर का वचन है जो हमें लिखित रूप में दिया गया है ताकि हम उसे ग्रहण कर सकें। हमारे मुंह के शब्दों में सामर्थ है जो हमारे जीवनों को व्यक्तिगत तौर पर प्रभावित करती है। परमेश्वर में और उसके वचन में विश्वास से कहे गए शब्दों में सामर्थ है। हमारा विश्वास परमेश्वर में और उसके वचन में है। विश्वास में कहे गए शब्द, हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन से जन्मे हुए शब्द, पहाड़ों को हटाते हैं, तूफानों को शांत करते हैं और हमारे क्षेत्र में अलौकिक को जारी करते हैं। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से आने वाले शब्दों में भी सामर्थ है। पवित्र आत्मा हमारे क्षेत्र में उसके उद्देश्यों को बोलने हेतु हमें प्रेरित करता है और सिखाता है। जब हम उसकी आज्ञा के अनुसार करते हैं, तब स्वाभाविक क्षेत्र में सामर्थी बातें होती हैं। इन सबका संबंध हमारे शब्दों से, हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों से है।

संपूर्ण पवित्र शास्त्र में परमेश्वर अपने लोगों को उसके वचन बोलने की आज्ञा देता है। हमारे हृदयों में विश्वास के साथ हमारे मुंह से निकलने वाले शब्दों के रूप में कहे गए उसके वचन उसकी रचनात्मक, आश्चर्यकर्म करने वाली सामर्थ को

हमारे स्वाभाविक या प्राकृतिक क्षेत्र में जारी करते हैं। हमारे मुंह से निकलने वाले शब्दों के रूप में कहा गया उसका वचन दुश्मन के विरोध में हमारा हथियार बन जाता है।

हम हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य पर परमेश्वर का वचन बोलने के द्वारा हमारी दुनिया को आकार दे सकते हैं। हमें सभी परिस्थितियों में हर समय विश्वास से भरे शब्दों को बोलना सीखना है। विश्वास में बोलना पहाड़ या वर्तमान तूफान की भयानकता के अस्तित्व को इन्कार करना नहीं है। बल्कि विश्वास पहाड़ से बोलता है और मार्ग में बने रहने के उसके अधिकार का इन्कार करता है। विश्वास हवाओं से बोलता है और उपद्रव मचाने के उसके अधिकार को छीन लेता है, उसके बजाय उस शांति और नीरवता के लिए मार्ग बनता है जो परमेश्वर जारी करता है। विश्वास बीमारी से बोलता है और उसे छोड़ जाने के लिए और परमेश्वर की ओर से आने वाली चंगाई और स्वास्थ्य के लिए मार्ग बनाता है।

कई लोग हीन आत्म-सम्मान, आत्मविश्वास का अभाव, डर, आशंका, चिंता, अवसाद और अन्य कई भावनात्मक समस्याओं और बंधनों के साथ संघर्ष करते हैं। जानबूझकर और हर परिस्थिति में, अपने जीवनों पर परमेश्वर के वचन की सामर्थ को बोलने की आदत भावनात्मक रूप से, पूर्ण आज़ादी और स्वास्थ्य की कुंजी है। उस पर अमल करें। वह विनामूल्य है। उसके लिए कुछ विश्वास और अनुशासन की ज़रूरत है। आप कभी पहले जैसे नहीं रहेंगे!

हमने कई मुख्य वचनों को लेने की कोशिश की है जो हमें हमारे शब्दों के महत्व, परमेश्वर के वचन को बोलने की सामर्थ, विश्वास से परिपूर्ण शब्दों को बोलने की सामर्थ, आत्मा के द्वारा प्रेरित शब्दों को बोलने की सामर्थ पर अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। (पवित्र शास्त्र के अन्य परिच्छेद होंगे जिन्हें आप इस सूची में जोड़ने की इच्छा रख सकते हैं। कृपया ऐसा करें।) इन्हें संक्षिप्त, आसानी से ग्रहण किए जाने वाले अध्यायों में संकलित किया गया है। आपके व्यक्तिगत समय के लिए, पारिवारिक प्रार्थना के दौरान आपके छोटे समूह में प्रतिदिन की आराधना के लिए इस पुस्तक का इस्तेमाल करें। आपके वर्तमान और आपके भविष्य पर विश्वास में परमेश्वर के वचन बोलने की सामर्थ की अपने आपको याद दिलाने के लिए उन्हें बार बार पढ़ें। जब आप अपने विश्वास को बोलते हैं तब परमेश्वर के वचन की सामर्थ आपकी दुनिया को आकार देने पाए।

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

1. शब्द दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होते हैं

उत्पत्ति 1:1-5

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।

2 और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था : तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।

3 तब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" तो उजियाला हो गया।

4 और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया।

5 और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई, फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।

परमेश्वर एक महान अभिकल्पक, शिल्पकार और सब वस्तुओं का निर्माता है। हम अभी भी सृष्टि के विशाल विस्तार में कई बातों को खोज रहे हैं और समझने की कोशिश कर रहे हैं। परमेश्वर अनंत है और उसकी सृष्टि कई मायनों में उसकी रचना की असीमता की घोषणा करती है। परमेश्वर कई तरह से अपनी रचनात्मक प्रक्रिया को पूरा कर सकता था। शायद वह सिर्फ विचार करता है और भौतिक संसार में उसके विचार आकार लेते हैं। शायद वह स्वर्गदूतों की सेनाओं को काम पर लगाता ताकि उसके नक्शे के अनुसार प्राकृतिक क्षेत्र को आकार और स्वरूप प्राप्त हो। लेकिन परमेश्वर ने चीजों को अस्तित्व में लाने के लिए शब्दों का इस्तेमाल किया। बाईबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने अपने शब्दों के द्वारा सृष्टि का निर्माण किया। "परमेश्वर ने कहा ... और हो गया"।

उसके शब्दों ने उसकी अभिकल्पना (डिजाइन) और उसकी रचनात्मक सामर्थ को अस्तित्व में लाया जो उसके मन में थी। हम इस सच्चाई को पवित्र शास्त्र में दोहराते हुए देखते हैं। परमेश्वर उसके वचनों के माध्यम से काम करता है। वह बोलता है और जो वह बोलता है वह पूरा होता है। इस कारण प्राकृतिक क्षेत्र में जो कुछ है वह सब उसके वचनों के अधीन है और उसके वचनों का उत्तर देता है।

परमेश्वर आत्मा है और उसने प्राकृतिक क्षेत्र को अस्तित्व में लाने के लिए वचनों का उपयोग किया है। प्राकृतिक क्षेत्र आत्मिक क्षेत्र के शब्दों या वचनों को उत्तर देता है।

मनुष्य होने के नाते, बाईबल हमें सिखाती है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं। हम आत्मिक जीव हैं जिसके पास प्राण (मन, इच्छा, भावनाएं) हैं, जो देह में वास करते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। हमारे वचन दो क्षेत्रों को भी जोड़ सकते हैं, आत्मिक और प्राकृतिक। हमारे शब्द हमें परमेश्वर के साथ जोड़ते हैं (या किसी और के साथ, उदाहरण के तौर पर, जादुटोना करने वाले दुष्ट शक्तियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए उनके शब्दों के उपयोग करते हैं)। हमारे शब्द हमारे स्वाभाविक जगत को भी प्रभावित करते हैं। और जब परमेश्वर हमारे द्वारा उसके वचनों को बोलता है, तब उसकी सामर्थ हमारे द्वारा मुक्त होती है और हमारे जगत को प्रभावित करती है!

2. प्रभुता शब्दों के द्वारा की जाती है

उत्पत्ति 1:26-28

26 फिर परमेश्वर ने कहा, “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।”

27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।

28 और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, “फलो-फूलो, और पृथ्वी में भर जाओ; उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखों।”

उत्पत्ति 2:19-20

19 और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।

20 इसलिये आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके।

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को बनाया और उन्हें एक आज्ञा दी जिसके बारे में हमने उत्पत्ति के पहले दो अध्यायों में पढ़ा और हम उसका उल्लेख उत्पत्ति की आज्ञा के रूप में करते हैं। उत्पत्ति की आज्ञा का भाग लोगों के लिए था कि वे पृथ्वी के समस्त प्राणियों पर प्रभुता करें। प्रभुता करने का अर्थ है राज्य करना। यह दिलचस्प बात है कि परमेश्वर इन प्राणियों में से प्रत्येक को आदम के पास ले आया कि वह उन्हें नाम दे। इन कामों में से एक का परिणाम यह था कि प्रत्येक जीवित प्राणी समझ गया कि कौन अधिकारी है। इसलिए पृथ्वी का प्रत्येक प्राणी आदम की प्रभुता में हो गया। परमेश्वर ने आदम को पृथ्वी का अधिकारी ठहराया। अतः पृथ्वी का हर प्राणी आदम की प्रभुता के अधीन था, इसमें कोई सवाल नहीं था। आदम की प्रभुता या राज्य खुद परमेश्वर की ओर से प्राप्त था। जब आदम ने प्रत्येक प्राणी को बुलाया और उसे नाम दिया, तब वह शब्दों के द्वारा पृथ्वी पर परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रभुत्व और अधिकार का उपयोग कर रहा था। इस प्रक्रिया में परमेश्वर उसे समर्थन दे रहा था।

परमेश्वर ने उत्पत्ति की आज्ञा हटाई नहीं है। हमें परमेश्वर द्वारा प्रभुता रखने के लिए बनाया गया और आज्ञा दी गई है। प्रभुता शब्दों के द्वारा व्यक्त की जाती है और चलाई जाती है। इस क्षेत्र में आपके शब्द वस्तुओं पर परमेश्वर द्वारा दी गई प्रभुता को व्यक्त करने पाएं।

3. उसके वचन के अनुसार अपने आप को पुकारें

उत्पत्ति 17:4-5,15-16

4 देख मेरी वाचा तेरे साथ बंधी रहेगी, इसलिए तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा।

5 इसलिए अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहाम होगा, क्योंकि मैंने तुझे जातियों के समूह का मूल पिता ठहरा दिया है।

15 फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।

16 और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझको उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।

नए नियम में अब्राहम को विश्वास का पिता कहा गया है। यह देखना दिलचस्प है कि अब्राम और साराय के साथ व्यवहार करते समय उन्हें यह बताना आवश्यक था कि वे अपने नामों को बदलें ताकि वे अपने आप को उसके अनुसार बुलाना या पुकारना शुरू करें जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनके जीवनों के लिए की थी।

अब्राम का अर्थ था गौरवान्वित पिता, जबकि अब्राहम का अर्थ था बहुसंख्यों का पिता था।

सारै का अर्थ था राजसी या प्रभुता करने वाली, जबकि सारा का अर्थ था रानी या राजाओं की माता।

जितनी बार अब्राहम अपने आप को उस नाम से पुकारता था, उतनी बार वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा को अपने जीवन पर घोषित कर रहा था। वह कह रहा था, 'मैं कई राष्ट्रों का पिता हूं,' जैसा कि परमेश्वर ने मेरे विषय में कहा। जितनी बार सारा अपने आप को उस नाम से पुकारती थी, उतनी बार वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा को अपने ऊपर घोषित कर रही थी। वह कह रही थी, मैं राष्ट्रों की, राजाओं की, राजकुमारों की माता हूं, जैसा परमेश्वर ने मेरे बारे में कहा है। अब तक उन्हें सन्तान नहीं थी। लेकिन परमेश्वर ने जो कहा था उसे वे सच घोषित कर रहे थे। जब उन्होंने अपने आप को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार बुलाना शुरू किया, तब वह आरम्भ में हास्यपूर्ण और मूर्खतापूर्ण लगता होगा। परन्तु प्रतिज्ञा पूरी हुई और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसे वे बन गए!

परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार अपने आप को बुलाकर क्या वे कुछ गलत कर रहे थे? बिल्कुल नहीं! परमेश्वर ने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी थी। पौलुस ने इस बात को आगे रोमियों 4 में समझाया है जिस विषय में हम बाद में विचार करेंगे। हम से कहा गया है कि अब्राहम के विश्वास का अनुसरण करें।

हमारे पास परमेश्वर का लिखित वचन है, जहां परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए और उन सभों के लिए प्रतिज्ञाओं की घोषणा की है जो यीशु मसीह में हैं। ये प्रतिज्ञाएं परमेश्वर के सभी लोगों के लिए उपलब्ध हैं। उसने हमें इस योग्य बनाया है कि हम उस मीरास के भागी हों जो उसके लोगों के लिए उसके पास है (कुलुस्सियों 1:12)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को सत्य के रूप में अपने जीवन में घोषित करें। अपने आप को परमेश्वर के वचन के अनुसार पुकारें। परमेश्वर आपके लिए जो कहता है वह आप हैं। आप वह कर सकते हैं जो परमेश्वर कहता है कि आप कर सकते हैं। जो प्रतिज्ञा उसने की है वैसे ही आप बन जाएंगे।

4. आपके शब्द आशीष को जारी करते हैं

गिनती 6:22-27

22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

23 हारून और उसके पुत्रों से कह, कि तुम इस्राएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना कि,

24 यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करेः

25 यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करेः

26 यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे।

27 इस रीति से वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूंगा।

शब्द वे ज़रीया होते हैं जो आशीष को पहुंचातेहैं। हम इस विशिष्ट उदाहरण में देखते हैं कि परमेश्वर स्पष्ट आज्ञाएं देता है कि महायाजक को परमेश्वर के लोगों को कैसे आशीष देना है, उन पर परमेश्वर के नाम की घोषणा करना है, ताकि परमेश्वर अपने लोगों को आशीष दे। महायाजक प्रभु के नाम में "उनसे बोलता" था, उन पर घोषणा करता था, उन पर आशीष के वचनों को घोषित करता था।

पुराने समय के परमेश्वर के लोग इसी तरह से आशीष देते थे। इसहाक ने याकूब को आशीष दी, उसने उस पर आशीष के वचन कहे (उत्पत्ति 27:27-29)। वचन या शब्दों को बोलकर याकूब ने अपने पुत्रों को आशीष दी (उत्पत्ति 48,49)।

नई वाचा के याजकों के रूप में हमारे पास यह अवसर है कि हम अपने खुद के जीवनों पर, हमारे परिवारों के जीवनों पर, और अन्य लोगों पर प्रभु के नाम में आशीष के वचनों को बोलकर आशीष मुक्त कर सकते हैं। आप अपने आप के लिए, आपके वर्तमान और आपके भविष्य के लिए किस प्रकार के शब्दों को बोल रहे हैं? आप अपने परिवार के लिए और उनके भविष्य के लिए किस प्रकार के शब्द बोल रहे हैं? आपके आशीष के शब्द उन पर प्रभु की आशीष भेज सकते हैं।

5. परमेश्वर का वचन समय से पहले लिखी गई आपकी रिपोर्ट है, उसे बोलें!

गिनती 13:30-33

30 परन्तु कालेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने की मनसा से कहा, हम अभी चढ़कर उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देह हममें हम में ऐसा करने की शक्ति है।
31 परन्तु जो पुरुष उसके संग गए थे उन्होंने कहा, उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हममें हम में नहीं है; क्योंकि वे हमसे बलवान् हैं।
32 और उन्होंने इस्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, कि वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील डौल के हैं।
33 फिर हम ने वहां नपीलों को, अर्थात् नतीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।

गिनती 14:11

तब यहोवा ने मूसा से कहा, वे लोग कब तक तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे?

हम बारह जासूसों की घटना से परिचित हैं, जिनमें से दो यहोशू और कालेब थे। यहोशू और कालेब ने उन्हीं महाकायों को देखा था, लेकिन उनका अंतिम मूल्यांकन इस बात पर आधारित था कि परमेश्वर कौन है और परमेश्वर ने उनसे क्या वायदा किया है। कालेब ने कहा, "इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे...यहोवा के कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूं" (यहोशू 14:12)। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को थाम लिया और पैंतालीस वर्षों के बाद भी जो कुछ उसने कहा था उसमें कोई बदलाव नहीं किया!

परमेश्वर का वचन वह फल, रिपोर्ट, परिणाम है जो पहले से लिखा गया है। परमेश्वर के वचन के अनुसार बोलें। जी हां, अर्थात्, हमें महाकायों का सामना करना होगा, और ये महाकाय डरावने दिखाई देगें। हमें युद्ध लड़ने होंगे। परमेश्वर हमें जो देना चाहता है उसे हासिल करने के मार्ग में महाकाय और लड़ाइयां अवश्य होंगी। लेकिन इन महाकायों के समक्ष और इन लड़ाइयों के बीच, घोषित करें कि परमेश्वर कौन है और उसने आपसे क्या वायदा किया है (1 यूहन्ना 5:4)। घोषणा करें कि परमेश्वर आपको निरंतर विजयी बनाता है (2 कुरिन्थियों 2:14)। यह घोषणा करें कि परमेश्वर आपको दलदल की कीच से निकालता है, आपके कदमों को चट्टान पर खड़ा कर देता है और आपके मुंह में नया गीत भर देता है (भजन 40:1-4)। घोषणा करें कि आपकी सहायता प्रभु की ओर से आती है, जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है। आपका रक्षक न तो ऊंघता है और न सोता है (भजन 121)। आपका परमेश्वर कौन है इसकी घोषणा करें और यह घोषणा करें कि उसने आपसे क्या वायदा किया है। यह आपका परिणाम है जो पहले ही लिखा गया है।

6. वचन आपके निकट है - वचन बोलें

व्यवस्थाविवरण 30:11-14

11 देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है।

12 और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिये आकाश में चढ़कर उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?

13 और न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, कौन हमारे लिये समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?

14 परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चले।

परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग उसके वचन को अपने मुंह में और अपने हृदयों में रखें।

उसकी इच्छा थी कि वे उसके वचन को उनके मुंह में और उनके हृदय में रखें, ताकि वे उसके अनुसार कर सकें और उसके अनुसार जी सकें। परमेश्वर का वचन हमारे हृदयों और हमारे मुंह में बसने पाए। उसका वचन हमारे हृदयों को भरने पाए। उसके वचन से हमारे हृदयों में विश्वास का जन्म होता है। हमारे हृदयों में उसके वचन पर हम विश्वास करते हैं। उसका वचन हमेशा हमारे मुंह में होना चाहिए। हम उसे कहते हैं। हम उसे बोलते हैं। हम उसके मुंह के वचनों को, हमारे मुंह का वचन बनाते हैं। उसका वचन रहस्यमय या हमारी पहुंच से परे नहीं है। उसका वचन हममें है - हमारे हृदयों में और हमारे मुंह में। जब हम इस प्रकार जीवन बिताते हैं, तब उसका वचन हमारी जीवनशैली बन जाता है। हम उसके वचन के अनुसार जीते हैं।

उसका वचन हमारे हृदय में बसा हो और हममें वह देहधारण करे यह परमेश्वर का तरीका है। उसने हमें यह तरीका दिया। उसने कहा कि उसने अपना वचन हमारे लिए उपलब्ध कराया है। जब हम उसके वचन को अपने मुंह में (हमारी बोलचाल का हिस्सा) और हमारे हृदयों में (हमारे सोचविचार और विश्वास का हिस्सा) रखते हैं, तब उसका वचन हमारे प्रतिदिन के जीवन का भाग बन जाता है।

7. उसके वचनों को अपने मुंह में रखें

यहोशू 1:8

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

यहोशू के पास एक बड़ा काम था, परमेश्वर के लोगों को वाचा के देश में ले जाना। उसे मूसा का स्थान लेकर परमेश्वर के लोगों को आगे ले चलना था। परमेश्वर ने उसे एक आज्ञा दी थी, पवित्र शास्त्र के वचनों को हमेशा उसकी बोलचाल और विचारों का हिस्सा बनाना (मनन)। सारांश रूप में, परमेश्वर ने यहोशू को यह कहकर आज्ञा दी थी : 'व्यवस्था के वचन हमेशा तेरे मुंह में रहने पाएं। वचन पर मनन करते रहें। इस तरह से तू बड़ी सावधानी से वही करेगा जो वचन कहता है। इससे तुझे संपन्नता और सफलता प्राप्त होगी।'

समय बदल गया है, परमेश्वर का वचन और उसकी वचन की सामर्थ में कोई कमी नहीं आई है। यहोशू के दिन में, उसके समय में, और उसके जीवन के कामकाज में, परमेश्वर के वचन ने कुछ उसके लिए किया, वही आज हमारे दिन में, समय में और हममें से हर एक के कामकाज में करने की सामर्थ परमेश्वर का वचन रखता है। यदि हम परमेश्वर के पवित्र शास्त्र के वचनों को हमारे मुंह में हमेशा बने रहने की अनुमति देंगे, और हमारे विचार (मनन) को रात और दिन भर देंगे, तो हम उसके वचन के अनुसार चलेंगे। हमें जो कुछ करने के लिए कहा है उसमें हम संपन्न होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

यहोशू 1:8 के सिद्धांत को अपने जीवन में लागू करें। उसके पवित्र शास्त्र के वचन उसके मुंह के वचन बनें। वही कहें जो परमेश्वर कहता है। उसके वचन के अनुसार मनन करें और सोचें। उसके वचन के अनुसार जीवन बिताएं। आपके काम में आपको संपन्नता और सफलता प्राप्त होगी।

8. उसकी प्रतिज्ञाएं बनी रहती हैं - और हमारी घोषणा भी

यहोशू 14:10-12

10 और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब पैंतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिनमें इस्राएली जंगल में
घूमते फिरते रहे; उनमें यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं पचासी वर्ष का हूं।
11 जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझमें था उतना बल अभी तक मुझमें है; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने के
लिये जितनी उस समय मुझमें सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझमें सामर्थ्य है।
12 इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उसमें
अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने संभव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने
के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूं।

पैंतालीस वर्षों बाद, पच्यासी वर्ष की उम्र में भी कालेब आवेग और जोश से भरा था ताकि जाकर उस देश पर कब्जा करे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। कुछ महाकायों से लड़ना और उन्हें जीतना बाकी था। उसने परमेश्वर में अपने भरोसे को ठीक उसी तरह घोषित किया जैसा उसने पैंतालीस साल पहले किया था।

आप कब तक आपके जीवन में परमेश्वर के वचन को सही घोषित करने वाले हैं? सच्चाई यह है कि परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि झूठ बोले। उसका वचन सत्य है। उसका वचन बना रहता है। उसका वचन कभी नहीं बदलता। परमेश्वर ने अपने वचन में आपके विषय में जो प्रतिज्ञा और घोषणा की है वह सच है। उसका वचन हमेशा के लिए स्वर्ग में स्थिर है। हमारा परमेश्वर महान 'मैं हूं' है। वह कभी नहीं बदलता। वह कभी नहीं बदलता। इसलिए हम अपने परमेश्वर के विषय में जो कुछ कहते हैं और जो कुछ उसने प्रतिज्ञा की है उसे हम नहीं बदलते। हमारा परमेश्वर कौन है यह बोलना हम जारी रखते हैं। वह अब भी हमारा उद्धारकर्ता, चंगाईकर्ता, छुड़ाने वाला, मुक्तिदाता, प्रयोजनकर्ता, मार्ग बनाने वाला और आश्चर्यकर्म करने वाला है। वह अब भी हमारा स्वर्गीय पिता है। हम घोषणा करते हैं कि जिन बातों की उसने घोषणा की है वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अच्छी और सच है। वह हर समय, सभी ऋतुओं में अच्छी और सच रहेगी। इसलिए जिन बातों की उसने प्रतिज्ञा की है उसे हम पकड़े रहते हैं।

जैसा कालेब के साथ हुआ, वैसे ही परमेश्वर ने जिस बात की प्रतिज्ञा की है वहाँ अपने कदम को रखने के लिए (उसे अधिकार में लेने के लिए) समय लग सकता है। स्मरण करें, उसकी प्रतिज्ञाएं सदा के लिए हैं। वे समय के साथ नहीं बदलतीं। उसकी प्रतिज्ञाओं की अपनी घोषणा बनाए रखें।

9. परमेश्वर के साथ आपकी वाचा की घोषणा करें

1 शमूएल 17:26,36,45

26 तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस पास खड़े थे पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मारकर इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?
36 तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला; और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा; क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।
45 दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु में सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है।

जब दाऊद ने गोलियत पर हमला करने की तैयारी की, तब वहां महत्वपूर्ण सच्चाई थी जो दाऊद जानता था। दाऊद का खतना हो चुका था, अर्थात् वह ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के साथ वाचा बांधी थी। उसने गोलियत का उल्लेख "यह खतनारहित पलिश्ती" के रूप में किया, अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसकी परमेश्वर के साथ वाचा नहीं थी। दाऊद परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में था, इसलिए वह जानता था कि जीवित परमेश्वर उसके पक्ष में है। सेनाओं का प्रभु, स्वर्गीय और पृथ्वी की सेनाओं का प्रभु, दाऊद के साथ था। इससे बहुत फर्क पड़ता था।

जब दाऊद गोलियत का सामना करने के लिए दौड़ पड़ा, तब उसने ऐसा परमेश्वर के साथ उसकी वाचा के आधार पर किया। दाऊद ने हियाव के साथ घोषणा की कि परमेश्वर कौन है, परमेश्वर ने क्या किया है और परमेश्वर उसके द्वारा क्या करेगा। दाऊद हियाव के साथ बोल सका क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में था।

आप कौन से महाकायों का सामना कर रहे हैं? परमेश्वर के लिए कोई भी महाकाय बहुत बड़ा नहीं है। शाऊल की सेना के सु-प्रशिक्षित सिपाही महाकाय की तुलना खुद से कर रहे थे। इसलिए वे डर गए थे। उन्होंने लड़ने का साहस नहीं किया। लेकिन दाऊद ने महाकाय की ओर देखा और जाना कि वह महाकाय सेनाओं के परमेश्वर के सामने टिक नहीं सकता। आप कौन से महाकायों का सामना कर रहे हैं - बीमारी, आर्थिक समस्याएं, कर्ज, परिवार में समस्याएं, कार्यस्थल में समस्याएं, कानुनी लड़ाइयां, जो भी हो - याद रखें आपके महाकाय परमेश्वर के सामने बराबरी नहीं कर सकते। आप ऐसे व्यक्ति हैं जिसका परमेश्वर के साथ वाचा का रिश्ता है। परमेश्वर आपकी ओर से है। घोषणा करें कि आप अपने महाकायों पर विजय पाएंगे। घोषणा करें कि आपके महाकाय पराजित हैं और आप विजयी हैं। यीशु मसीह के नाम में विजय की घोषणा करे। परमेश्वर आपकी ओर से है और वह आपके लिए लड़ेगा।

10. ऐसे वचन बोलें जो परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण योग्य हैं

भजनसंहिता 19:14

मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले!

भजन 19 में, परमेश्वर की महानता और उसके वचन की शुद्धता की घोषणा करने के बाद, दाऊद प्रार्थना करता है कि उसके मुंह के शब्द परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकारणीय होंगे। इब्रानी में "स्वीकारणीय" शब्द का अर्थ होता है प्रसन्नतादायक, मनभावना, अनुकूल।

हम जिन शब्दों को बोलते हैं उनका हम चुनाव कर सकते हैं। हम उन शब्दों का चुनाव कर सकते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नतादायक, मनभावने और अनुकूल होते हैं। जब हमारे शब्द परमेश्वर के वचन के अनुसार होते हैं जो शुद्ध, सिद्ध और पूर्णतया उचित होंगे, तब हमारे शब्द अवश्य ही परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नतादायक, मनभावने, अनुकूल होंगे। जब हम ऐसे शब्दों को बोलते हैं जो उसकी महिमा को घोषित करते हैं, तब हमारे शब्द उसकी दृष्टि में प्रसन्नतादायक होते हैं। जब हम उस बात को बोलते हैं जो हमारा परमेश्वर कर सकता है, तो हमारे शब्द उसकी दृष्टि में मनभावने होते हैं। जब हम हमारे परमेश्वर के अद्भुत स्वभाव, उसके प्रेम, उसकी दया, उसकी करूणा के विषय में बोलते हैं, तब हमारे शब्द उसकी दृष्टि में स्वीकारणीय होते हैं।

इब्रानियों 11:6 हमें सिखाता है कि विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता है। विश्वास के वचन बोलें। ऐसे वचनों को बोलें जो इस बात में आपके विश्वास को घोषित करते हैं कि परमेश्वर कौन है और वह अपने लोगों के लिए क्या करता है। ऐसे शब्दों को कहें जो परमेश्वर में, उसके वचन में, और आपके जीवन में कार्यरत उसकी सामर्थ में आपके विश्वास को घोषित करते हैं। विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता है। विश्वास के वचन परमेश्वर के लिए स्वीकारणीय, प्रसन्नतादायक और मनभावने हैं।

हर परिस्थिति में ऐसे शब्दों को बोलें जो परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकारणीय, प्रसन्नतादायक और मनभावने हैं। विश्वास के हृदय से विश्वास के शब्द बोलें।

11. हर परिस्थिति में परमेश्वर आपके लिए कौन है यह घोषित करें

भजनसंहिता 27:1-3

1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरी उद्धार है; मैं किस से डरुं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?

2 जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से बैर रखते थे, मुझे खा डालने के लिए मुझ पर चढ़ाई की, तब वे ही ठोकर खाकर गिर पडते।

3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूंगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दषा में भी मैं हियाव बान्धे निश्चित रहूंगा।

मुश्किल परिस्थितियों में दाऊद क्या कहता है इस पर विचार करें। वह पहचानता है कि दुश्मन हैं। परन्तु, वह घोषित करता है कि परमेश्वर उसके लिए क्या है - परमेश्वर मेरी ज्योति, मेरा उद्धार, मेरे जीवन का बल है! और क्योंकि परमेश्वर उसके लिए जो है उस कारण, दाऊद धीरज के साथ कह सकता है : "मैं किस से डरूं?", "मैं किस का भय खाऊं?", "मैं न डरूंगा", "मैं हियाव बान्धे निश्चित रहूंगा"। वह दुश्मनों के पराजय की घोषणा और ऐलान करता है क्योंकि परमेश्वर उसके साथ है।

क्या दाऊद का उदाहरण अपनाना उचित होगा? अर्थात। हर परिस्थिति में, हमें परमेश्वर हमारे लिए जो है उसमें हियाव के साथ खड़े रहना है। हम भी घोषित कर सकते हैं, "यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरी उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?" विपत्ति के मध्य हम घोषित कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारा मुक्तिदाता है। बीमारी के मध्य, हम घोषणा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारा चंगाई करने वाला है। ज़रूरत के मध्य, हम घोषणा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारा प्रयोजनकर्ता है। निराशाजनक परिस्थितियों के मध्य, हम घोषणा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे विलाप को नृत्य में बदल देता है। हम घोषणा कर सकते हैं कि कदाचित रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनंद पहुंचेगा।

हम उन समस्याओं का इन्कार नहीं कर रहे हैं जिनका हम सामना करते हैं। हम यह इन्कार नहीं कर रहे हैं कि हमारे शत्रु हैं। लेकिन हम यह घोषणा कर रहे हैं कि परमेश्वर है, और हमें उसमें क्या मिला है, और उसके कारण हमने जो हियाव पाया है, चाहे हम जिन बातों का सामना कर रहे हों। हर परिस्थिति में घोषणा करें कि परमेश्वर आपके लिए कौन है। हर परिस्थिति में घोषणा करें कि आपने उसमें क्या पाया है। हर परिस्थिति में उसके कारण आपके हियाव, भरोसे, आनंद, विजय और जय की घोषणा करें। दाऊद ने वैसा ही किया। आप भी कर सकते हैं!

12. प्राकृतिक विश्व परमेश्वर की आवाज़ का उत्तर देता है

भजनसंहिता 29:3-9

3 यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुन पड़ती है; प्रतापी ईश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है।

4 यहोवा की वाणी शक्तिशाली है, यहोवा की वाणी प्रतापमय है।

5 यहोवा की वाणी देवदारों को भी तोड़ डालती है; यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है।

6 वह उन्हें बछड़े की नाईं और लबानोन और शिर्योन को जंगली बछड़े के समान उछालता है।

7 यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है।

8 यहोवा की वाणी वन को हिला देती है, यहोवा कादेश के वचन को भी कपाता है।।

9 यहोवा की वाणी से हरिणियों का गर्भपात हो जाता है। और अरण्य में पतझड़ होती है; और उसके मन्दिर में सब कोई महिमा ही महिमा बोलता रहता है।

परमेश्वर की महानता को बयान करते समय, दाऊद अपने भजन में, परमेश्वर के आवाज़ की महानता और सामर्थ को घोषित करता है। परमेश्वर की आवाज़ परमेश्वर के वचन से जारी होती है। परमेश्वर जिन शब्दों को बोलता है उनके द्वारा वह अपनी आवाज़ को प्रगट करता है। यह परिच्छेद हमें फिर से यह बताता है कि, स्वाभाविक संसार में सबकुछ प्रभु की आवाज़ का उत्तर देता है, अर्थात प्रभु के वचन के प्रति। परमेश्वर का वचन (आवाज़) जो जल पर गरजता है, वह परमेश्वर जल पर गरजता है। परमेश्वर का वचन (आवाज़) उसकी सामर्थ और प्रताप की अभिव्यक्ति है। समस्त जीवित और बेजान सृष्टि, परमेश्वर के वचन (आवाज़) का उत्तर देती है।

पवित्र शास्त्र में कभी कभी ऐसा समय रहा है, जब पवित्र आत्मा लोगों पर मंडराया और परमेश्वर की आवाज़ मनुष्यों की आवाज़ के द्वारा व्यक्त हुई। परमेश्वर का वचन (आवाज़) उनके द्वारा तब आया जब वे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे गए। उनके विषय में कहा गया कि परमेश्वर का वचन (आवाज़) उनके साथ था। जब परमेश्वर की आवाज़ (वचन) मनुष्यों की आवाज़ (वचन) के द्वारा पवित्र आत्मा के अभिषेक में प्रगट हुई, तब अद्भुत बातें घटित हुई। चट्टान से पानी बह निकला, समुद्र और नदियां दो भाग हो गई, सूरज आकाश में स्थिर हो गया, सूरज दस अंश पीछे हो गया, तेल और आटा बढ़ गए, लोहे की कुल्हाड़ी पानी पर तैरने लगी, और बहुत कुछ हुआ।

विश्वासी होने के नाते हमें विश्वास से प्रभु का वचन बोलने का अधिकार प्राप्त हुआ है। परमेश्वर ने पहले ही जो कहा है उसे हम ग्रहण करते हैं, उस वचन पर विश्वास करें और उसे आज बोलें। ऐसा समय भी होता है जब परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवन में काम करता है, जैसा कि पिछले दिनों में, ताकि हम वह वचन बोलें जिसे कहने के लिए उसने हमें प्रेरित किया था। जब हम वह वचन बोलते हैं, तब हमारी आवाज़ (शब्दों) के माध्यम से प्रभु की आवाज़ (वचन) जारी होते हैं। स्वाभाविक संसार प्रभु के वचन का प्रत्युत्तर देता है। दोनों करना सीखें। अपने हृदय में विश्वास के साथ परमेश्वर का वचन बोलें। पवित्र आत्मा जैसे प्रेरणा देता है उसके अनुसार प्रभु की वाणी को बोलें।

13. प्राकृतिक विश्व उसके वचन के द्वारा रचा गया

भजनसंहिता 33:6,9

6 आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने।

9 क्योंकि जब उस ने कहा, तब हो गया; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में हमें एक फल प्रस्तुत किया गया है, वह यह है कि परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा सब कुछ उत्पन्न किया। उसने कहा। उसने आज्ञा दी। उसने अपने मुंह की श्वास को मुक्त किया। उसने शब्दों को मुक्त किया। उसने स्वाभाविक दृश्य जगत को बोलकर अस्तित्व में लाया। यह समझना हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

स्वाभाविक, दृश्य, भौतिक जगत में जो कुछ है, वह परमेश्वर के वचन की अधीनता में है।

परमेश्वर का वचन आज भी उत्पत्ति करता है। जो नहीं है, उसे परमेश्वर का वचन हमारे "संसार" में (हमारे जीवन में, हमारे प्रतिदिन की दिनचर्या में) अस्तित्व में लाता है। परमेश्वर के वचन की सामर्थ को हमारे संसार में कैसे मुक्त करना है यह हम यदि हम सीखते हैं तो परमेश्वर ने जिस बात की प्रतिज्ञा की है वह हम पा सकते हैं।

परमेश्वर का वचन बदल देता है और परिवर्तन लाता है। परमेश्वर का वचन हमारी दुनिया में (हमारे जीवन, प्रतिदिन के जीवन के हमारे क्षेत्र) बदलाव और परिवर्तन ला सकता है, और उन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए जो प्रतिज्ञा की है उसके अनुरूप बना सकता है। परन्तु हमें हमारी दुनिया में परमेश्वर के वचन की सामर्थ को मुक्त करना सीखना है।

परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में जिन कुंजियों को रखा है उनमें से एक कुंजी जो उसके वचन की सामर्थ को हमारी दुनिया में जारी करती है, वह है विश्वास से उसके वचन को बोलना। जब हम उसके वचन पर विश्वास करते हैं और हमारी दुनिया में - हमारी परिस्थितियों, हमारे हालातो में, हमारे मनों पर, पैसों पर, परिवार पर, कार्यस्थलों आदि पर - उसका वचन बोलते हैं, तब उसके वचन की सामर्थ हमारी दुनिया में भेजी जाती है। हमारे संसार में जो कुछ है वह सब उसके वचन के अधीन है और उसके वचन के सदृश्य बनाया जाएगा। उसके वचन के द्वारा आपकी दुनिया, संसार को आकार लेने दें, रचने दें।

14. आपकी जीभ उत्तम दिनों को और दीर्घायु को ला सकती है

भजनसंहिता 34:12-14

12 वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे?

13 अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले।

14 बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूंढ और उसी का पीछा कर।

पवित्र शास्त्र हमें यहां सिखाता है कि हमारे शब्द हमारे जीवन की दीर्घायु और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

उत्तम जीवन और दीर्घायु का आनंद उठाने के लिए, इस परिच्छेद में जिस पहली बात की ओर दाऊद संकेत करता है, वह है अपने आप को बुराई से, भ्रष्ट, अशुद्ध और दुष्टतापूर्ण कामों से रोकना। झूठी और छलपूर्ण बातों को बोलने से बचें। जीभ पर नियंत्रण करें। सही शब्द बोलें। सत्य के वचन बोलें। जीवन के वचन बोलें। यह पहली बात है। और बुरे काम करने से भी दूर रहें। उसके बदले में भलाई करें और शांति का अनुसरण करें।

हमारे शब्द हमारे संसार को प्रभावित करते हैं। वे भलाई, जीवन और आशीष को उत्पन्न करते हैं या वे बुराई, मृत्यु और श्राप को जन्म देते हैं। हमारे शब्द इतने महत्वहीन प्रतीत होते हैं और फिर भी कई तरह से वे हमारे जीवन अनुभव का निर्माण करने वाले पत्थर हैं। वे उन बीजों के समान हैं जिन्हें हम बोते हैं, जो एक दिन हमारे जीवनों में अपने ही समान फल लाएंगे। परमेश्वर ने हमारे शब्दों की योजना की ताकि उन्हें हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण भूमिका हो। अपने वचनों को तुच्छ न समझें। सावधानी के साथ उनका उपयोग करें। अपने शब्दों का सावधानी के साथ चुनाव करें, क्योंकि उन शब्दों से आपके जीवन को आकार प्राप्त होगा।

हमारे शब्द कितने सामर्थी होते यदि हम परमेश्वर के वचन को बोलते! हमारे जीवन कितने धन्य होते, यदि हम परमेश्वर का वचन बोलते और हमारे जीवनों पर घोषित करते! परमेश्वर के अपने वचन से जन्मे हुए शब्द निर्माण के पत्थर बनने पाएं, जिनमें से हमारे लिए, आने वाले दिनों में फल उत्पन्न हों। आपकी जीभ आपके लिए अच्छे दिन और दीर्घायु लाने पाए। उसका वचन बोलें।

15. उसके वचन की घोषणा करना उसकी वाचा को दावे के साथ मांगना है

भजनसंहिता 50:14-17

14 परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा, और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर;

15 और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊंगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।

16 परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता हैः तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम? तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है?

17 तू तो शिक्षा से बैर करता, और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।

अपने मुंह से परमेश्वर के वचनों को बोलना उसकी वाचा को अपने मुंह में लेना है, यह उसकी वाचा या प्रतिज्ञा को आव्हान करना और दावे के साथ कहना है। परमेश्वर अधर्मी को घुड़की देता है, क्योंकि वे उसके वचन को तुच्छ जानते हैं। वे परमेश्वर के वचन को आदर नहीं देते। वे उसके वचन को तुच्छ जानकर हटा देते हैं। इसलिए ये लोग जो परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करते हैं, उन्हें अपने मुंह से उसके वचन बोलने का, और उसकी वाचा के लाभों को दावे के साथ मांगने का कोई अधिकार नहीं है।

लेकिन जब हम उसके वचन को घोषित करते हैं, तब हममें से जो लोग उसके वचन पर विश्वास करते हैं और उसका आदर करते हैं, उसे परमेश्वर ऐसे देखता है कि हम उस वाचा का दावा कर रहे हैं जो उसने हमारे साथ बांधी है। जब हम उसके वचन को घोषित कर अपने मुंह में उसकी वाचा को लेते हैं, तब हम हमारे साथ परमेश्वर की वाचा के लाभों को दावे के साथ मांगते हैं।

परमेश्वर यहोवा है, सनातन, स्वयंभू, अपरिवर्तनीय परमेश्वर जो वाचा का पालन करता है और अपने वायदों को पूरा करता है। वह अपनी वाचा को कभी नहीं तोड़ेगा, न ही अपने कहे हुए शब्दों को कभी बदलेगा। हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के लहू में उसके साथ वाचा के रिश्ते में हूं। हमारे साथ उसके लहू की वाचा के द्वारा जो कुछ वह है वह सब, जो कुछ उसका है वह सब, हमारे लिए उसने उपलब्ध किया है। हम इसमें से कुछ उसके वाचा के नामों के द्वारा समझते हैं। अपनी वाचा की आशीषों को जानें। किसी भी परिस्थिति में उसके वचन की घोषणा करें। आपकी वाचा की आशीषों का दावा करें और उन आशीषों में चलें।

16. मैं यहोवा के विषय कहूंगा

भजनसंहिता 91:1-2

1 जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।

2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।

आप प्रभु के विषय में क्या कहेंगे? भजन के लेखक ने प्रभु के विषय में कहा कि परमेश्वर उसका शरणस्थान और गढ़ है। वह अपना भरोसा, निर्भरता और विश्वास प्रभु पर रखता है कि वह उसकी रक्षा करे।

आप प्रभु के विषय में क्या कहेंगे?

- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा उद्धारकर्ता है। उसने मुझे मेरे सारे पापों से बचाया। उसने मेरे जीवन पर से पाप की सामर्थ को तोड़ दिया। मैं पाप की प्रभुता से मुक्त हूं।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा स्वर्गीय पिता है। वह अपनों के समान मेरी देखभाल करता है। उसका प्रेम कभी खत्म नहीं होता और वह कभी विफल नहीं होता। मैं उसके अपनों के रूप में ग्रहण किया गया हूं।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा चंगाई करने वाला और मेरा मुक्तिदाता है। वह मेरे सारे रोगों को चंगा करता है। वह मेरे सारे क्लेश और विपत्तियों से मुझे छुड़ाता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा छुड़ाने वाला है। उसने मुझे अंधकार की सामर्थ से छुड़ाया है और मुझे अपने राज्य में लाया है। मैं उसके पुत्र यीशु मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाया गया हूं!
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, मैं प्रभु के विषय में कहूंगा वह मेरी धार्मिकता है। मैंने उसकी धार्मिकता को पहना और मुझमें कोई दोषभावना, शर्मिंदगी, हीनता या अपराधबोध नहीं है। मैं उसके सामने पवित्र और निर्दोष हूं।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा उद्धारकर्ता है। उसने मेरे सारे पापों से मुझे बचाया। उसने मेरे जीवन पर से पाप की सामर्थ को तोड़ दिया। मैं पाप की प्रभुता से मुक्त हूं।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा स्वर्गीय पिता है। वह अपनों के समान मेरी परवाह करता है। उसका प्रेम कभी खत्म नहीं होता और कभी मिटता नहीं। उसके अपने के रूप में उसने मुझे स्वीकार किया है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा चंगाईकर्ता और छुड़ानेवाला है। वह मेरे सारे रोगों को चंगा करता है। वह मेरे सारे क्लेश और विपत्तियों से मुझे छुड़ाता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा मुक्तिदाता है। उसने मुझे अंधकार की सामर्थ से छुड़ाया और अपने खुद के राज्य में लाया। मैं उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाया गया हूं!
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरी धार्मिकता है। मैं बिना किसी दोष, लज्जा, हीनता के उसकी धार्मिकता को पहने खड़ा हूं। मैं उसके सामने पवित्र और निर्दोष हूं।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा प्रयोजनकर्ता है और उसकी संपन्नता के अनुसार वह मेरी सारी ज़रूरतों को पूरा करता है। वह मुझसे कोई अच्छी वस्तु रोककर नहीं रखता और मुझे सब प्रकार का अनुग्रह बहुतायत से देता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा प्रयोजनकर्ता है और वह अपने धन के अनुसार मेरी सारी ज़रूरतों को पूरा करता है। वह मुझसे कोई भली वस्तु रोककर नहीं रखता और मुझे अपना अनुग्रह बहुतायत से देता है।

- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा पवित्र करने वाला है जिसने मुझे अपने लिए अलग किया है। मैं वैसा ही पवित्र हूं जैसा वह पवित्र है। उसने मुझे अपने विशेष लोग होने के लिए अपने लिए शुद्ध किया है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा चरवाहा है जो मेरी अगुवाई करता है, मेरी ज़रूरतों को पूरा करता है, मेरी रक्षा करता है, मेरा मार्गदर्शन करता है, और मेरे जी मे जी लाता है। वह मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज बिछाता है!
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा सलाह देने वाला है जो मुझे मार्गदर्शन करता है और मेरे कदमों को राह दिखाता है। मेरी गति प्रभु द्वारा तय की गई है और मैं गिर भी जाऊं तौभी वह मुझे उठाता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा सहायक है। मेरी सहायता आकाश और पृथ्वी के कर्ता से आती है। वह मुझे कभी निराश नहीं होने देता।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा धार्मिक न्यायाधीश है और मेरा बदला चुकाने वाला है। मैं अपनी समस्याओं को उसके सामने रखता हूं। मैं बुराई के बदले बुराई नहीं करता। मैं भलाई से बुराई पर जय पाता हूं। मेरा परमेश्वर मेरा बदला चुकाता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरी पताका है, वह जिसके नाम में मुझे विजय मिली है। वह सारी परिस्थितियों में मुझे हमेशा जयवन्त बनाता है। उसके द्वारा मैं हियाव रखता हूं क्योंकि वह मुझे जय देता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरी शांति है। वह मेरे जीवन को सिद्ध शांति, सिद्ध शालोम पूर्ण कल्याण से भर देता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा रक्षक है। मुझे कोई हानि नहीं होगी। मेरा रक्षक कभी सोता नहीं। स्वर्गदूतों को मेरी निगरानी का कार्य सौंपा गया है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा बल देने वाला है। वह मेरे जीवन का बल है। जब मैं उसकी बांट जोहता हूं, तब वह मुझे उकाब के नाईं पंखों के साथ ऊँचा उड़ने की सामर्थ देता है।
- ✓ मैं प्रभु के विषय में कहूंगा, वह मेरा प्रतिफल देने वाला है। मेरा परमेश्वर उसके नाम में प्रेम से किए गए मेरे परिश्रम को नहीं भूलता। वह मुझे प्रतिफल देता है, मुझे बढ़ोत्तरी देता है, और मुझे फल देने की योग्यता प्रदान करता है।

आप इसमें और जोड़ते जाइए। आप प्रभु के विषय में क्या कहेंगे?

17. स्वर्गदूत उसके वचन के स्वर को सुनते हैं

भजनसंहिता 103:20-21

20 हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसकी पूरा करते हो उसको धन्य कहो!

21 हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके टहलुओ, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!

स्वर्गदूत ताकतवर और सामर्थी होते हैं। वे उसके वचन को पूरा करते हैं। वे उसके वचन की आवाज़ पर ध्यान लगाते हैं और परमेश्वर का वचन जो घोषणा करता है उसे पूरा करते हैं।

हम यहां पर यह अनुमान लगाते हैं जिसे भले ही इन दो वचनों के आधार परनिर्णायक तरीके से साबित नहीं किया जा सकता, फिर भी स्वर्गदूतों के विषय में और उनके गतिविधियों के विषय में हम पवित्र शास्त्र में जो कुछ जानते हैं उसके अनुसार है। जब हम परमेश्वर का वचन बोलते हैं, और यह घोषित करते हैं कि परमेश्वर ने जो कुछ कहा है वह हमारा है, तब स्वर्गदूत उसके वचन का स्वर सुनते हैं जिसे हम घोषित करते हैं और इसलिए वे हमारे प्रति, जो उद्धार के वारिस हैं, परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी सेवकाई पूरी करते हैं। यह हम एक अनुमान लगा रहे हैं, लेकिन वह उचित अनुमान है।

स्वर्गदूतों को हम जो उद्धार के वारिस हैं उनकी सेवा करने के लिए भेजा गया है (इब्रानियों 1:14)। परमेश्वर ने अपने पवित्रजनों के लिए जिस बात की घोषणा की है उसे वे हमें देते हैं। स्वर्गदूत वही करते हैं जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए पूरा करवाना चाहता है। जैसा कि दानिय्येल के अनुभव में देखा गया (दानिय्येल 10) और प्रारंभिक कलीसिया में (प्रेरितों के काम 12:5-7) उनके अनुसार हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि हम कुछ आत्मिक गतिविधियों में व्यस्त हैं, जो स्वर्गदूतों का स्वागत करते हैं कि वे हमारी ओर से कार्य करें। प्रार्थना एक ऐसा कार्य है। यह कहना सुरक्षित होगा कि हमारी आराधना, हमारा देना, परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता भी परमेश्वर को हमारी ओर से कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। हम जानते हैं कि स्वर्गदूत परमेश्वर के वचन पर ध्यान देते हैं और उसके वचन को पूरा करते हैं, अतः यह कहना सुरक्षित होगा कि जब हम परमेश्वर के वचन में और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में अपने विश्वास की घोषणा करते हैं, तो उससे स्वर्गदूत हमारी ओर से कार्य करने हेतु सक्रिय होंगे। स्वर्गदूत ऐसे कामों में कभी लिप्त नहीं होंगे जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं। इसलिए जब हम परमेश्वर के वचन के विपरीत बोलते हैं, तो उन वचनों के आधार पर स्वर्गदूत कार्य नहीं करेंगे।

स्वर्गदूत यह जानने पाएं कि आपको यह अपेक्षा है कि परमेश्वर का वचन आपके जीवन में पूरा हो रहा है। वचन बोलें। किसी भी परिस्थिति में उसके वचन को जानबूझकर घोषित करें। ज़रूरत की परिस्थिति में घोषणा करें, "मेरा परमेश्वर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा" ।

उलझन की परिस्थिति में, घोषणा करें 'मैं सिद्ध शांति, उत्तम समझ और सहकारिता को मेरी परिस्थिति में आने की आज्ञा देता हूं। मेरा परमेश्वर शांति का कर्ता है और गड़बड़ी का नहीं।' स्वर्गदूत आपकी आवाज़ से उसके वचन की आवाज़ सुनने पाएं और उस वचन पर कार्य करने हेतु आगे बढ़ सकें।

18. यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा कहें

भजनसंहिता 107:2

यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें, जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है।

हम प्रभु यहोवा के छुड़ाए हुए हैं, और हमें ऐसा कहना ही है!

कैद से छुटने के बाद कैदी अपने आपको कैदी कहता हुआ नहीं घूमेगा। वह हियाव के साथ और अभिमान के साथ यह घोषणा करता है कि वह आज़ाद है! वह कैदी था। यह अतीत की बात हुई। अब वह जो है वह सबसे अधिक मायने रखता है। वह स्वतंत्र व्यक्ति है। वह अपनी आज़ादी के पूरे अधिकारों का उपयोग कर सकता है।

विश्वासियों के नाते, हम अंधकार की सामर्थ से छुड़ाए गए हैं और हमें यीशु मसीह के राज्य में लाया गया है। हम उस मिरास में भागी होने के योग्य हैं जो परमेश्वर ने उसके लोगों को, पवित्र जनों को दी है। हम यीशु मसीह के अनमोल लहू से छुड़ाए गए हैं (कुलुस्सियों 1:12-14)। छुड़ाने का अर्थ है वापस मोल लेना, कैद से मुक्त करना और महिमा की पूर्वस्थिति में लाना। हमें प्रभु ने छुड़ाया है। शैतान का अब हम पर कोई दावा, कोई प्रभुता, कोई अधिकार नहीं है। हम मोल ली गई संपत्ति हैं (1 कुरिन्थियों 6:20)।

मैं प्रभु द्वारा छुड़ाया गया हूं और मैं ऐसा ही कहता हूं!
मैं शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की सामर्थ से छुड़ाया गया हूं (कुलुस्सियों 1:13)।
अंधकार की सामर्थ का मुझ पर कोई दावा नहीं है और मुझ पर कोई अधिकार नहीं है।
मैं पाप की सामर्थ से छुड़ाया गया हूं (रोमियों 6:6,14)। पाप की मुझ पर प्रभुता नहीं होगी।
मैं व्यवस्था के शाप से छुड़ाया गया हूं (गलातियों 3:13)। अब मैं अब्राहम की आशीषों में चलता हूं।
मैं इस वर्तमान युग के संसार से छुड़ाया गया हूं (गलातियों 1:4)। इस वर्तमान युग के मार्गों, प्रभावों और बुराइयों का मुझ पर कोई अधिकार नहीं।
मैं हर पापमय कार्य से छुड़ाया गया हूं (तीतुस 2:14)। भूतकाल की पापमय जीवनशैली का मुझ पर कोई अधिकार नहीं। मैं उसका होने के लिए और भले कामों के लिए शुद्ध किया गया हूं।
मैं पिछली पीढ़ियों की लक्ष्यहीन और पापमय जीवनशैली से छुड़ाया गया हूं (1 पतरस 1:18-19)। मैं नई सृष्टि हूं और नए जीवन में चलता हूं।
मैं मेम्ने के लहू के कारण छुड़ाया गया हूं और शैतान पर जय पाता हूं (प्रकाशितवाक्य 12:11)। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं मेरे कदमों के नीचे कुचली गई हैं (लूका 10:19; रोमियों 16:20)।
मैं प्रभु यहोवा का छुड़ाया गया हूं और मैं ऐसा ही कहता हूं!

19. उत्सव और उद्धार की ध्वनि को बनाए रखें

भजनसंहिता 118:15-17

15 धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उध्दार की ध्वनि हो रही है, यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है,

16 यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है, यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है!

17 मैं न मरूंगा वरन् जीवित रहूंगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूंगा।

धर्मी के घर में आनंदोत्सव और उद्धार की ध्वनि होती है। 'उद्धार' शब्द के लिए इब्रानी भाषा में दिया गया शब्द है **Yesuha** जो कि एक सर्वसमावेशक शब्द है (ग्रीक भाषा के sozo के समान) और उसमें उद्धार, सुरक्षा, छुटकारा, विजय, संपन्नता, स्वास्थ्य, सहायता, कल्याण, हित, संपूर्णता का समावेश है।

इस संसार की चुनौतियां हर घर में किसी न किसी रीति आने का प्रयास करती हैं। धर्मी के घरों को चुनौतियों और जीवन की आंधियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु धर्मी के लिए 'यहोवा के दाहिने हाथ से' पराक्रम का काम होता है। "प्रभु का दाहिना हाथ" परमेश्वर की सामर्थ है जो हमेशा विजयी होती है और दूसरों से हमेशा अधिक सामर्थी होती है। इसलिए, नीतिमान के घरों में आनंदोत्सव, विजय, जयजयकार और उद्धार का ध्वनि होता है। इसलिए, हम कह सकते हैं, "मैं न मरूंगा वरन् जीवित रहूंगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूंगा।"

जब हम कुछ चुनौतियों में से होकर जाते हैं तब हम क्या करते हैं? क्या हम अपनी आवाज़ बदलते हैं? नहीं! हम अपने घरों में आनंदोत्सव और उद्धार की ध्वनि बनाए रखते हैं। हम घोषणा करते रहते हैं कि हमारा परमेश्वर सामर्थी है। हम उद्धार की ध्वनि बनाए रखते हैं, क्योंकि परमेश्वर हमें बचाता है, हमारी रक्षा करता है, हमें संभालता है, हमें चंगाई देता है, हमें छुड़ाता है, हमें संपन्न बनाता है, और हमें विजय देता है! परमेश्वर का दाहिना हाथ हर समय, हर ऋतुओं में सामर्थी और विजयी होता है। जयजयकार अर्थात आनंदोत्सव और उद्धार की ध्वनि आपके घर में सुनाई देने पाए। हर ऋतु में आनंदोत्सव और उद्धार की ध्वनि बनाए रखें।

20. आपके हृदय के अंदर से वो ताकतें आती हैं जो आपके जीवन को आकार देती हैं

नीतिवचन 4:20-23

20 हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।

21 इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर।

22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।

यहां दी गई शिक्षा हमारे हृदयों को परमेश्वर के वचन से भर देती है। हमें उसके वचन पर ध्यान देना है, उसके वचन की ओर झुककर उसे सुनना है, अपना ध्यान उसके वचन पर लगाना है, ताकि उसका वचन हमारे हृदय की गहराई में हो। तब उसका वचन हमें जीवन, स्वास्थ्य, और संपूर्णता के साथ आशीष देगा। वह हमें आज्ञा देता है कि हम अपने हृदयों की रक्षा करें। हमें ऐसे किसी भी बात को हमारे हृदयों में आने की अनुमति नहीं देना है जो उसके वचन के विपरीत हो। हमें अपने हृदयों की रक्षा करना है, और उस वचन की जो हमने वहां रखा है रक्षा करना है।

हमारा अंदरूनी व्यक्तित्व, हमारा हृदय अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे हृदयों से वे ताकतें निकलती हैं जो हमारे जीवनों को आकार देती हैं। हमारे हृदयों में जो है उसे हमारे जीवनों में मुक्त करने के मार्गों में से एक है उन शब्दों के द्वारा जो हम बोलते हैं। हमारे आतंरिक व्यक्तित्व से आने वाली जो ताकतें हमारे जीवनों को आकार देती हैं, वे उन शब्दों के द्वारा भेजी जाती हैं जिन्हें हम बोलते हैं।

यदि हमारे हृदय उसके वचनों से परिपूर्ण हैं, तो जिन शब्दों को हम बोलते हैं वे उसके वचन से पंक्तिबद्ध हैं। हम उसका वचन बोलते हैं। जो ताकतें हमारे जीवनों को आकार देती हैं उसके वचन से आती हैं। परमेश्वर के वचन की सामर्थ तब हमारे जीवनों में कार्य करने के लिए मुक्त होती है और हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र, हमारे वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करती है।

अपने हृदय को परमेश्वर के वचन से भर दें। उसका वचन बोलें। आप में वास करने वाले परमेश्वर के वचन से निकलने वाली ताकतों को आपके जीवन को आकार देने दें।

21. धार्मिकता के वचन जीवन और बल को मुक्त करते हैं

नीतिवचन 10:11,20,21,31,32

11 धर्मी का मुंह तो जीवन का सोता है, परन्तु उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है।

20 धर्मी के वचन तो उत्तम चान्दी हैं; परन्तु दुष्टों का मन बहुत हलका होता है।

21 धर्मी के वचनों से बहुतों का पालन पोषण होता है, परन्तु मूढ़ लोग निर्बुध्दि होने के कारण मर जाते हैं।

31 धर्मी के मुंह से बुध्दि टपकती है, पर उलट फेर की बात कहनेवाले की जीभ काटी जायेगी।

32 धर्मी ग्रहणयोग्य बात समझ कर बोलता है, परन्तु दुष्टों के मुंह से उलट फेर की बातें निकलती हैं।

हम इन वचनों में धर्मी के शब्द और दुष्टता के शब्द के मध्य विरोधाभास देखते हैं। धर्मी के शब्द “जीवन का सोता” हैं। वे जीवन, स्वास्थ्य, कल्याण और वह सब कुछ देते हैं जो हम जानते हैं कि “जीवन” से संबंधित है। धर्मी के शब्द “उत्तम चांदी” के समान हैं, अर्थात अत्यंत शुद्ध, बहुमूल्य और अनमोल हैं। धर्मी के शब्द बहुतों का “पोषण करते हैं।” वे कई लोगों को पोषण, बल, जीवन, सहायता और आशीष प्रदान करते हैं। दो अतिरिक्त बातें धर्मी के शब्दों की विशेषता बताती हैं - बुद्धि और ग्रहणयोग्य बात (मनभावनी)।

शब्द दूसरों को जीवन और आशीष देते हैं। जो शब्द हम कहते हैं वे किसी के लिए जीवन का सोता हो सकते हैं। हमारे शब्द या वचन खोज करने वाले किसी के लिए उत्तम चांदी हो सकते हैं, और दूसरों के लिए पोषण और बल का स्रोत हो सकते हैं।

आपके शब्द सही हैं (धर्मी के वचन) यह सुनिश्चित करने का एक निश्चित तरीका है परमेश्वर के वचन के अनुरूप बोलें। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हमारे शब्द बुद्धि के वचन होंगे और ऐसे वचन होंगे जो लोगों को आनंद, आज़ादी देते हैं और मुक्ति प्रदान करते हैं। धार्मिकता के शब्द बोलने का चुनाव करें। परमेश्वर के वचन के अनुसार बोलें।

22. शब्द चंगा कर सकते हैं और स्वस्थ बना सकते हैं

नीतिवचन 12:18

18 ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोचविचार का बोलना तलवार की नाई चुभता है, परन्तु बुध्दिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।

नीतिवचन 15:4

4 शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है, परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है।

नीतिवचन 12:18 में, हम यह सीखते हैं कि बुद्धिमान की जीभ स्वास्थ्य लाती है। स्वास्थ्य इस शब्द के लिए इब्रानी भाषा में *"marpe"* यह शब्द आया है जिसका अर्थ है इलाज, औषधी, चंगाई, उपचार, छुटकारा, मन का स्वास्थ्य, स्वास्थ्य। यदि शब्दों का सही तथा बुद्धि के साथ इस्तेमाल किया जाए, तो वे आपको तथा आपके सुनने वालों दोनों को वास्तव में चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।

वही शब्द *"marpe"* फिर से एक बार नीतिवचन 15:4 में प्रयोग किया गया है जहां पर उसका अनुवाद 'स्वास्थ्यकर किया गया है। जो जीभ स्वास्थ्यकर वचन, शब्दशः चंगाई और छुटकारे के शब्द बोलती है, जीवन का वृक्ष है। प्रकाशितवाक्य 22:1-2 में हम पढ़ते हैं : *"फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था : उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।"* (नीतिवचन 4:22)। जीवन के वृक्ष के पत्ते चंगाई ले आए। जब हम चंगाई, स्वास्थ्य, छुटकारा और पूर्णता के वचन बोलते हैं, तब हम वास्तव में अपने लिए और जिन्हें हम बोल रहे हैं उनके लिए चंगाई ले आते हैं।

शब्द चंगा कर सकते हैं और स्वस्थ बना सकते हैं। परमेश्वर कहता है उसका वचन जीवन (ताजगी, बल) और हमारे संपूर्ण शरीर के लिए (नीतिवचन 4:22) स्वास्थ्य *("marpe")* ले आता है। जब लोगों ने उसे पुकारा, तब परमेश्वर ने अपना वचन भेजकर उन्हें (भजनसंहिता 107:20) चंगा किया *('^rapha'* ठीक करना, स्वस्थ करना)। परमेश्वर के वचन में चंगा करने की और संपूर्ण व्यक्तित्व को स्वस्थ बनाने की सामर्थ है। इसलिए परमेश्वर का वचन बोलें और उसके वचन की चंगाई की सामर्थ आपके मुंह के शब्दों के द्वारा मुक्त होने दें। चंगाई लाने वाले शब्द, जो उत्तम औषधी हैं, जो जीवन के वृक्ष के समान हैं, आपके मुंह के द्वारा मुक्त होने पाएं। परमेश्वर के चंगाई के वचन को बोलकर, आपके लिए तथा आपके आसपास के लोगों के लिए स्वास्थ्य एवं संपूर्णता प्रदान करने के लिए आपके शब्दों का इस्तेमाल करें।

23. मनभावने वचनों की सामर्थ मुक्त करें

नीतिवचन 16:21,24

21 जिसके हृदय में बुध्दि है, वह समझवाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।

24 मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की नाई प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं।

किसी भी निर्धारित परिस्थिति में जिन शब्दों को हम बोलते हैं, उनका चयन हम कर सकते हैं। जो शब्द दयालू, सौम्य, मनभावने, समृद्ध, प्रोत्साहनदायक, सकारात्मक होते हैं उनका सामर्थी प्रभाव होता है। सौम्यता के साथ और दया के साथ कहे गए शब्द शिक्षा को बढ़ाते हैं। इससे लोग शिक्षा के प्रति अधिक ग्रहणशील, और आश्वस्त तथा प्रेरक बनते हैं। दयालु, मनभावने और समृद्ध शब्द अदरूनी व्यक्ति को बल और अंतरात्मा तक स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। हम खुशामद के बारे में नहीं बोल रहे हैं, ऐसे शब्द जो कपटपूर्ण हैं और जिनका उद्देश्य व्यक्ति को अच्छा महसूस कराना है जिनके पीछे कुछ भी वास्तविक नहीं है। हम वास्तविक और सत्य बोलने की बात कर रहे हैं, देखभाल, दया और सौम्यता के साथ बोले गए शब्द।

जब हम अपनी बोलचाल के भाग के रूप में परमेश्वर के सामर्थी वचन को शामिल करते हैं, तो हम निश्चित रूप से हमारे शब्दों के माध्यम से विश्वास, आशा, बल, साहस, उपचार, ज्ञान और परामर्श की सेवा प्रदान कर सकते हैं। मिठास के साथ बोलें। प्रसन्नता के साथ बोलें। ऐसे शब्द बोलें जो लोगों की उन्नति करते हैं। ऐसे शब्द बोलें जो लोगों को समृद्ध और स्वस्थ बनाते हैं। जब आप परमेश्वर के बारे में बोलते हैं तब आप लोगों को परमेश्वर दें, बताएं कि वह क्या कर सकता है और जो वादा उसने किया है। सुखद शब्दों की सामर्थ जारी करें।

24. आपका जीवन आपके वचनों के फलों से भर जाता है

नीतिवचन 12:14

14 सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है, और जैसी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी होती है।

नीतिवचन 18:20

20 मनुष्य का पेट मुंह की बातों के फल से भरता है; और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उस से वह तृप्त होता है।

हमारे शब्द हमारे जीवन को हर तरह से प्रभावित करते हैं। वे हमारे आंतरिक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। मनुष्य का पेट उसकी अंतरात्मा का उल्लेख करता है। हमारे शब्दों या वचनों से हमारे भीतर के व्यक्ति को अच्छाई से भरा जा सकता है, संतुष्ट किया जा सकता है, पोषित किया जा सकता है, आशीषित किया जा सकता है, जैसे भोजन पेट भरता है। जीवन में हमारे साथ जो होता है उसे हमारे शब्द प्रभावित करते हैं। हमारा जीवन हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों के परिणाम से भर जाता है। हम अपने शब्दों के परिणामों के साथ जीते हैं, उन शब्दों के साथ जिन्हें हम समय के साथ बोलते आए हैं।

आप क्या चाहेंगे कि अपने भीतर के व्यक्ति को कैसे भरा जाए? आत्मविश्वास, साहस, विश्वास, आशा, धार्मिकता, शांति, आनंद, संतोष, बुद्धि, सामर्थ, और सभी अच्छी बातों से जो हमें परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में उपलब्ध हैं? निश्चित रूप से! तो हमें ऐसे शब्द बोलने की ज़रूरत है, जो हमें ऐसे गुणों से भर देंगे जो परमेश्वर की ओर से आते हैं, उसके वचन और उसके आत्मा की सामर्थ से। परमेश्वर के वचन बोलें। जो मसीह में आपका है, उसे घोषित करें। घोषणा करें कि आप उसके राज्य का हिस्सा हैं और इसलिए आपके पास धार्मिकता है, पवित्र आत्मा की ओर से शांति और आनंद है। घोषणा करें कि आपके पास शांति है जो यीशु देता है, शांति जो दुनिया नहीं दे सकती, वह शांति जो समझ से परे है और यह शांति जो आपके हृदय और मन की रक्षा करती है। घोषणा करें कि आपके पास सामर्थ, प्रेम और स्वस्थ मन है। घोषणा करें कि प्रभु आपका भरोसा है। आप सिंह के समान निर्भीक हैं। आप बलवान और साहसी हैं क्योंकि जहां कहीं आप जाते हैं वहां प्रभु आपके साथ रहता है। ऐसे शब्द बोलें जो आपके आंतरिक व्यक्तित्व में अच्छी बातों का निर्माण करते हैं।

आप क्या चाहेंगे कि आपके जीवन के अनुभव कौन सी बातों से भरे हों? आप क्या चाहेंगे कि आपका वर्तमान और भविष्य कैसे भरा हो? आपके जीवन, आपके वर्तमान और आपके भविष्य पर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को बोलें। आपका जीवन आपके द्वारा बोले गए शब्दों के फल से भर जाता है।

25. आपके वचनों में जीवन और मृत्यु की सामर्थ है

नीतिवचन 18:21

21 जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।

परमेश्वर ने जीवन और मृत्यु की बातों को जीभ की सामर्थ में रखा है, अर्थात, उन शब्दों में जिन्हें हम बोलते हैं। हमारे शब्द जीवन या मृत्यु ला सकते हैं। हमें हमारे शब्दों के परिणामों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें अपने शब्दों के फल के साथ जीना होगा।

मृत्यु, शारीरिक रूप से मरने का उल्लेख करती है और इसका इस्तेमाल अलंकारिक तौर पर महामारी, रोग, और विनाश को संदर्भित करने के लिए होता है। जीवन उस हर उस चीज को संदर्भित करता है जिसका संबंध सकारात्मक रूप से जीवित रहने से है और उसमें ताज़गी और बल शामिल है।

हमारे द्वारा बोले गए शब्द हमें बर्बाद कर सकते हैं या हमें आशीषित कर सकते हैं। हमारे द्वारा बोले गए शब्द हमें स्फूर्ति से भर सकते हैं, जीवन और शक्ति ला सकते हैं। या हम जो शब्द बोलते हैं वे हमारे जीवन को तहस नहस कर सकते हैं, हमें कमजोर और दिवालिया बना सकते हैं। परमेश्वर ने हमारे शब्दों को हमें इस तरह से प्रभावित करने और हम पर प्रभाव डालने के लिए बनाया है। आप जो कहते हैं वह आपको बना सकता है या आपको नष्ट कर सकता है।

इसलिए हमें ऐसे शब्दों का चयन करना चाहिए जो हमारे स्वयं के ऊपर और दूसरों पर जीवन और आशीष को मुक्त कर देते हैं। परमेश्वर के वचन को बोलने से बेहतर कुछ नहीं हो सकता। अपने जीवन के ऊपर परमेश्वर के वचनों को बोलें। परमेश्वर ने आपके बारे में मसीह में एक नई सृष्टि के रूप में जो घोषित किया है उसे बोलें। अपने जीवन में उसके वचन के अनुसार आशीष, समृद्धि, सफलता, बहुतायत और अच्छाई बोलें। घोषणा करें कि आप बहुतों के लिए आशीष होंगे। घोषणा करें कि आप आशीष बनने के लिए आशीषित हैं। घोषणा करें कि आप परमेश्वर के सभी उद्देश्यों और कार्यों को पूरा करेंगे। घोषणा करें कि आपके जीवन के माध्यम से परमेश्वर की महिमा होगी। आपके वर्तमान और आपके भविष्य पर जीवन और आशीष को जारी करने के लिए अपने शब्दों का इस्तेमाल करें।

26. आपके मुंह में उसके वचन राष्ट्रों को प्रभावित कर सकते हैं

यिर्मयाह 1:9-10

9 तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, देख, मैंने अपने वचन तेरे मुंह में डाल दिये हैं।

10 सुन, मैंने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, या उन्हें बनाने और रोपने के लिये।

हम इन दो वचनों में भविष्यवाणी के वचन की सामर्थ को देखते हैं। जैसे कि यिर्मयाह राष्ट्रों और राज्यों पर उन शब्दों को बोलेगा जो परमेश्वर ने उसके मुंह में रखे, तो चीजें जड़ से उखाड़ फेंक दी जाएगी, ढा दी जाएगी, नष्ट कर दी जाएगी और फेंक दी जाएगी। राष्ट्रों और राज्यों में चीज़ों का गिराना और ढा देना होना था, परमेश्वर जिन्हें नीचे लाना चाहता था, जब यिर्मयाह ने उन वचनों को कहा जो परमेश्वर ने उसे दिए थे। जब यिर्मयाह भविष्यद्वाणी के वचन बोलेगा तब राष्ट्रों और राज्यों में कुछ बातों का निर्माण होगा, वे स्थापित की जाएगी, उभारी जाएगी।

भविष्यवाणी का वचन लोगों के माध्यम से जारी किया गया शब्द है, जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिया गया है। पवित्र आत्मा अभी भी परमेश्वर के लोगों के जीवनों में काम कर रहा है। वह अभी भी हमें भविष्यद्वाणी करने और राष्ट्रों और लोगों पर ईश्वर प्रेरित वचनों, या भविष्यद्वाणी के शब्दों जारी करने के लिए कार्य करता है। जैसा कि ईश्वर उनके शब्दों को हमारे मुंह में डालता है और हम उन्हें आगे बोलते हैं, हम उन परिस्थितियों (आत्मिक, सामाजिक, आर्थिक आदि) को प्रभावित करते हैं जो राष्ट्रों और राज्यों पर हावी हैं। हमारे मुंह से निकले उसके शब्द राष्ट्रों को प्रभावित कर सकते हैं। परमेश्वर अपने वचनों को पूरा करने के लिए जागृत है (यिर्मयाह 1:12)।

27. सूखी हड्डियों से बोलें कि वे जी जाएं

यहेजकेल 37:1-7

1 यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और वह मुझमें अपना आत्मा समवाकर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियों से भरी हुई थी।

2 तब उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियां थीं; और वे बहुत सूखी थीं।

3 तब उसने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियां जी सकती हैं? मैंने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है।

4 तब उसने मुझ से कहा, इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कह, हे सूखी हड्डियों, यहोवा का वचन सुनो।

5 परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियों से यों कहता है, देखो, मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगी।

6 और मैं तुम्हारी नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस समावाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं।

7 इस आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा; और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक आहट आई, और भुईंडोल हुआ, और वे हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गईं।

यह परिच्छेद यहेजकेल की भविष्यात्मक अनुभव के एक हिस्से को प्रगट करता है। ये सूखी हड्डियां इस्राएल राष्ट्र की एक तस्वीर थी, जो अपने देश से तितर-बितर हुए थे और निराश महसूस कर रहे थे (यहेजकेल 3:11-12)। परमेश्वर ने यहेजकेल को इन सूखी हड्डियों को भविष्यद्वाणी का वचन बोलने कहा - परमेश्वर द्वारा दिए गए शब्द। हड्डियां फिर एक साथ जुड़ गईं, उन पर मांस बन गया, उनमें जीवन आ गया और वे बड़ी सेना के रूप में उठ खड़े हो गए (यहेजकेल 37:10)। संपूर्ण राष्ट्र का भविष्य भविष्यद्वाणी के वचन के माध्यम से प्रभावित हुआ था। भविष्यद्वाणी का वचन एक वाहन था जिसके माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ पृथ्वी पर जारी की गई ताकि परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा किया जा सके।

आज भी, पवित्र आत्मा हमें प्रेरित करता है और हमें भविष्यात्मक तौर पर बोलने के लिए वचनों को देता है। यह हमारे अपने जीवनों पर, अन्य लोगों पर, शहरों, क्षेत्रों और राष्ट्रों पर हो सकता है। जब हम उन शब्दों को बोलते हैं जिन्हें बोलने के लिए वह हमें प्रेरित करता है, सूखी हड्डियां जीवित हो जाती हैं! जो मरा है उसे वापस लाया जाता है! लोग और राष्ट्र आशा और जीवन के साथ उठते हैं। याद रखें, जैसा कि पवित्र आत्मा आपको प्रेरित करता है, सूखी हड्डियों से कहो, और वे जिलाई जाएंगी!

28. आपके वचन स्वर्ग में सुने जाते हैं

दानिय्येल 10:12

फिर उसने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने-बुझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं। "हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है" (भजनसंहिता 119:89)।

जिन शब्दों को हम यहां पृथ्वी पर बोलते हैं वे स्वर्ग में सुने जाते हैं। हमारे द्वारा बोले गए शब्दों की प्रतिक्रिया स्वरूप परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों को भेजा जाता है।

हम प्रार्थना में शब्द बोलते हैं। हम अपने विश्वास का प्रयोग करने के लिए शब्द बोलते हैं। जब हम अंधकार की शक्तियों के खिलाफ युद्ध में आत्मा की तलवार चलाते हैं, तब शब्द बोलते हैं। हम शब्द बोलते हैं लोगों को आशीष देने के लिए। हम लोगों को चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म प्रदान करने के लिए शब्द बोलते हैं। हम पहाड़ों को हटाने के लिए और तूफानों को शांत करने के लिए शब्द बोलते हैं। हम पृथ्वी पर हमारे अधिकार का प्रयोग करते हुए बांधने और खोलने के लिए शब्दों को बोलते हैं। हमारे शब्द स्वर्ग में सुने जाते हैं! हमारे शब्दों की प्रतिक्रिया स्वरूप स्वर्गदूतों को भेजा जाता है।

आप जानते हैं कि आपके शब्द स्वर्ग में सुने जाते हैं अतः आप कौन से शब्द बोलेंगे? स्वर्ग में परमेश्वर का वचन है जो प्रबल है। *"हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है"* (भजन 119:89)। हम जो शब्द प्रार्थना में, विश्वास में, युद्ध में, सेवकाई में, अधिकार का उपयोग करने में, - सभी स्थितियों में - बोलते हैं, वे ऐसे शब्द होने चाहिए जो परमेश्वर के वचन से सम्बद्ध हों जो पहले से ही स्वर्ग में स्थापित हैं। याद रखें, आपके शब्द स्वर्ग में सुनाई देते हैं। हमेशा स्वर्ग के अनुरूप बोलें, और स्वर्ग आपकी ओर से कार्य करेगा।

29. वचन आत्मिक से प्राकृतिक क्षेत्र में संचरित होते हैं

दानिय्येल 10:17-19

17 सो प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ क्योंकर बातें कर सके? क्योंकि मेरी देह में न तो कुछ बल रहा, और न कुछ सांस ही रह गई।

18 तब मनुष्य के समान किसी ने मुझे छूकर फिर मेरा हियाव बन्धाया।

19 और उसने कहा, हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे। जब उसने यह कहा, तब मैंने हियाव बान्ध कर कहा, हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तू ने मेरा हियाव बन्धाया है।

जब दानिय्येल की भेंट स्वर्गदूत से हुई, तब वह अभिभूत, कमज़ोर, शक्तिहीन और शायद भयभीत भी महसूस कर रहा था। स्वर्गदूत ने उसे स्पर्श किया और उसमें इन शब्दों को कहा, "मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे।" और दानिय्येल ने बल पाया। स्वर्गदूत द्वारा दानिय्येल के लिए बोले गए शब्दों ने दानिय्येल में शांति और बल का संचार किया। शब्द आत्मिक क्षेत्र और प्राकृतिक क्षेत्र को जोड़ते हैं। शब्द आत्मिक क्षेत्र से प्राकृतिक क्षेत्र में संचारित होते हैं।

लोगों को परमेश्वर द्वारा इस तरह बनाया गया है ताकि वे दोनों प्राकृतिक और आत्मिक क्षेत्रों में काम करने में सक्षम हो। विश्वासियों के रूप में हम आत्मिक क्षेत्र में, यीशु मसीह में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हैं। हम मसीह में हैं। हम परमेश्वर के वारिस हैं और यीशु के साथ संगी वारिस हैं। आत्मिक क्षेत्र में हम यही हैं। हमारे शब्द आत्मिक क्षेत्र में हमें जो कुछ भी दिया गया है, उसे लेने और प्राकृतिक क्षेत्र में उसे लागू करने में सक्षम बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, जब हम बीमार व्यक्ति को सेवा देते हैं और चंगाई की आज्ञा देते हैं, तो क्या प्राकृतिक क्षेत्र में हमारा खुद का अपना कुछ है जो अलौकिक चंगाई ला सकता हैं? बिल्कुल नहीं। हम यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए काम को ले रहे हैं, अभिषेक और अधिकार को ले रहे हैं जो आत्मिक क्षेत्र में हमारा है और उसे व्यक्ति को उनके भौतिक शरीर की चंगाई के लिए लागू करते हैं। हमारे शब्द आत्मिक क्षेत्र को प्राकृतिक क्षेत्र से जोड़ते हैं। जब हम परमेश्वर के वचन के आधार पर बोलते हैं, तो हम आत्मिक क्षेत्र में जो है उसे ले सकते हैं और इसे प्राकृतिक क्षेत्र में जारी कर सकते हैं। हम यहां यह देखने के लिए हैं कि उसका राज्य आए, उसकी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। ऐसा करने का एक तरीका यह है कि हम उसके वचन के अनुसार बोलें ताकि जो उसने हमें आत्मिक रूप से दिया है वह यहां प्राकृतिक क्षेत्र में जारी हो।

30. जो बलहीन हो वह कहे, मैं वीर हूं

योएल 3:9-10

9 जाति जाति में यह प्रचार करो, और शूरवीरों को उभारो। सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़े।

10 अपने अपने हल की फाल को पीटकर तलवार, और अपनी अपनी हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ; जो बलहीन हो वह भी कहे, मैं वीर हूं।

योएल अध्याय 3 यहोशापात की तराई में हरमगिद्दोन की लड़ाई के बारे में और प्रभु के दिन के बारे में भविष्यद्वाणी है। युद्ध के लिए राष्ट्रों को जुटाया जा रहा है। योएल शांतिपूर्ण औज़ारों का वर्णन करता है (हल्की फाल और हंसिया) जिन्हें पीटकर युद्ध के हथियार (तलवार और बर्छी) बनाया गया है। इस प्रक्रिया में एक दिलचस्प बयान है, "जो बलहीन हो वह भी कहे, मैं वीर हूं।" बलहीन व्यक्ति यह न कहे कि 'मैं निर्बल हूं।' बलहीन व्यक्ति को कहना था, 'मैं बलवान हूं।' अर्थ यहां पर यह है कि निर्बल व्यक्ति यह कहकर बलवान हो सकता है कि 'मैं बलवान हूं' और लड़ाई में आगे बढ़ सकता है।

क्या यह हमारे लिए सही होगा कि हम परमेश्वर के वचन में हमारे लिए जो घोषित किया गया है उसे वैसे ही घोषित करें, भले ही हम इसे महसूस न करें?

क्या पाप से जूझ रहे लोगों के लिए यह कहना सही होगा कि 'पाप की मुझ पर प्रभुता नहीं होगी', ताकि वे पाप पर विजय पा सकें? बिल्कुल! पाप और परीक्षा का सामना करने वालों (वह हम सब हैं), कहें कि 'मेरा पुराना पापमय स्वभाव मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है और मेरे जीवन पर पाप की सामर्थ टूट चुकी है। पाप मुझ पर प्रभुता नहीं करेगा'।

क्या बीमारों के लिए यह कहना सही होगा कि 'मैं यीशु के मार खाने से चंगा हूं' ताकि वे चंगे हो सकें? बिल्कुल! बीमार और रोगी व्यक्ति यह कहे, 'उसने मेरे रोगों को उठा लिया और मेरे दुखों को सह लिया और उसके कोड़े खाने से मैं चंगा हो गया।'

क्या ज़रूरतमंद व्यक्ति के लिए यह कहना सही होगा कि 'मेरा परमेश्वर मेरी सारी ज़रूरतों को पूरा करता है,' ताकि उनकी सारी ज़रूरतें पूरी हों? बिल्कुल् जो ज़रूरतमंद है वह कहे, 'यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।'

जो शक्तिहीन महसूस कर रहे हैं उनके लिए क्या यह कहना उचित होगा कि 'मैं सचमुच सामर्थ से परिपूर्ण हूं क्योंकि पवित्र आत्मा मुझ पर आया है' ताकि वे आत्मा की सामर्थ में चल सके? बिल्कुल! हम कहें 'जब पवित्र आत्मा मुझ पर आया, तब मैंने सामर्थ प्राप्त की और दीनों को सुसमाचार सुनाने के लिए, टूटे मन वालों को चंगाई देने के लिए, कैदियों को छुटकारे की घोषणा करने के लिए मैंने अभिषेक पाया है...'

परमेश्वर का वचन आपके विषय में जो कहता है उसकी पुष्टि करें, भले ही आप उसके बिल्कुल विपरीत महसूस करते हों। परमेश्वर का वचन सत्य है। सच्चाइयां बदल सकती हैं। परमेश्वर की सच्चाई सनातन है, और बदलेगी नहीं। जिन सच्चाइयों का आप सामना कर रहे हैं उन्हें परमेश्वर के वचन के सत्य के अनुसार बदला जा सकता है। बलहीन कहे, मैं बलवान हूं, और इसलिए बलवान बनें।

31. अपने वचनों से परमेश्वर को दुखी न करें

मलाकी 3:13-16

13 यहोवा यह कहता है, तुम ने मेरे विरूद्ध ढिठाई की बातें कही हैं। परन्तु तुम पूछते हो, हमने तेरे विरूद्ध में क्या कहा है?

14 तुमने कहा है कि परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है। हमने जो उसके बताए हुए कामों को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहरावा पहने हुए चले हैं, इससे क्या लाभ हुआ?

15 अब से हम अभिमानी लोगों को धन्य कहते हैं; क्योंकि दुराचारी तो सफल बन गए हैं, वरन वे परमेश्वर की परीक्षा करने पर भी बच गए हैं।

16 तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें कीं, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।

कल्पना करें कि परमेश्वर अपने लोगों को जिन शब्दों को कहते हुआ सुनता है और जो बातें उन्होंने कही उनके द्वारा वह दुखी और आहत होता है। परमेश्वर हमारे शब्दों को सुनता है। वचन 16 हमें बताता है कि स्मरण के निमित्त एक पुस्तक लिखी जाती है ताकि उन लोगों के बारे में लिखा जा सके जो परमेश्वर के विषय में आदर के साथ बोलते थे और उसके वचन पर मनन करते थे।

जिन शब्दों को हम बोलते हैं उन्हें परमेश्वर सुनता है। जब परमेश्वर आपको बोलते हुए सुनेगा तब वह कैसे महसूस करें ऐसा आपको लगता है? अवश्य ही हम अपने शब्दों से परमेश्वर को दुखी करना नहीं चाहेंगे।

हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि जो हम बोलते हैं उनसे हमारे परमेश्वर को महिमा मिलती है, और उसकी बढ़ाई होती है और उसके हृदय को प्रसन्नता होती है? जब हम उसके वचन के अनुसार और उसकी दृष्टि में जो सही है उसे बोलते हैं। आपके शब्द परमेश्वर को दुखी न करने पाएं। वही कहें जो परमेश्वर ने कहा है। हर परिस्थिति में उसका वचन बोलें। वह जानने पाएं कि आप उसे और उसके वचन को हर परिस्थिति में आदर देते हैं।

32. ‘लिखा है’ कहना सीखें - यीशु ने ऐसा ही किया

मत्ती 4:1-4

1 तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो।

2 वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा, और अन्त में उसे भूख लगी।

3 तब परखने वाले ने पास आकर उससे कहा, “यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो कहें कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।”

4 उसने उत्तर दिया और कहा, “लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।”

प्रभु यीशु हमारा सिद्ध उदाहरण है जिसका हम सब बातों में अनुकरण करते हैं और उसके पीछे चलते हैं। हमने हमारे लिए तीन परीक्षाओं के बारे में लिखा है जिनका यीशु ने जंगल में सामना किया। उसने केवल इन्हीं परीक्षाओं का सामना नहीं किया। हमारे समान सभी बातों में उसकी परीक्षा हुई (हर क्षेत्र में, हर तरह से) (इब्रानियों 4:15)। हमारे लिए इन सारी परीक्षाओं के बारे में नहीं लिखा गया है। लेकिन मत्ती 4 में लिखी गई इन तीन परीक्षाओं में, हम देखते हैं कि हर बार प्रभु यीशु ने परीक्षा का सामना वचन बोलकर किया। उसने हर बार कहा, “लिखा है”। अतः हम निश्चित कह सकते हैं कि उसने हर परीक्षा का सामना उसी तरह किया, वचन बोलकर।

हर परीक्षा में, हर परिस्थिति में, यह कहना सीखें “लिखा है”। वही कहें जो परमेश्वर ने कहा है। आपको चुनौती देने वाली परीक्षाओं और परिस्थितियों पर जय पाने के लिए वचन बोलें। परीक्षा का सामना करते समय कहें, “लिखा है कि मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है जो मुझमें वास करता है। लिखा है कि पाप मुझ पर प्रभुता नहीं करेगा। मैं अपने शरीर को धार्मिकता का हथियार बनने के लिए परमेश्वर के हाथ सौंप देता है।” जब हम ऐसी परिस्थिति का सामना करते हैं जहां दुर्गम चुनौतियां नज़र आती हैं, तो कहें, “लिखा है कि, मैं परमेश्वर से जन्मा हूं और मैं इस संसार पर जय पाता हूं। और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है मेरा विश्वास है। परमेश्वर मुझे हमेशा जय में लेकर चलता है, मैं इस परिस्थिति में भी विजयी हूं”। कहना सीखें “लिखा है“, यीशु ने वही किया। हर परिस्थिति में परमेश्वर का वचन बोलें।

33. वचन से दुष्टात्माओं को निकालें

मत्ती 8:16

जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

जब हम सुसमाचारों में यीशु की सेवकाई के बारे में पढ़ते हैं, हम सीखते हैं कि उसने दुष्टात्माओं का सामना कैसे किया। उसने आज्ञा का वचन बोलकर दुष्टात्माओं पर अधिकार और प्रभुता स्थापित की। यहां मत्ती में लिखा है कि उसने वचन से या शब्द से दुष्टात्माओं को निकाला। उसने केवल आज्ञा का वचन कहा।

हम भी यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें। हमारे शब्द उस अधिकार और प्रभुता की अभिव्यक्ति हैं जो हमें मसीह में दिया गया है। उसके नाम का उपयोग करने के अधिकार से हमें प्रतिनिधित रूप से दिए गए अधिकार को हम अमल में लाते हैं। हम उसके अधिकार में चलते हैं। जब हमें दुष्टात्माओं का सामना करना पड़ता है, तब हम अधिकार के वचन बोलकर ऐसा करते हैं। हम आज्ञा के वचन से दुष्टात्माओं को निकालते हैं।

अधिकार के वचन बोलना सीखें। आप अपने लिए तथा आप जब दूसरों की सेवा करते हैं तब ऐसा करें। जब आपको डर के विचारों का सामना करना पड़ता है, तब यह कहना सीखें 'यीशु के नाम में, मैं डर की आत्मा को आज्ञा देता हूं कि वह अभी छोड़कर जाए। मैं यीशु के नाम में डर के विचारों का इन्कार करता हूं'। खास तौर पर आप उस आत्मा को उस स्थिति के अनुसार पुकार सकते हैं जो उसके द्वारा उत्पन्न हुई है। यदि आपको लगता है कि कोई असामान्य बात या ऐसी 'बात' है जो गड़बड़ी पैदा कर रही है, तो उस गड़बड़ी या उलझन पर अपना अधिकार लें। यह कहना सीखें, 'यीशु के नाम में इस परिस्थिति में काम करने वाली गड़बड़ी की आत्माओं पर मैं अधिकार लेता हूं। मैं उनके काम को बांधता हूं। मैं उन्हें आज्ञा देता हूं कि वे यीशु के नाम में छोड़कर जाएं'। जब कोई ऐसे किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है जो बीमार है और आप जानते हैं कि उसकी यह दशा दुष्टात्मा के कारण है, तो आप कहें, 'यीशु के नाम में, मैं इस दुर्बलता की आत्मा पर अधिकार लेता हूं और उसे आज्ञा देता हूं कि वह अभी छोड़कर जाए'।

आज्ञा के वचन से दुष्टात्माओं को निकालें। यीशु ने ऐसा किया, इसलिए हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

34. जब आप उसे पृथ्वी पर मान लेते हैं, तब स्वर्ग में आपका जिक्र होता है

मत्ती 10:32-33

32 जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।

33 परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।

यीशु के वचन अत्यंत स्पष्ट हैं। यदि हम उसे मनुष्यों के सामने मान लेते हैं, तो वह हमें स्वर्गीय पिता के सामने मान लेगा या अंगीकार करेगा।

'मान लेना' के लिए ग्रीक शब्द है "homologia", जो कि इस ग्रीक शब्द '*homo*' का संयुक्त शब्द है जिसका अर्थ है 'वही', और ग्रीक '*logos*' अर्थात 'कहा गया कुछ'। इसलिए मान लेने का अर्थ वही बात कहना, सहमत होना, सम्मत होना, कबूल करना, अंगीकार करना।

मान लेने का अर्थ वही बात कहना जैसा दूसरा व्यक्ति कहता है। बायबल का अंगीकार उस बात से सहमत होना है जो परमेश्वर ने कही है, उसके वचन से सहमत होना। यह वही बात कहना है जो परमेश्वर ने कही है। हम वही कहते हैं जो उसने कहा है। हम अपनी बात नहीं कह सकते जो परमेश्वर के वचन का खंड़न करती है और उसे अंगीकार करती है।

हमें अंगीकार करना है कि यीशु कौन है जो उसने कहा है। यीशु के बारे में हमारा अंगीकार उसने खुद के बारे में जो कुछ कहा उससे सहमत होना चाहिए। यीशु ख्रीष्ट (मसीह) है, जीवित परमेश्वर का पुत्र। वह मार्ग, सत्य और जीवन है, बिना उसके द्वारा पिता के पास कोई नहीं पहुंच सकता। जब हम उसे कबूल करते हैं - अर्थात वही बोलते हैं जो उसने खुद के बारे में कहा - मनुष्यों के सामने, तब वह भी हमें अपने स्वर्गीय पिता के सामने कबूल करेगा, अंगीकार करेगा (हमारे साथ उस बात में सहमत होगा जो हम उसके सम्बन्ध में अपने बारे में बोलते हैं)। तब आप कह सकते हैं 'मैं परमेश्वर की सन्तान हूं, यीशु के लहू से धोया गया हूं, मैंने पाप से उद्धार पाया है, परमेश्वर के राज्य में लाया गया हूं'...आदि...और अपने स्वर्गीय पिता के सामने आपके बारे में यीशु यही कबूल करेगा!

यीशु के बारे में वही कहें जो उसने अपने स्वयं के बारे में कहा और परमेश्वर का वचन उसके बारे में जो प्रगट करता है। वह उद्धारकर्ता है। वह चंगाई करने वाला है। वह मुक्तिदाता है। वह शांति का राजकुमार है। उसे मनुष्यों के सामने अंगीकार करें। वह आपको पिता के सामने अंगीकार करेगा, मान लेगा।

35. आपके हृदय में जो है उसे आपके जीवन में जारी करें

मत्ती 12:33-35

33 "यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो, क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है।
34 "हे सांप के बच्चो, तुम बुरे होकर अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वह मुंह पर आता है।
35 "भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

पेड़ उसके फलों से पहचाना जाता है। जो फल पेड़ लाता है वह इस बात पर निर्भर करता है कि पेड़ में क्या है और वह किस प्रकार का पेड़ है। उसके बाद यीशु अपने लोगों को यह लागू करता है। यदि हृदय बुरा है, तो मुंह बुरी बात बोलेगा क्योंकि जो हृदय में है वही मुंह के शब्दों के द्वारा बाहर आता है।

वचन 35 में, हम सीखते हैं कि हमारे जीवन में हम जो उत्पन्न करते हैं (फल) वह इस बात पर निर्भर करता है कि अंदर क्या है। यदि आपके अंदर अच्छी बातें संचित हैं, तो आप उत्तम फल लाएंगे - आपके जीवन में अच्छी बातें उत्पन्न होगी।

जो कुछ अंदर है (उत्तम धन) उसे हमारे जीवनों में बाहर प्रगट करने में (फल) शब्द या वचन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि जो मन में भरा है, वह मुंह पर आता है।

हमारे अंदर जो है उसे शब्द हमारे जीवन में जारी करते हैं। हमारे हृदयों में जो संचित है वह हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों से हमारे जीवन में मुक्त होता है।

अच्छी बातों को संचित करें। हमें आज्ञा दी गई है कि मसीह का वचन हमारे अंदर बहुतायत से वास करने पाए (कुलुस्सियों 3:16)। परमेश्वर के वचन का संपन्न धन आपके अंदर संचित करें। उसके बाद जो वचन आप बोलते हैं वे आपके अंदर बसे परमेश्वर के वचन के अनुरूप होंगे। आप भली बातों को निकालेंगे, क्योंकि आपके हृदय से वे ताकतें प्रगट होती हैं जो आपके जीवन को आकार देती हैं (नीतिवचन 4:22)। आपके हृदय में जो है उसे वचन आपके जीवन में जारी करते हैं। वचन से भर जाएं। वचन बोलें।

36. आप आपके वचनों से धर्मी सिद्ध होते हैं या दोषी ठहराए जाते हैं

मत्ती 12:36-37

36 "और मैं तुमसे कहता हूं कि जो जो व्यर्थ बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक बात का लेखा देंगे।

37 "क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।"

हमारे शब्द कितने महत्वपूर्ण हैं? यीशु ने कहा हमारे द्वारा कही गई व्यर्थ बातों का भी हमें हिसाब देना होगा। हमने नीतिवचन 18:21 में देखा है कि जीवन और मृत्यु की सामर्थ हमारे शब्दों में है। मत्ती 12:36-37 में यीशु हम पर हमारे शब्दों के चिरंतन परिणामों को प्रगट करता है। हम अपने ही शब्दों के द्वारा धर्मी या दोषी ठहराए जाएंगे। यदि शब्द इतने महत्वपूर्ण हैं यहां और यहां के बाद भी, तो हमें अपने शब्दों को गंभीरता के साथ लेना होगा।

'व्यर्थ' के लिए ग्रीक भाषा में दिया गया शब्द है '*argos*' जिसका अर्थ है निकम्मा, बेरोजगार, लाभरहित, निरूपयोगी, धीमा, बांझ। यीशु ने कहा कि हमें अपने व्यर्थ शब्दों का भी हिसाब देना होगा, वे शब्द जिन्हें हम बोलते हैं लेकिन उन्हें कहने का हमारा मतलब नहीं होता, अर्थात, हम सक्रिय रूप से उन्हें काम में नहीं ला रहे थे। मैं नहीं जानता कि यह कैसे किया जाएगा, लेकिन हम उसकी चेतावनी को गंभीरता से मानें।

व्यर्थ शब्द बोलने के बजाय, ऐसे शब्दों को बोलें जो आपके लिए और दूसरों के लिए उपयोगी, फलदायक, और लाभदायक हैं। ऐसे शब्दों को बोलें जो जीवन, आशीष, बल और सामर्थ को आपके तथा दूसरों के जीवन में जारी करते हैं। ऐसे शब्दों को बोलें जो आपको तथा आपके आसपास के लोगों को धर्मी ठहराएंगे, ऊंचा उठाएंगे, तरक्की प्रदान करेंगे, उन्नति देगें और समृद्ध बनाएंगे।

37. वचन बांधने और खोलने के लिए राज्य के अधिकार को जारी करते हैं

मत्ती 16:18-19

18 “और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

19 “मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।”

कलीसिया चट्टान, यीशु ख्रीष्ट (मसीह) पर बनी है, जो परमेश्वर का जीवित पुत्र है। यह पतरस का महान अंगीकार था जो पिता की ओर से प्रकाशन के द्वारा आया। यीशु जिस कलीसिया को बना रहा है वह सामर्थी कलीसिया है, और नर्क की सारी ताकतें उसमें समा नहीं सकती, उसे रोक नहीं सकती या उस पर हावी या प्रबल नहीं हो सकतीं। इस कलीसिया को प्रभु यीशु ने स्वर्ग के राज्य का अधिकार (कुंजियां) दिया है। कलीसिया पृथ्वी पर इसलिए है ताकि इस क्षेत्र में परमेश्वर के राज्य को जारी करे और उसे राज्य का अधिकार दिया गया है।

यहां पृथ्वी के क्षेत्र में राज्य का अधिकार कैसे चलाया जाएगा? यीशु ने कहा कि हम “पृथ्वी पर बांधेंगे” और “पृथ्वी पर खोलेंगे”। ‘बांधना’ शब्द का अर्थ है मना करना, प्रतिबंध लगाना, अनुमति न देना, और गैरकानूनी घोषित करना। ‘खोलना’ शब्द का अर्थ है नाश करना, बुझाना, बंधन खोलना, खोलना, जारी करना, अलग-अलग करना, वापस खोलना, फेंकना, पराजित करना, और मिटा देना। हम कैसे बांधते और खोलते हैं? हम यीशु को उसकी सेवकाई में ऐसा करते हुए देखते हैं। उसने अपने बोले हुए शब्दों के द्वारा अपने अधिकार का उपयोग किया। गूंगे और बहरे व्यक्ति से उसने कहा, “खुल जा” और उनके कान और जीभें खुल गईं” (मरकुस 7:33-35)। उसने स्त्री से कहा, “हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई” (लूका 13:12)। यीशु ने अधिकार के शब्द बोलें उन शब्दों ने लोगों को मुक्त कर दिया और शैतान के कामों को रोक दिया।

हम उसके उदाहरण का अनुसरण करते हैं। हम यीशु के नाम के अधिकार में शब्दों को बोलते हैं। हमें जो अधिकार प्रतिनिधिस्वरूप दिया गया है उसमें जिन शब्दों को हम बोलते हैं उनके द्वारा हम बांधते हैं और खोलते हैं। विश्वासी के नाते आप में निहित परमेश्वर के राज्य के अधिकार को संचालित करने के लिए अपने शब्दों का उपयोग करें। आपके शब्द बांधने और खोलने के लिए राज्य के अधिकार को जारी करते हैं! अधिकार के शब्द बोलें।

38. पहाड़ से बोलें

मत्ती 17:20

उसने उनसे कहा, "तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव न होगी।

यदि हमने सुसमाचारों में विश्वास पर यीशु द्वारा दी गई शिक्षा का अध्ययन किया है, तो हम पाएंगे कि उसने अपने विश्वास को बोलने पर बड़ा ज़ोर दिया। मत्ती 17 में, जब चेले दुष्टात्मा को निकाल नहीं पाए और वे ऐसा क्यों नहीं कर पाए इस बारे में उन्होंने यीशु से पूछा, तब यीशु ने उनके अविश्वास की ओर या विश्वास के अभाव की ओर संकेत किया। फिर वह उन्हें (और हमें भी) विश्वास की संभावनाओं के बारे में सिखाने लगा, हम उसके साथ क्या कर सकते है। और अपने विश्वास को कैसे चलाएं या कैसे उपयोग करें।

सारांश रूप में, विश्वास न केवल दुष्टात्माओं को और उनके कामों को पराजित कर सकता था, बल्कि प्राकृतिक संसार (उदाहरण के तौर पर इस पहाड़ को यहां से हटाकर वहां रखो) में बदलाव को प्रभावित भी कर सकता था। विश्वास के साथ, यीशु ने कहा कि "तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा"। हमारे हृदय में जो विश्वास है उससे हम काम पूरा कर सकते हैं। उसने कहा कि हमारे हृदय में जो विश्वास है वह इतना प्रभावी है, कि मात्र राई के दाने के बराबर का विश्वास, पहाड़ को हटा सकता है। विश्वास को उपयोग में लाने का तरीका है बोलना! आपके विश्वास को बोलें। अपने हृदय में विश्वास रखकर उन शब्दों को जारी करें जो वर्णन करते हैं कि आपको किस बात के लिए विश्वास है।

उसने यह भी अत्यंत स्पष्ट किया है कि हमें पहाड़ से बोलना है। जब हम पहाड़ को हटाना चाहते हैं, तब हम पहाड़ से बोलते हैं। अक्सर हम दूसरों को पहाड़ के विषय में बोलने की गलती करते हैं। कभी कभी हम परमेश्वर से पहाड़ के विषय में इस प्रकार बोलते या शिकायत करते हैं जैसे वह पहले से नहीं जानता था कि वह वहां पर है। यीशु ने हमें स्पष्ट आज्ञा दी है कि अपने हृदयों में विश्वास को रखकर हमें पहाड़ से बोलना है। दुष्टात्माओं से बोलें। बीमारी से बोलें। आंधी से बोलें। परिस्थितियों से बोलें। अभाव से बोलें। बंद दरवाज़ों से बोलें। हमारे स्वाभाविक क्षेत्र के चीज़ों से बोलें। आपके विश्वास के अनुसार आज्ञा दें। उसने कहा, "तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं है।" हम विश्वास पर यीशु की शिक्षा का अनुसरण करें। आपके विश्वास को बोलें।

39. अपने इच्छित परिणाम को बोलें

मरकुस 5:25-34

25 और एक स्त्री थी जिसको बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था।

26 और उसने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब कुछ व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।

27 यीशु की चर्चा सुनकर वह भीड़ में उसके पीछे से आयी और उसने उसके वस्त्र को छू लिया।

28 क्यांकि वह कहती थी, "यदि केवल मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।"

29 और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया और उसने अपनी देह में जान लिया कि वह उस बीमारी से अच्छी हो गई है।

30 यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझमें से सामर्थ निकली है, और उसने भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, "मेरा वस्त्र किसने छूआ? "

31 उसके चेलों ने उससे कहा, "आप देखते हैं कि भीड़ आप पर गिरी पड़ती है, और आप कहते हैं कि किसने मुझे छूआ? "

32 तब जिसने यह काम किया था उसे देखने के लिए उसने चारों ओर दृष्टि की।

33 तब वह स्त्री यह जानकर कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आयी और उसके पांवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच सच कह दिया।

34 उसने उससे कहा, "पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से चंगी हो जा।"

स्त्री ने आरंभ में अपने में सोचा होगा, "यदि मैं केवल उसके वस्त्रों को छू लूंगी, तो मैं चंगी हो जाऊंगी"। अंत में वह बोल पड़ी," यदि मैं केवल उसके वस्त्रों को छू लूंगी, तो मैं चंगी हो जाऊंगी"। इसी तरह दूसरों ने जाना कि उसने क्या कहा और उसे हमारे लिए लिखा गया है। यीशु ने इस स्त्री को उत्तर दिया कि उसके विश्वास ने उसे चंगा किया है। उसका बोलना और करना उसके विश्वास करने से जुड़ा हुआ था। उसने विश्वास किया। उसने कहा। उसने कार्य किया।

उसने इच्छित परिणाम को व्यक्त करते हुए अपने विश्वास को बोला। उसने कहा कि जब वह यीशु के वस्त्रों को छूएगी, तो वह चंगी हो जाएगी। प्रभु यीशु ने उसके विश्वास को स्वीकार किया जो चंगाई का आश्चर्यकर्म ले आया।

समय बदल गया है। परन्तु विश्वास का बाइबल आधारित सिद्धांत आज भी सत्य है। परमेश्वर अब भी हमारे हृदय के विश्वास का उत्तर देता है। हमारा विश्वास हमारे बोलने और करने के द्वारा व्यक्त होता है। अपने विश्वास को बोलें। इच्छित परिणाम को बोलें जिसके लिए आपने परमेश्वर पर विश्वास किया है।

40. विश्वास करें कि आप जो कहते हैं वह पूरा होगा

मरकुस 11:22-23

22 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "परमेश्वर पर विश्वास रखो।

23 "मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।

एक परिच्छेद जहां यीशु ने हमें यह स्पष्ट शिक्षा दी कि परमेश्वर में विश्वास का कैसे उपयोग किया जाता है, वह है मरकुस 11:22-23। यीशु ने अभी अभी अंजीर के वृक्ष को बोलकर दिखाया था कि विश्वास का कैसे उपयोग करें। चेलों ने अंजीर के वृक्ष पर उसके बोलने का परिणाम देखा था। यीशु फिर उन्हें समझाने लगा कि वे कैसे परमेश्वर में अपने विश्वास का उपयोग कर सकते हैं।

यीशु हमें सिखाता है कि परमेश्वर में विश्वास रखकर पहाड़ को हटने की आज्ञा देने के लिए उसे बोलें। आप जो कह रहे हैं उसके विषय में अपने हृदय में संदेह न करें। विश्वास करें कि आप जो कहते हैं वह पूरा होगा और जो आप कहते हैं वह आप पाएंगे। हमारा विश्वास परमेश्वर में है। परन्तु उसी समय हम स्वाभाविक संसार में कुछ करते हैं। हम विश्वास के वचन बोलते हैं। हम विश्वास करते हैं कि जो हम कहते हैं वह उस परमेश्वर के कारण पूरा होगा जिसमें हमारा विश्वास है। हम विश्वास करते हैं कि हम परमेश्वर के साथ सहकर्मी हैं। जब हम विश्वास के वचन बोलते हैं, तब वह परमेश्वर जिसमें हम विश्वास करते हैं हमारी ओर से कार्य करता है और उन शब्दों को पूरा करता है। परमेश्वर में विश्वास के कारण, हम यह भी विश्वास करते हैं कि जो हम कहते हैं वह पूरा होगा, क्योंकि परमेश्वर उसे पूरा करने के योग्य है।

परमेश्वर में विश्वास रखें। आपके विश्वास को बोलें। परमेश्वर में विश्वास करें कि जो आप बोलते है वह किया जाएगा क्योंकि परमेश्वर उसे पूरा करता है। विश्वास करें कि जो आप कहते हैं वह पूरा होगा।

41. प्रार्थना में विश्वास के वचन बोलें

मरकुस 11:22-24
22 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “परमेश्वर पर विश्वास रखो।
23 “मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।
24 “इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।

इसी परिच्छेद में जहां प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि परमेश्वर में विश्वास का कैसे उपयोग करें, वहीं उसने हमें प्रार्थना के विषय में सिखाना जारी रखा। ”इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो...” “इसलिए मैं तुमसे कहता हूं...” का अर्थ है ”इस कारण, मैं तुमसे यह कहता हूं...“ या ”इसीलिए मैं तुमसे यह कहता हूं...“ यीशु ने मरकुस 11:24 में प्रार्थना के विषय में जो प्रतिज्ञा की और कैसे प्रार्थना करें यह उसने हमें मरकुस 11:22-23 में जो सिखाया उससे संबंधित है।

यीशु ने कहा, जब तुम प्रार्थना करते हो, जो कुछ तुम मांगते हो, तो विश्वास करो कि तुमने उन्हें पाया है, और तुम उसे पा लोगे। जब हमने उसकी इच्छा के अनुसार मांग लिया है, तो हम यह भी जानते हैं कि हमने पिता से जो कुछ मांगा वह हमने पा लिया है (1 यूहन्ना 5:14-15)। इसलिए हम विश्वास करते हैं कि जिस समय हमने प्रार्थना की उसी समय हमने पा लिया। यह बात पूरी हो चुकी है। उसने हमें मरकुस 11:23 में जो कुछ सिखाया उसका अब हम उपयोग करते हैं। हम ज़रूरत से, परिस्थिति से, समस्या से, पहाड़ से कहते हैं, और जो हमने पा लिया है उसे घोषित करते हैं। हम घोषणा करते हैं कि पहाड़ हटाया जाए। परमेश्वर में विश्वास दोनों तरह से कार्य करता है - यह विश्वास करने के द्वारा कि जब हमने प्रार्थना की तब हमने पा लिया और परिस्थिति से बोलने के द्वारा यह घोषित करते हुए कि जो हमने विश्वास किया था कि हमने पा लिया है वह पूरा हो चुका है।

42. उसके वचन के साथ सहमत हों

लूका 1:37-38,45

37 “क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित (असंभव) नहीं होता।”

38 मरियम ने कहा, “देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।” तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

45 “और धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गई, वे पूरी होंगी।”

लूका 1:37 (रिवाईज़्ड वर्जन)

37 क्योंकि परमेश्वर की ओर से आने वाला कोई भी वचन सामर्थरहित नहीं होता।

जो स्वर्गदूत मरियम के पास यह समाचार ले आया कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती होगी, उसने यह कहकर अपने संदेश को समाप्त किया ”परमेश्वर के लिए कोई भी बात असंभव नहीं होगी। “यह शब्द” कोई भी नहीं, वास्तव में तीन ग्रीक शब्दों का संयुक्त शब्द है *pas* (सब, प्रत्येक) *rhema* (शब्द, बोली) *ou* (नहीं)। अतः वचन 37 का बेहतर अनुवाद, जैसा रिवाईज़्ड वर्जन में देखा गया है, होगा ‘परमेश्वर की ओर से आने वाला कोई भी वचन सामर्थरहित नहीं होता।’ वह पूरा होगा ही। परमेश्वर का प्रत्येक वचन सामर्थी है और वह पूरा होगा।

परमेश्वर ने कहा था। स्वर्गदूत ने इसे प्रमाणित किया। मरियम ने केवल परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होकर प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसने कहा, ‘मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।’ वचन के साथ उसके सहमत होने का अर्थ था उस क्षण से उसने वह सब कुछ किया जो इस बात के अनुरूप था जो उसने उसके लिए कहा था। बाद में पवित्र आत्मा ने इलीशिबा के द्वारा उसे यह कहकर प्रोत्साहन दिया कि क्योंकि मरियम ने विश्वास किया, अतः जो वचन उसे कहा गया उसे वह पूरा होते हुआ देखेगी।

परमेश्वर की ओर से आने वाला कोई भी वचन जिसे हम लिखित पवित्र शास्त्र में पढ़ते हैं वह बिना पूर्णता के नहीं रहेगा। पवित्र शास्त्र में हमें दिया गया हर एक शब्द सामर्थी है और पूरा होगा। उसके वचन पर विश्वास करने का अर्थ हम उसके वचन से सहमत होते हैं। हम सहमत होते हैं और कहते हैं जैसे मरियम ने किया ‘मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।’ उसके वचन के साथ हमारी सहमति उसकी सहमति में हम कैसे सोचते हैं, बोलते हैं और कार्य करते हैं यह शामिल है। हम परमेश्वर के वचन के विपरीत बोल नहीं सकते, और कहें कि हम उसके वचन से सहमत हैं। यदि हम परमेश्वर के साथ और उसके वचन के साथ सहमत हैं, तो हमारे शब्द भी उसके वचन के साथ सहमत होने चाहिए। जब हम विश्वास के साथ बोलते हैं, उसके वचन के साथ सहमत होते हैं, तब प्रभु के द्वारा हमारे लिए कही गई बातें पूरी होगी।

43. बीमारियों को जाने की आज्ञा दें

लूका 4:38-39

38 वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और उन्होंने उसके लिए बिनती की।

39 उसने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा टहल करने लगी।

हम जीवन और सेवकाई में प्रभु यीशु का अनुसरण करते हैं। यीशु ने लोगों को उनकी बीमारियों से चंगा करने के लिए कैसे सेवा की? हम वास्तव में यीशु को पिता से प्रार्थना करते हुए नहीं पाते हैं कि वह बीमारी और रोग को दूर करे। जी हां, यीशु ने पिता से बातें करते हुए प्रार्थना में बहुत वक्त बिताया। लेकिन बीमारी और रोगों से निपटने के लिए, यीशु ने रोग को अधिकार के साथ जाने की आज्ञा दी। लूका 4:38-39 ऐसा ही एक उदाहरण है। प्रभु यीशु ने बुखार को डांट लगाई। उसने बुखार से बात की और इसे छोडकर जाने की आज्ञा दी, और बुखार तुरंत ठीक हो गया।

यीशु हमेशा सही है। वह सनातन वचन है। यदि अब तक के हमारे धर्मविज्ञान में बीमारियों और रोगों से बात करना इस प्रकार शामिल नहीं है जैसा कि यीशु ने किया था, तो हमारे धर्मविज्ञान में परिवर्तन की जरूरत है और यीशु ने जो कहा और किया, उसके अनुरूप उसे अपने आपको बनाना होगा।

आप और मैं उन्हीं कामों को करते हैं जो यीशु ने किए और उनसे भी बढ़कर (यूहन्ना 14:12)। और अर्थात हमें उसे उसी तरह करना है जैसे उसने किया। यीशु ने बीमारी और रोग से बात की और उसे छोड़कर जाने की आज्ञा दी। अतः आप और मैं एक समान तरीके से बोलते हैं। हम बीमारियों को छोड़कर जाने की आज्ञा देते हैं। हम अपने स्वयं के शरीर के लिए भी और जब हम दूसरों के लिए सेवा कर रहे हों, ऐसा कर सकते हैं। यीशु का अनुसरण करें। उसने जो किया वही करें। आपके शब्द उसके द्वारा आपको दिए गए अधिकार की अभिव्यक्ति हैं। बीमारियों को जाने की आज्ञा दें। आपके विश्वास को बोलें।

44. आंधी से बोलें

लूका 8:22-25

22 फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े। तब उसने उनसे कहा, “आओ, झील के पार चलें।” इसलिए उन्होंने नाव खोल दी।

23 परन्तु जब नाव चल रही थी, तो वह सो गया; और झील पर आन्धी आयी और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे।

24 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, “स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं।” तब उसने उठकर आन्धी को और पानी की लहरों को डांटा और वे थम गए, और वहां शांति छा गई।

25 और उसने उनसे कहा, “तुम्हारा विश्वास कहां है? ” पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, “यह कौन है जो आन्धी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं? ”

यीशु ने आंधी से और पानी से कहा और उन्हें शांत होने की आज्ञा दी और उन्होंने उसकी आज्ञा मानी। यीशु ने अपने चेलों की ओर मुड़कर उनसे सवाल किया “तुम्हारा विश्वास कहां है?”, जो यह सूचित करता है कि वे अपने विश्वास से इस परिस्थिति का सामना कर सकते थे। उसने जो कुछ किया उसे वे भी अपने विश्वास से कर सकते थे।

प्रभु यीशु ने हमारे लिए नमूना रखा है कि हम किस प्रकार जीवन बिता सकते हैं और पिता के साथ चल सकते हैं। उसने हमारे लिए नमूना रखा कि पवित्र आत्मा के अभिषेक के अंतर्गत चलना और सेवा करना क्या होता है। उसने हमारे लिए यह नमूना भी रखा कि विश्वास क्या कर सकता है। उसने बेजान वस्तुओं को संबोधित किया - अंजीर का वृक्ष, बीमारी, रोग, लहरें और हवाएं। उसने उन्हें आदेश दिया कि वे उसकी आज्ञा मानें और उन्होंने ऐसा ही किया। जो कुछ यीशु ने किया उसमें क्या हम उसका अनुसरण करें? पूर्णतया!

अगली बार जब आप तूफान का सामना करते हैं चाहे वह वास्तविक हवा और लहरें हों - या जीवन की परिस्थितियों में अन्य तूफान, वही करें जो यीशु करता। आंधी से बोलें। उसे आज्ञा दें कि वह शांत हो जाए। परेशानियों को आज्ञा दें कि वे पीछे हट जाएं, रुक जाएं, शांत हो जाएं। गड़बड़ी की, दुर्भावना की, निंदा की, मतभेद की, लड़ाई-झगड़े की आंधियों को, जो सही नहीं है उसे, आज्ञा दें कि वे थम जाएं।

45. घोषित करें कि लोग बंधनों से मुक्त हों

लूका 13:10-16

10 सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश कर रहा था।

11 और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।

12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।"

13 तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।

14 इसलिए कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, "छः दिन हैं, जिनमें काम करना चाहिए, इसलिए उन ही दिनों में आकर चंगे होओ; सब्त के दिन में नहीं।"

15 यह सुन कर प्रभु ने उत्तर देकर कहा, "हे पाखण्डियो, क्या सब्त के दिन तुममें से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?

16 "और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाए? "

इस परिच्छेद में जिस स्त्री का उल्लेख किया गया है उसे अठारह वर्षों से पीठ की समस्या थी। वह झुकी हुई और कुबड़ी थी। शैतान ने उसे बांधकर रखा था और कैद कर रखा था। इस मामले में यह दुर्बलता की आत्मा थी जो इस समस्या का कारण बनी थी। यीशु ने उसकी सेवा कैसे की? उसने उसे छुआ और शब्द कहे। उसने कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।" उसके अधिकारपूर्ण वचनों ने एक क्षण में अठारह वर्षों से दुर्बलता की आत्मा के द्वारा शैतान ने जो किया था उसे ठीक कर दिया।

यीशु में विश्वास करने वाले के रूप में हमें अधिकार दिया गया है कि हम सांपों और बिच्छुओं को रौदें और शत्रु की सारी सामर्थ पर हमें अधिकार दिया गया है (लूका 10:19)। यीशु का अधिकार उसकी देह, कलीसिया के द्वारा व्यक्त होता है, जो आपके और मेरे जैसे विश्वासियों से बनी हैं। अधिकार उन वचनों से चलाया जाता है जिन्हें हम बोलते हैं। अधिकार के साथ हम घोषणा करते हैं कि लोग उनके बंधनों से मुक्त हो गए हैं। व्यसनों में बंधे हुओं को हम घोषित करते हैं, 'यीशु के नाम में अपने व्यसन से मुक्त हो जाएं।' उसी तरह हम लोगों को अन्य प्रकार के बंधनों से मुक्त करते हैं। अधिकार के शब्द बोलें। घोषित करें कि लोग उनके बंधनों से मुक्त हों।

46. अभिषिक्त वचन आत्मा का जीवन ले चलते हैं

यूहन्ना 6:63

"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

यूहन्ना 6:63 (गुड न्यूज़ बाइबल)

जीवन देने वाला आत्मा है; मनुष्य की सामर्थ बिल्कुल किसी उपयोग की नहीं। जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे परमेश्वर के जीवनदायक आत्मा को लाते हैं।

यीशु ने उसमें बने रहने, उसका मांस खाने और लहू पीने के बारे में अपने चेलों से बात करना समाप्त किया था। और उसके बाद उन्हें यह बताया था कि वह वास्तविक, स्वाभाविक चीज़ों के बारे में नहीं बोल रहा है, उसने स्पष्ट किया कि आत्मा जीवन देने वाला है (परमेश्वर-सदृश्य जीवन), मांस (प्राकृतिक या स्वाभाविक) यह नहीं कर सकता। फिर उसने अपने वचनों की ओर संकेत किया। जिन वचनों को वह बोल रहा था वे आत्मा हैं, आत्मिक या आत्मा की बातें हैं और उसके वचन उन्हें परमेश्वर के आत्मा का जीवन देते हैं। यीशु आत्मा से अभिषिक्त था। जब वह बोलता था, तब उसके वचन श्रोताओं के लिए आत्मा का जीवन ले आते थे।

हम पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त हैं (2 कुरिन्थियों 1:21)। हमारे द्वारा उसका अभिषेक काम करता है] जिसके माध्यम से, परमेश्वर उन शब्दों का उपयोग करता है जिन्हें हम बोलते हैं, कि वे उसके आत्मा के जीवन के वाहक हों। इसलिए जब हम अभिषेक के अंतर्गत, या आत्मा से प्रेरित होकर बोलते हैं, तो वे शब्द या वचन अलौकिक बातों को घटित करते हैं। वे लोगों तक परमेश्वर के जीवन को जारी करते हैं। वे परिस्थितियों और दशाओं में परमेश्वर की सामर्थ को मुक्त करते हैं। वे शब्द उन बातों के वाहक हैं जो परमेश्वर हमारे क्षेत्रों में जारी करना चाहता है। जब आत्मा आपको प्रेरित करता है, तब यह जानकर हियाव के साथ बोलें कि अभिषिक्त वचन आत्मा के जीवन को ले चलते हैं।

47. विश्वास से आज्ञा दें

यूहन्ना 11:40-43

40 यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।"
41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, "हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।"
42 "और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उसके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।"
43 यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाजर, निकल आ।" "

लाज़र, जो चार दिन का मरा था, उसकी कब्र के सामने खड़े होकर, प्रभु यीशु ने मार्था को यह आश्वासन दिया कि यदि वह विश्वास करेगी तो वह परमेश्वर की महिमा को देखेगी। उसने पिता को धन्यवाद दिया कि उसने पहले ही उसकी प्रार्थना सुनी है। और उसके बाद यीशु ने आज्ञा के वचन कहे, "हे लाजर, निकला आ।"

यीशु ने पिता से प्रार्थना की थी। वह जानता था कि उसकी बिनती सुनी गई है। परन्तु उसने स्वाभाविक क्षेत्र में इच्छित परिणाम घटित होने के लिए आज्ञा के शब्द भी कहें। हम विश्वास करते हैं कि हम अपने सामने परमेश्वर की महिमा को, परमेश्वर के सामर्थी कामो को प्रगट होते हुए देखेंगे। यीशु के समान हम विश्वास से प्रार्थना करते हैं। और यीशु के समान हमें विश्वास से आज्ञा के शब्दों को भी बोलना है।

आप परमेश्वर पर किन बातों के लिए विश्वास कर रहे हैं? कभी कभी लाजर के समान, हम जिस बात के किए जाने की परमेश्वर से अपेक्षा करते हैं, वह कब्र में मृत पड़ा हो सकता है। समय बीत चुका है। थोड़ा विलंब प्रतीत होता है। परन्तु परमेश्वर का वायदा स्पष्ट है। यदि हम विश्वास करेंगे तो हम परमेश्वर की महिमा को देखेंगे। हम परमेश्वर के सामर्थी कामों को देखेंगे। हमें विश्वास की प्रार्थना करना है। और हमें विश्वास से आज्ञा देना है। अपने विश्वास को हियाव के साथ बोलें। 'लाजर' को निकल आने की आज्ञा दें।

48. वचन आपकी मीरास में ले आते हैं

प्रेरितों के काम 20:32

और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है।

प्रेरित पौलुस यह स्पष्ट करता हैं कि परमेश्वर का वचन हमारी उन्नति करता है और हमें यह योग्यता देता है कि हम उस मीरास में चलें जो उन लोगों की हैं जो यीशु मसीह में पवित्र किए गए हैं। अर्थात हम सभी अपनी मीरास में चलने की इच्छा रखते हैं। हम उन सारी बातों का आनंद लेना चाहते है जो परमेश्वर ने उसके मुक्ति प्राप्त बेटे और बेटियों के रूप में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें प्रदान की हैं। परन्तु हमारे भीतरी मनुष्यत्व में उन्नति पाने के लिए हमें उद्देश्यपूर्ण रूप से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना है ताकि हम उन प्रयोजनों और विशेषाधिकारों में चल सकें जो उसने हमारे लिए उपलब्ध किए हैं।

कई तरीके हैं जिससे हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर सकते हैं। हमें उसका वचन पढ़ना है, उसके वचन का प्रकाशन पाना है, उसके वचन में मनन करना है, उसका वचन हममें बहुतायत से बसने पाए, और हमें उसके वचन को मानना है। उसका वचन हमारे हृदयों में विश्वास उत्पन्न करता है, जैसा कि रोमियों 10:17 हमें बताता है और, जैसा कि हम इस संपूर्ण पुस्तक में देख रहे हैं, हमें परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को बोलना है। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम परमेश्वर के वचन को आत्मसात करते हैं। अपने मीरास में चलने की कुंजियों में से एक है अपने जीवनों पर परमेश्वर का वचन बोलना। अर्थात ऐसा हम व्यर्थ पुनरावृत्ति या खाली अनुष्ठान के रूप में नहीं कर रहे हैं। हम परमेश्वर में विश्वास के साथ वचन बोलते हैं और उसका वचन बोलते हैं। और जब हम ऐसा करते हैं, तब हम अपने मीरास में चलने हेतु उसके वचन के द्वारा उन्नति पाते हैं। परमेश्वर में और उसके वचन में अपना विश्वास बोलें।

49. मैं विश्वास करता हूं कि वह वैसा ही होगा जैसा मुझे बताया गया था

प्रेरितों के काम 27:23-25
23 "क्योंकि परमेश्वर, जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा कि,
24 "हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवष्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।
25 "इसलिए, हे सज्जनो, ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।

स्वर्गदूत पौलुस के लिए परमेश्वर की ओर से संदेश ले आया था और पौलुस ने यह कहते हुए हियाव के साथ परमेश्वर में अपने वचन की घोषणा की कि जैसा स्वर्गदूत द्वारा उसे बताया गया था वैसा ही होगा।

हमारे पास परमेश्वर का लिखित वचन, पवित्र शास्त्र है, जो स्वर्गदूतों के शब्द से, अधिक निश्चित शब्द है। परमेश्वर ने अपने लिखित वचन में हमसे जो कहा है, मसीह में जिन बातों को उसने पहले ही हमारे लिए पूरा किया है, जिन बातों को उसने यहां हमारे लिए करने की प्रतिज्ञा की है उन्हें लेकर, जो उसने कहा है उसमें अपने विश्वास को घोषित करते हैं। हियाव के साथ घोषित करें कि आप विश्वास करते हैं कि जैसा परमश्वर ने अपने पवित्र वचन में बयान किया है बिल्कुल वैसा ही होगा। आपके वर्तमान में और आपके भविष्य में जो कुछ है वह हर बात जो परमेश्वर ने कही है उसके साथ पंक्तिबद्ध होगी।

और उसके बाद ऐसा समय होगा जब परमेश्वर उसके पवित्र आत्मा के द्वारा हमसे बातें करेगा या तो आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा, भविष्यद्वाणी के द्वारा, स्वप्नों और दर्शनों आदि के द्वारा। हम परखते हैं और यह आश्वासन पाते हैं कि उसके पवित्र आत्मा ने हमसे एक विशिष्ट शब्द कहा है, तो हम हियाव के साथ घोषणा कर सकते हैं कि हम विश्वास करते हैं कि जैसा उसने हमें बताया वैसा ही होगा।

हियाव के साथ घोषणा करें "मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं।"

मैं विश्वास करता हूं कि मेरे बारे में उसके वचन में परमेश्वर ने जैसा कहा है वैसा ही होगा।

50. जो बातें हैं ही नहीं उन्हें ऐसा बुलाएं मानो वे हैं

रोमियों 4:17

(जैसा लिखा है कि मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है), उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानों वे हैं।

प्रेरित पौलुस, पवित्र आत्मा के द्वारा अब्राहम के विश्वास के जीवन की अंतर्दृष्टियों को प्रगट करता है। अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया। अब्राहम ने पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना को जारी करने के लिए विश्वास के द्वारा परमेश्वर के साथ साझेदारी की। जिस परमेश्वर पर अब्राहम ने विश्वास किया और जिसके साथ वह साझेदार हुआ, वही परमेश्वर है जो मृतकों को जीवन देता है और जो बातें है ही नहीं उन्हें ऐसे बुलाता है मानो वे हैं। अब्राहम को विश्वास करना पड़ा कि जो मुर्दा दिखाई देता था वह जीवित होगा, विशिष्ट तौर पर उनके वृद्ध शरीर और सारा का बांझ गर्भाशय। और जो था ही नहीं, अस्तित्व में ही नहीं था उसे अब्राहम को ऐसे बुलाना सीखना पड़ा मानो वह है। परमेश्वर ने वह पहले किया। अब्राहम को जब सन्तान नहीं थी तब भी, परमेश्वर ने अब्राहम पर बोला और कहा कि उसने उसे एक महान राष्ट्र का पिता बनाया है। और उसके बाद परमेश्वर ने अब्राम और साराय के नामों को बदलकर उन्हें अब्राहम और सारा ये नाम दिए, वास्तव में, उन्हें उस बात को ऐसे पुकारने के लिए विवश किया जो थी नहीं, कि वह मानो है।

विश्वास स्वत्वाधिकार विलेख है, उन बातों की मिल्कियत का सबूत जिनकी आशा या इच्छा की गई है। विश्वास उन बातों की प्रतीति है, दृढ़ आश्वासन है जिन्हें अब तक देखा नहीं है, वे बातें जो अब तक भौतिक इंद्रियों को प्रगट नहीं की गई। इस प्रकार का विश्वास, जब बोलता है, तब उन बातों को ऐसे नहीं बुलाता जैसे वे स्वाभाविक में हैं, बल्कि ऐसे बुलाता है मानो वे आत्मिक में हैं। इस प्रकार का विश्वास उन बातों को बोलकर अस्तित्व में लाता है, जो अस्तित्व में नहीं हैं। विश्वास यकीन करता है कि परमेश्वर ने एक बार जो बोला, वह पूरा हो गया। अपने विश्वास को बोलें। जो बातें अब तक स्वाभाविक क्षेत्र में नहीं है उन्हें ऐसे बुलाएं मानो वे हैं, क्योंकि परमेश्वर ने कहा है।

51. उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार बोलें

रोमियों 4:18-21

18 उसने निराशा में भी आषा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा, वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,

20 और न अविश्वासी होकर उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

21 और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने के लिए भी सामर्थी है।

प्रेरित पौलुस के द्वारा पवित्र आत्मा प्रगट करता है कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे प्राप्त करने हेतु अब्राहम कैसे विश्वास से चला। आशा करने का कारण न रहते हुए भी, अब्राहम ने आशा की और आशा से प्रेरित होकर उसने विश्वास किया। उसने क्या विश्वास किया? उसने विश्वास किया कि वह बिल्कुल वही बनेगा जो परमेश्वर ने उसके बारे में कहा था। तथ्य तो थे - उसके शरीर की और सारा के शरीर की भौतिक दशा का तथ्य - उसने तथ्यों को या सच्चाइयों को अपने विश्वास पर हावी होने नहीं दिया। उसके पास परमेश्वर का वचन था। परमेश्वर ने उसकी परिस्थिति के विषय में कहा था और परमेश्वर की ओर से वह वचन उसके जीवन में अंतिम अधिकार था। परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की थी उस पर अब्राहम का विश्वास आधारित था और इस बात पर कि परमेश्वर उस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सक्षम है। जीवन की हर बात - जो विश्वास उसने किया था, जो उसने किया और उसने जो कहा - परमेश्वर ने जो कहा था उसके अनुरूप और अनुसार था। परमेश्वर ने जो कहा है उसके अनुसार विश्वास बोलता है।

अक्सर हमारे जीवनों में, हमारी वर्तमान परिस्थितियां परमेश्वर के वचन में हम जो लिखा हुआ या प्रतिज्ञा किया हुआ पाते हैं, उसके विपरीत होती हैं। परमेश्वर का वचन किसी बात की प्रतिज्ञा करता है और हमारे अनुभव पूर्णतया विपरीत होते हैं। परमेश्वर का वचन घोषणा करता है कि परमेश्वर यहोवा राफा है, और हो सकता है कि बीमारी या रोग हमारे भौतिक शरीर को नुकसान पहुंचा रही होगी। परमेश्वर का वचन घोषणा करता है कि जो कुछ आप करते हैं वह सफल होगा, जबकि हाल ही के अनुभव असफलता के हो सकते हैं। परमेश्वर का वचन विजय की प्रतिज्ञा करता है, जबकि पराजय के कई क्षेत्र होंगे। हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें अपने अनुभव को ऐसे स्वीकार करना चाहिए मानो ये परमेश्वर की इच्छा हो या क्या हम परमेश्वर के वचन को हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा के रूप में स्वीकार करें?

हमें अब्राहम के विश्वास के कदमों पर चलने के लिए बुलाया गया है। आशा करने का कोई कारण न होते हुए भी, हमें आशा रखना है और परमेश्वर पर तथा उसके वचन पर विश्वास करना है। तथ्य या सच्चाइयां आपके विश्वास को कमज़ोर न करने पाएं। परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को स्थापित करें। विश्वास उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार बोलता है। अपने विश्वास को बोलें।

52. जीवन में राज्य करें - प्रभुता के वचन बोलें

रोमियों 5:17

क्यांकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

प्रभु यीशु हमें उन सारी बातों से बाहर निकाल ले आया जिसके अधीन आदम ने हमें रखा था। हमने भरपूर अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान पाया है। परमेश्वर ने हमारे जीवनों पर अपना अनुग्रह बरसाया है। उसने हमें मसीह में विश्वास के द्वारा विनामूल्य वरदान के रूप में अपनी स्वयं की धार्मिकता प्रदान की है। हम अतीत में पापी हुआ करते थे। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। हम परमेश्वर की धार्मिकता हैं। हमने परमेश्वर के भरपूर अनुग्रह को पाया है। हम जिस चीज़ के लायक नहीं होते या जिसे हम अपने बलबूते कभी कमा नहीं सकते उसे जब परमेश्वर हमें देता है, उसे अनुग्रह कहते हैं। परमेश्वर ने हमें अनुग्रह के द्वारा जो दिया है, वह वास्तव में हमारा है। वह हमारे पास है। परमेश्वर ने उसे हमें आनंद लेने, उसके अनुसार जीवन बिताने के लिए, उसे अपना बनाने के लिए दिया है।

परमेश्वर ने हमें जिन अनेक बातों को अपने अनुग्रह के द्वारा विनामूल्य दिया है, वह यह है कि उसने हमें ऐसा स्थान दिया है ताकि हम यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राजा के समान जिएं और राज्य करें। इस सच्चाई को समझें। आप आत्मिक अधिकार एवं प्रभुता प्राप्त व्यक्ति हैं। यदि आप उसका उपयोग नहीं करते हैं, तो उसका कोई उपयोग नहीं। राजा क्या करते हैं? राजा अपने शब्दों से अधिकार और प्रभुता चलाते हैं। वे शब्दों को बोलते हैं, वे ऐसी बातों की घोषणा करते हैं जिससे जो घोषणा वे करते हैं उनके प्रभाव के क्षेत्र में स्थापित होती हैं।

आदम ने हमें पाप, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं और उस प्रत्येक बात के अधीन कर दिया जो पतन के परिणामस्वरूप आई जिसमें रोग, निर्धनता, दुष्टात्मा का दबाव आदि का समावेश है। प्रभु यीशु हमें उस प्रत्येक चीज़ से बाहर निकाल ले आया जिसके अधीन आदम ने हमें रखा था, और अब हमें उन सारी बातों के ऊपर राज्य और शासन करने के लिए पदासीन किया है। परन्तु यदि हम अपनी प्रभुता नहीं चलाते तो हम उसका अनुभव कभी नहीं ले सकते। प्रभुता के शब्दों को बोलें। घोषणा करें। वचन को घोषित करें। अपने विश्वास को बोलें और जो कुछ आपके प्रभाव के क्षेत्र में है वह परमेश्वर के राज्य के सत्य के द्वारा शासित और संचालित होने दें।

53. विश्वास इस प्रकार बोलता है

रोमियों 10:6-8

6 परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है, वह इस प्रकार कहती है कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिए!)

7 या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिए!)

8 परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं,

9 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

10 क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

रोमियों के 4थे अध्याय में प्रेरित पौलुस ने उल्लेख किया है कि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। उसने मसीह में यह भी निश्चित किया है कि हमने बहुतायत का अनुग्रह पाया है और परमेश्वर का धार्मिकता का विनामूल्य वरदान हमें दिया गया है। अब हम परमेश्वर के सम्मुख सही स्थान में हैं, सो अब परमेश्वर में विश्वास अपने आपको कैसे अभिव्यक्त करता है? हम कैसे बोलते हैं, हम जो विश्वास और धार्मिकता से परिपूर्ण लोग हैं?

हम लाचारी या निराशा की बात नहीं कहते। हम ऐसे नहीं बोलते मानो परमेश्वर दूर स्वर्ग में है और वह हमारी सहायता नहीं कर सकता। हम ऐसे नहीं बोल सकते मानो परमेश्वर मृतक है और हमारी सहायता करने के लिए निर्बल है। बल्कि, प्रेरित पौलुस हम नए नियम के विश्वासियों को एक पुराने नियम का सत्य लागू करता है। वह हमें वही बात बताता है जो मूसा ने व्यवस्थाविवरण 30:11-14 में परमेश्वर के लोगों को बताई थी। वचन आपके निकट है। वह वचन जो परमेश्वर ने आपके मुख में और आपके हृदय में बोला है। यहां स्पष्ट अनुमान यह है कि वचन आपके हृदय में है ताकि आप उस पर विश्वास करें, और वचन आपके मुंह में है ताकि आप उसे अंगीकार करें, अर्थात यीशु के सुसमाचार का संदेश जिसका हम प्रचार करते हैं।

हमारे लिए यहां पर महत्वपूर्ण सत्य यह है कि विश्वास बोलता है। विश्वास परमेश्वर का वचन बोलता है जिसे निरंतर हमारे हृदयों में और हमारे मुंह में रखना है। कभी लाचारी के शब्द न बोलें। कभी निराशा के शब्द न बोलें। परमेश्वर का वचन आपके हृदय में है ताकि आप उस पर विश्वास करें, और वचन आपके मुंह में है ताकि आप उसे बोलें। वचन बोलें। परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को बोलें।

54. उद्धार के लिए अंगीकार

रोमियों 10:6-8

6 परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है, वह इस प्रकार कहती है कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिए!)

7 या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिए!)

8 परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं,

9 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

10 क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है

इस परिच्छेद से जिस दूसरे सत्य पर हम प्रकाश डालते हैं, वह है विश्वास करने और कबूल या अंगीकार करने का महत्व। हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना हमें परमेश्वर के साथ सही स्थान में रखता है ("क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है")। हम परमेश्वर से प्राप्त करने हेतु सही स्थान में, सही स्थिति में हैं। और उसके बाद पवित्र शास्त्र हमें निर्देश देता है कि हम दूसरा कदम बढ़ाएं। हमें निर्देश दिया गया है कि हम अपने मुंह से अंगीकार करें जिसका परिणाम यह होता है कि हम उद्धार प्राप्त करते हैं या अनुभव करते हैं ("उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है")।

क्रूस पर अपनी मृत्यु और मृतकों में से अपने जी उठने के द्वारा प्रभु यीशु मसीह ने धार्मिकता को और उद्धार को विनामूल्य वरदान के रूप में उपलब्ध कराया है। यह प्रत्येक को ग्रहण करना है। उद्धार दिया गया है, लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए हम विश्वास करते हैं और अंगीकार करते हैं। अंगीकार के महत्व पर ध्यान दें। जब हम विश्वास करते हैं तब हम प्राप्त करने की स्थिति में होते हैं। परन्तु अंगीकार ही उद्धार को हमारे अधिकार में लाता है, उसे हमारा बना देता है।

नए नियम में हम जिस उद्धार को समझते हैं, वह एक समावेशक शब्द है जिसमें सनातन उद्धार, पापों की क्षमा, पाप पर विजय, बीमारी से चंगाई, संघर्ष में विजय, शत्रु के प्रत्येक कार्य से छुटकारा, हानि से बचाव, खतरे से सुरक्षा, और पूर्ण स्वास्थ्य आदि का समावेश है। इसका अर्थ है उद्धार पाना, चंगाई पाना, छुटकारा पाना, विजय प्राप्त करना, छुड़ाया जाना, सुरक्षित रखा जाना और स्वस्थ किया जाना। परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना और परमेश्वर के वचन को अंगीकार करना इनमें से प्रत्येक को हमारा अनुभव बनाते हैं। अपने विश्वास को बोलें, क्योंकि अंगीकार किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप उद्धार आता है।

55. उसकी सभी प्रतिज्ञाओं के लिए आपके ”हां और आमेन“ की घोषणा करें

2 कुरिन्थियों 1:19-20

19 क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिसका हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ, उसमें हां और नहीं दोनों न थीं; परतु उसमें हां ही हां हुई।

20 क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साथ हैं। इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।

हमने कितनी बार लोगों को हमसे यह कहते हुए सुना है कि ऐसा समय होता है जब परमेश्वर आता है और कभी-कभी वह नहीं आता है। हम निश्चित रूप से नहीं जानते। लोग हमें बताते हैं कि कभी-कभी परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं काम करती हैं और कभी-कभी वे काम नहीं करती। उन सभी लोगों को देखें जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और फिर भी असफल रहे, या मर गए, या जिन्होंने विपत्ति का अनुभव किया। ये सभी तथ्य हैं और सत्य हैं, फिर भी, लोगों के अनुभवों के कारण, क्या हमारे पास परमेश्वर कौन हैं या उसका वचन क्या कहता है उसे बदलने का अधिकार है? क्या अनुभव परमेश्वर और उसके वचन से अधिक विश्वसनीय हैं? क्या हम अपने धर्मविज्ञान को परमेश्वर के अनुभव पर आधारित करते हैं या क्या हम अपने धर्मविज्ञान परमेश्वर और उसके वचन पर आधारित करते हैं?

प्रेरित पौलुस स्पष्ट करता है कि परमेश्वर अस्थिर नहीं है जैसा हम उसे दिखाते हैं। यीशु में, कोई ‘हां’ और ‘नहीं’ नहीं है, परन्तु हमेशा केवल एक निश्चित ‘हां’ है। परमेश्वर में कुछ भी छलपूर्ण नहीं है, कोई दुमुंही बात नहीं है, कुछ भी चंचलता या अस्थिरता नहीं है, वह कभी बदलता नहीं (याकूब 1:17 मेसेज बाइबल और पॅशन अनुवाद पर आधारित)। प्रेरित पौलुस हियाव के साथ घोषणा करता है कि परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएं यीशु में हां हैं। परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएं सत्य, विश्वसनीय हैं और यीशु में पूर्णता पाती हैं। उसके बाद ‘आमेन’ है जो हम परमेश्वर की महिमा के लिए कहते हैं।

यीशु में परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाओं के लिए ‘हां और आमेन’ है। हमें यही अपेक्षा करना है। हम यीशु में परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाओं की परिपूर्णता देखेंगे, जिससे हमारे जीवनों के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो सके। इस सत्य में स्थिर हो जाएं, कि यीशु में, परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएं सत्य हैं। वे हां हैं। परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं में अपने विश्वास को बोलें। परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं के लिए आपके हां और आमेन की घोषणा करें यह दिखाते हुए कि आप उन्हें पूरा होते हुए देखने की अपेक्षा करते हैं।

56. हम विश्वास करते हैं और इसलिए हम बोलते हैं

2 कुरिन्थियों 4:13-14

13 और इसलिए कि हममें वही विश्वास की आत्मा है, (जिसके विषय में लिखा है कि मैंने विश्वास किया, इसलिए मैंने कहा) इसलिए हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिए बोलते हैं।

14 क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वहीं हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा।

प्रेरित पतरस यहां पर भजनसंहिता 116:10 का हवाला देता है। वस्तुतः, पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अंतर्गत, प्रेरित पौलुस उस वचन के मात्र एक भाग को उद्‌धृत करता है, शायद एक विशिष्ट सत्य पर ज़ोर देने के लिए जो वह विश्वासियों तक पहुंचाना चाहता है। हम जो विश्वास करते हैं उसके अनुसार हम बोलते हैं। हमें अपने विश्वास को बोलना है। विश्वास बोलता है। 'विश्वास का वचन' पुराने और नए नियमों में बदला नहीं है। परमेश्वर में विश्वास का सार बदला नहीं है, चाहे वह पुरानी वाचा के लोगों के द्वारा था या नई वाचा के लोगों के द्वारा। विश्वास का सिद्धांत अब भी वही है और वह इस प्रकार है : मेरे पास विश्वास है और मैं विश्वास से बोलता हूं, या मात्र, मैं विश्वास बोलता हूं।

हम विश्वास करते हैं और इसलिए जो विश्वास हम करते हैं वही बोलते हैं। हमारे पास विश्वास है और हम अपना विश्वास बोलते हैं। सम्पूर्ण बाइबल में विश्वास का अंतर्निहित सिद्धांत है। जो विश्वास हम करते हैं उसे बोला जाना चाहिए। विश्वास को बोला जाना चाहिए। हम परमेश्वर पर और उसके वचन पर विश्वास करते हैं। फिर हमें उसके अनुसार बोलना है। परमेश्वर कौन है इसमें और उसने हमसे जो प्रतिज्ञा की है उसमें हम अपने विश्वास की घोषणा करते हैं।

हम यीशु में, क्रूस पर उसकी मृत्यु, उसके पुनरुत्थान, उसके स्वर्गारोहण और उसके महिमान्वित किए जाने के द्वारा उसने हमारे लिए जो हासिल किया है उसमें हम विश्वास करते हैं। इसलिए हम बोलते हैं और उस बात की घोषणा करते हैं।

अपने विश्वास को बोलें।

57. अनुग्रह प्रदान करने हेतु शब्दों का इस्तेमाल करें

इफिसियों 4:29

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो।

शब्द श्रोताओं को कुछ प्रदान करते हैं। भ्रष्ट (बुरे, सड़ाहट से भरे हुए, व्यर्थ) शब्द भ्रष्टता प्रदान करते हैं (ऐसी बातें जो कोई लाभ नहीं देती)। अच्छे शब्द या वचन बल, अनुग्रह और पूर्णता प्रदान करते हैं।

शब्द बर्तन हैं। शब्द वाहक होते हैं। शब्द ट्रांसमीटर अर्थात प्रेषक होते हैं। शब्द 'सेवक' हैं। वे प्राप्तकर्ताओं के लिए कुछ करते हैं। वे आशीष दे सकते हैं, निर्माण कर सकते हैं और बल प्रदान कर सकते हैं। या वे गिरा सकते हैं, कमजोर कर सकते हैं, चोट पहुंचा सकते हैं और नाश कर सकते हैं।

विश्वासियों के नाते हमें उन शब्दों को बोलना चाहिए जो विश्वास को ले चलते हैं और उसे प्रदान करते हैं। विश्वास भरे शब्द बोलें, ताकि हमें सुनने वालों में विश्वास पैदा कर सकें, प्रेरित कर सकें और विश्वास जगा सकें। हमें बुद्धिमानी के शब्द बोलना चाहिए। हमें ऐसे शब्द बोलने चाहिए जो सहायता, पोषण, मार्गदर्शन और आशीष प्रदान करें। अपने शब्दों का बुद्धिमानी के साथ उपयोग करें। उनका उपयोग लोगों को आशीष देने के लिए करें। दूसरों को आशीष देने के लिए विश्वास को बोलें।

58. आत्मा की तलवार इस्तेमाल करें

इफिसियों 6:17

और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

हम आत्मिक संघर्ष में जी रहे हैं, जैसे पौलुस इफिसियों 6:12 में बताता है। शत्रु पराजित हो चुका है, फिर भी जो समय बचा है उसमें वह अपनी छापामार रणनीतियों का उपयोग करने की कोशिश करता है। विश्वासियों के नाते परमेश्वर ने हमें आत्मिक हथियार दिए हैं जो विजयी जीवन जीने और सामर्थी रूप से सेवकाई करने हेतु पर्याप्त से अधिक हैं। इन अस्त्र-शस्त्रों का एक भाग है आत्म-रक्षा का एक सामर्थी साधन, आत्मा की तलवार। यह वही तलवार है जो हमें पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई है। इसे स्वयं सामर्थी पवित्र आत्मा के द्वारा बल और सहारा दिया गया है। परन्तु, हमें यह तलवार लेकर उसका इस्तेमाल करना है। आश्वासन यह है कि जब हम इस तलवार का इस्तेमाल करते हैं, तब पवित्र आत्मा स्वयं उसकी तलवार के कारण हमारी ओर से कार्य करता है।

हमारे बचाव या आत्म-रक्षा का हथियार या तलवार जो दुश्मन पर हमला करती है और उसे तहस-नहस कर देती है, वह है परमेश्वर का वचन। हम इस तलवार का इस्तेमाल कैसे करते हैं? हम शब्दों के साथ क्या करते हैं? हम शब्दों को बोलते हैं। हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर के वचन यीशु का स्पष्ट चित्र देखते हैं कि “उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है” (प्रकाशितवाक्य 19:13,15)। सो वह वचन की चोखी तलवार परमेश्वर का वचन है जो हम अपने मुंह से बोलते हैं।

हम परमेश्वर के वचन को बोलकर आत्मा की तलवार इस्तेमाल करते हैं। जितनी बार आप परमेश्वर के वचन की घोषणा करते हैं, उतनी बार परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास को बोलें, जो दुश्मन पर घाव कर देता है। जब दुश्मन आपके विरोध में आता है, तब चाहे आपके मन में गलत विचार आते हों, या आपके जीवन के किसी क्षेत्र में हस्तक्षेप हो, तो उसके विरोध में आत्मा की तलवार का इस्तेमाल करें। वह सामर्थी पवित्र आत्मा की समक्षता में खड़े नहीं रह सकता। परमेश्वर का वचन बोलें। अपने विश्वास को बोलें।

59. भविष्यद्वाणी के शब्दों के साथ अच्छा युद्ध लड़ें

1 तीमुथियुस 1:18

हे पुत्र, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे।

भविष्यद्वाणी के वचन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए जाते हैं। भविष्यद्वाणी का वरदान और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई आज भी मसीह की देह में सचमुच कार्यरत है। जब हमें भविष्यद्वाणियां दी जाती हैं, तब हमें समझना है कि ये वचन दिए गए हैं इसके कारणों में से एक यह है कि ये वचन या शब्द हमें आत्मिक युद्ध में सामर्थ प्रदान करने हेतु दिए गए हैं। हमें इन भविष्यद्वाणियों का उपयोग दुश्मनों के विरोध में अच्छा युद्ध लड़ने के लिए करना है।

शत्रु शैतान और उसकी दुष्टात्माएं, चोरी करने, घात करने, और नाश करने आती हैं। वे गड़बड़ी करने या ध्यान बंटाने आती हैं, और किसी रीति से हमें परमेश्वर के उद्देश्यों से दूर कर देना चाहती हैं। हमारे जीवनों पर कही गई भविष्यद्वाणियां जो परमेश्वर के उद्देश्य को, परमेश्वर की प्रतिज्ञा और हमारे जीवनों में परमेश्वर की क्षमता को घोषित करती हैं, हम थाम लेते हैं। इन भविष्यद्वाणियों की सहायता से हम अच्छी लड़ाई लड़ते हैं। हमें भविष्यद्वाणी के इन वचनों का उपयोग उस आत्मिक संघर्ष में जिसमें हम लगे हैं, दुश्मन के विरोध में हथियारों के रूप में करना है। याद रखें, वचनों या शब्दों को बोलना ज़रूरी है। उन भविष्यद्वाणी के वचनों को बोलें जिन्हें आपके जीवन पर बोला गया था (अर्थात जिन्हें आपने परखा है और जानें कि आत्मा की ओर से है)। परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा आप पर जो घोषित किया है, वही घोषित करें। परमेश्वर ने कहा है कि वे वचन दुश्मन के विरोध में आपके हथियारों का भाग हैं। उन भविष्यद्वाणी के शब्दों को बोलें। अपने विश्वास को बोलें।

60. मसीह में प्रत्येक अच्छी बात को कबूल करें

फिलेमोन 1:6

कि तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहचान में मसीह के लिए प्रभावशाली हो।

पौलुस द्वारा फिलेमोन को लिखी गई पत्री का संदर्भ दिलचस्प है। पौलुस भागे हुए गुलाम ओनेसिमस को वापस उसके स्वामी फिलेमोन के पास भेजने के लिए लिख रहा है। ओनेसिमस अब पौलुस की सेवकाई में विश्वासी बन गया है, और फिलेमोन अब उसके पूर्व गुलाम का प्रभु में भाई है। पौलुस अपनी छोटी पत्री का आरम्भ करते हुए, एक महत्वपूर्ण सत्य की ओर संकेत करता है कि हमारे विश्वास की सहभागिता तब प्रभावी (फलवंत, सामर्थी, बल प्राप्त) हो जाती है जब हम प्रत्येक भली बात को (सारा धन और आशीषें) कबूल करते हैं (पूर्ण रूप से पहचानते हैं) जो मसीह में हमारी है।

परमेश्वर ने हमें मसीह में लाने के द्वारा हममें जिन अच्छी बातों को रखा है उन्हें हमें बोलना सीखना है, बुलाना है, कबूल करना है, और पहचानना है। हमें यह पहचानना है और कबूल करना है कि हम मसीह में कौन हैं। यह अपने लिए और दूसरों के लिए भी करें। मसीह ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसके आसपास हम सहभागिता करते हैं। यह हमारी सहभागिता को सामर्थी बनाता है। निर्बलता के बारे में, हम कितने दीन और दुखी हैं, कितने पापी और अधम हैं यह बोलने के बजाए, हम उन अच्छी बातों को कबूल करें जो हममें हैं क्योंकि हम मसीह में हैं।

टिप्पणी : हम यहां पर यह नहीं कह रहे हैं कि पाप को सम्बोधित न किया जाए, या यदि कुछ गलत है, तो हम उसे नज़रअंदाज करें और उसमें सुधार न लाएं। हमें गलतियों, दोष, और गलत कामों का सामना करना है और जहां सुधार की आवश्यकता है वहां सुधार लाना है। परन्तु यह जानकार कि सुधार लाने और प्राप्त करने के बाद, हम ऐसा करते हैं, हम अतीत को छोड़ देते हैं और अच्छी बातों को देखते हैं जो मसीह में हममें से प्रत्येक में हैं।

61. उसका वचन आपकी दुनिया को संभाल सकता है और क्रमबद्ध कर सकता है

इब्रानियों 1:3

वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा,

जैसा कि हमने पुराने नियम में पहले ही कई उदाहरणों में देखा, यहां पर इब्रानियों में पवित्र शास्त्र हमें फिर सिखाता है कि सारी बातें, समस्त विश्व उसके वचन की सामर्थ से संभाला हुआ, नियमित किया गया है।

उसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने यहां पृथ्वी पर हमारे जीवनों के लिए उसका वचन दिया है। अवश्य ही उसका वह वचन जो हमें दिया गया है, हमें संभाल सकता है, सहारा दे सकता है, क्रम में रख सकता है और अपनी 'छोटी-छोटी दुनिया को सुव्यवस्थित' और कार्य करते हुए रखता है।

तब कुंजी यह है कि हम उसके वचन को लें जो उसने हमें पवित्र शास्त्र में, लिखित रूप में दिया है और उसे अपनी दुनिया में काम लाते हैं। जैसा कि हमने सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में देखा है, यह करने का एक तरीका है, उसके वचन पर विश्वास करना और हमारी दुनिया में या संसार में उसका वचन बोलना।

यह जानें कि परमेश्वर के वचन में आपके संसार को संभालने और क्रमबद्ध करने के लिए पर्याप्त से अधिक सामर्थ है। ऐसा समय हो सकता है जब ऐसा प्रतीत होता है कि सबकुछ गड़बड़ हो रहा है। सारी बातें नियंत्रण से बाहर होती प्रतीत होती हैं या हाथ से निकल जाती हैं। परमेश्वर के वचन की सामर्थ में भरोसा रखें। आपके जीवन पर, आपके वर्तमान पर और आपके भविष्य पर, परिस्थितियों पर और हालातों पर उसका वचन बोलें। उसकी प्रतिज्ञाओं को बोलें। घोषणा करें कि आपकी दुनिया में जो कुछ है वह सब परमेश्वर के अधीन है और उसके वचन के अनुरूप होगा। आपके विश्वास को बोलें। आप आपके जीवन में परमेश्वर के वचन की सामर्थ को कार्य करते हुए देखेंगे।

62. यीशु हमारा महायाजक है जिसे हम अंगीकार करते हैं

इब्रानियों 3:1

इसलिए हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो,

हमने पिछले किसी अध्याय में यह स्पष्ट किया कि 'अंगीकार' (ग्रीक homologia) का अर्थ है 'वही बात बोलना' या 'शब्दों में सहमत होना'। इस नए नियम के संदर्भ में अंगीकार वही है जिसे हम परमेश्वर के और उसके वचन के साथ सहमत होकर बोलते हैं। जब हम वही बात बोलते हैं जो परमेश्वर ने कही है, या जब हम अपने शब्दों से परमेश्वर के साथ सहमत होते हैं, तब हम अपना अंगीकार करते हैं।

इब्रानियों का लेखक यीशु की ओर संकेत करता है और कहता है कि वह हमारे अंगीकार का प्रेरित (अग्रदूत, आगे जाने वाला) और महायाजक (जो प्रतिनिधित्व करता है) है। यीशु उस विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है जिसे हम स्वर्ग में कबूल या अंगीकार करते हैं। इसका अर्थ यह है कि जब हम परमेश्वर के वचन के अनुसार बोलते हैं और परमेश्वर ने जो कुछ कहा है उससे सहमत होकर बोलते हैं, तो यीशु उसे हमारी ओर से पिता के सामने अंगीकार करता है और उसका प्रतिनिधित्व करता है।

स्मरण रखें कि यीशु वह महायाजक है जिसे हम अंगीकार करते हैं। उसके वचन से सहमत होकर बोलें। अपने विश्वास को बोलें।

63. अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहंे

इब्रानियों 4:14

इसलिए जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गांेें से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओं, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे।

इब्रानियों 10:23

और अपने आशा के अंगिकार को दृढ़ता से थामे रहे; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है।

इस तथ्य के समक्ष कि यीशु हमारा महान महायाजक है, हमें अपने अंगीकार को दृढ़ता के साथ थामे रहना है (बल के उपयोग से पकड़े रहना है, मज़बूती से चिपके रहना है, फिसलने नहीं देना है) - जिसे हम उसके वचन के साथ सहमत होकर घोषित कर रहे हैं। इसके आगे, हम जानते हैं कि जिसने प्रतिज्ञा की है वह विश्वासयोग्य है। हमें उसकी प्रतिज्ञाओं का पालन करने से नहीं चूकना है। इसलिए हम बिना झिझक के अपने विश्वास के अंगीकार को दृढ़ता के साथ थामे रहें।

जब ऐसी बातें होती हैं जो परमेश्‍वर और उसके वचन के विषय में हमारे विश्वास को चुनौती देती हैं, तब हमें बिना झिझक के अपने अंगीकार को थामे रहना है। अपने विश्वास को बोलते रहें, परमेश्वर और उसके वचन के साथ सहमति बनाए रखें।

जब परमेश्वर के वचन को पूरा होते हुए देखने में विलंब होता है, तब हमें बिना झिझक के अपने अंगीकार को थामे रहना है। अपने विश्वास को बोलते रहें, परमेश्वर और उसके वचन के साथ सहमति बनाए रखें।

जब बातें वास्तव में बिगड़ती हुई प्रतीत होती हैं, तब हमें दृढ़ खड़े रहना है और बिना झिझक के अपने अंगीकार को थामे रहना है। हमारे पास स्वर्ग में एक महायाजक है, जो हमारे अंगीकार का प्रतिनिधित्व करता है और जो प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है। अपने विश्वास को बोलते रहें और परमेश्वर के साथ तथा उसके वचन के साथ सहमति बनाए रखें।

64. उसके वचनों ने जगत की रचना की

इब्रानियों 11:3

विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

विश्वास के द्वारा हम जानते हैं कि जगत या सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा की गई (सृजी गई, बनाई गई, रची गई, निर्माण किया गया, आकार दिया गया)। दृश्य, प्राकृतिक जगत, अदृश्य आत्मिक संसार से निकल आया। परमेश्वर ने सारी वस्तुओं को अपने वचन से बनाया और जो अस्तित्व में नहीं था उसे उसने अस्तित्व में लाया। प्राकृतिक, दृश्य संसार में जो कुछ है वह परमेश्वर के और परमेश्वर के वचन के अधीन है।

इसलिए हम बातों की ओर इस तरह से देखें। हममें से प्रत्येक के पास हमारी अपनी दुनिया है जिसमें हम रहते हैं। 'हमारी दुनिया या संसार' से हम ज़िम्मेदारी और प्रभाव के हमारे अपने क्षेत्रों का उल्लेख करते हैं - हमारे घर, परिवार, करियर, कारोबार, सेवकाई के क्षेत्र, आदि। ऐसी कुछ बातें हैं जो हमारी दुनिया में अस्तित्व में नहीं हैं। परमेश्वर अपने वचन की सामर्थ से हमारी दुनिया में उसे अस्तित्व में ला सकता है। उसका वचन हमारी दुनिया या संसार को निर्माण कर सकता है, रच सकता है और आकार दे सकता है। आज जब आप आपके संसार की ओर देखते हैं, तो शायद वह "बैडोल और शून्य", अंधकार से भरा और सुनसान लगता है। शायद आप कई बातों की अपेक्षा रखते हैं और उन्हें परमेश्वर के वचन में प्रतिज्ञा किया हुआ पाते हैं जो आपकी दुनिया में अस्तित्व में नहीं हैं। क्या आप विश्वास करते हैं कि आपकी दुनिया में निर्माण करने की सामर्थ परमेश्वर के वचन को है? क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का वचन उन बातों को अस्तित्व में ला सकता है जो आपकी दुनिया में नहीं हैं? परमेश्वर के वचन को थाम लें। उसका वचन सत्य है। उसका जीवन जीवित और सामर्थयुक्त है। उसके वचन पर विश्वास करें। अपनी दुनिया पर उसके वचन को बोलें। उसका वचन आपकी दुनिया का निर्माण करने पाए, उसे रचने पाए, और आकार देने पाए। अपने विश्वास को बोलें।

65. परमेश्वर ने कहा है, इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं

इब्रानियों 13:5-6

5 तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है,
" मै तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागंगा।"
6 इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मै न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

इब्रानियों के लेखक के पास एक सरल मुलाधार है कि हमें कैसे बोलना चाहिए: क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं। हम बेधड़क होकर परमेश्वर ने स्वयं जो कहा है उसकी पुष्टि करते हैं और उसके साथ सहमत होकर बोलते हैं।

परमेश्वर ने कहा है, "मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगा और न त्यागूंगा"। इसलिए मैं बेधड़क होकर कहता हूं, "प्रभु मेरा सहायक है और मैं न डरूंगा"।

परमेश्वर ने कहा है, "उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए"। इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, "उसने हमारी बीमारियों को उठा लिया और हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और उसके मार खाने से हम चंगे हो गए"।

परमेश्वर ने कहा है कि "तुम उस वृक्ष के समान होंगे जो नदी के किनारे लगाया गया है"। इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, "मैं अपनी ऋतु में अपना फल लाता हूं, मेरे पत्ते मुरझाएंगे नहीं और जो कुछ मैं करूंगा वह सफल होगा"।

हम इसमें यह जोड़ सकते हैं।

हर परिस्थिति में, हर समय, परमेश्वर ने जो कहा है उसे हियाव से या बेधड़क कहने की आदत बना लें। अपने विश्वास को बेधड़क बोलें, क्योंकि आप जानते हैं कि परमेश्वर ने कहा है और इसलिए आप उसके साथ सहमत होकर बोल सकते हैं। वह आपको कभी नीचा नहीं दिखाएगा।

केवल यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत हों तो ही वे एक संग चल सकते हैं (आमोस 3:3)। हम परमेश्वर के साथ चल सकते हैं, केवल यदि हम उसके साथ सहमत हों। हम परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होकर, उसके साथ सहमत होते हैं। परमेश्वर ने कहा है, और इसलिए हम जानबूझकर और बेधड़क होकर उसके साथ सहमत होकर बोलते हैं।

66. अपनी जीभ पर काबू रखें, अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर काबू रखें

याकूब 1:26

यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है।

याकूब 3:1-6

1 हे मेरे भाइयो, तुममें से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।

2 इसलिए कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं; जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है, और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है।

सिद्ध मनुष्य, अर्थात वे जो पूर्णतया सिद्ध और परिपक्व हैं, आत्मिक रीति से कहा जाए तो वे लोग हैं जो अपनी जीभ पर नियंत्रण करने, लगाम लगाने में सक्षम हैं। जब हम अपने शब्दों पर ध्यान देते हैं और अपनी जीभ को वश में रखते हैं, तब हम हमारे समस्त शरीर पर नियंत्रण या स्वामित्व रख पाएंगे या "अपने आप पर हर तरह से काबू रख पाएंगे" (पैशन अनुवाद)।

यह इस बात के महत्व को बताता है कि हम अपनी जीभ पर नियंत्रण कर पाने में, या जो हम बोलते हैं उस पर काबू रखने में सक्षम हैं। अपने शब्दों पर काबू रखने के सर्वोत्तम अनुशासनों में से एक है यह सुनिश्चित करना कि हम हमेशा वही बोलें जिसे परमेश्वर पसंद करेगा। वही बोलें जो परमेश्वर की नज़रों में प्रसन्नतादायक है। वही बोलें जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती है। वही बोलें जो उसके वचन के साथ सहमत हो। विश्वास को बोलें। यदि हम ऐसा कर पाने में सक्षम हैं, तो हम हर तरह से अपने आप पर काबू रख पाएंगे।

अपनी जीभ को शिक्षित करने का उत्तम तरीका यह है कि जानबूझकर वही कहने का अभ्यास करें जो परमेश्वर का वचन कहता है। हम पवित्र शास्त्र में कई आत्मिक बातों को देखते हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि हम परमेश्वर को स्तुति और आराधना का बलिदान चढ़ाते हैं। हम जानते हैं कि प्रार्थना कैसे करना है और विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं में कैसे व्यस्त होना है। हम जानते हैं कि परमेश्वर के वचन को कैसे पढ़ना है, परमेश्वर के वचन का कैसे अध्ययन करना है या उस पर कैसे मनन करना है। उसी तरह, हमारे आत्मिक अनुशासन के भाग के रूप में हम वचन बोलने के लिए समय निकाल सकते हैं। इस पुस्तक के आरम्भ में हमने परमेश्वर के वचन से घोषणाओं के, व्यक्तिगत तौर पर लिखित रूप में उदाहरण दिए हैं जिसमें जीवन के सभी क्षेत्रों को सम्मिलित किया है। आप इस प्रारूप का या अन्य उदाहरणों का उपयोग कर आपके अपने जीवन पर परमेश्वर के वचन की घोषणा कर सकते हैं। इसे अर्थहीन प्रथा के रूप में न करें या किसी जांच सूची के रूप में इस्तेमाल न करें। सत्य से प्रेरित होकर उसे करें, क्योंकि आपके पास प्रकाशन है या आपके विश्वास को बोलने के महत्व की समझ है। जब आप इस प्रकार अपनी जीभ को शिक्षा देंगे, तब आपके शब्दों के साथ सतर्क रहना आपके लिए सामान्य बात होगी, और आप यह सुनिश्चित कर पाएंगे कि आप उसके वचन के साथ सहमत होकर बोल रहे हैं। आपके विश्वास को बोलना आपके लिए सामान्य बात होगी।

67. आपके वचन आपके जीवन का मार्गदर्शन करते है, शासन करते हैं और आशीष देते हैं

याकूब 3:3-6

3 जब हम अपने वश में करने के लिए घोड़ों के मुंह में लगाम लगाते हैं, तो हम उनकी सारी देह को भी फेर सकते हैं।
4 देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं।
5 वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी बड़ी डीगें मारती है। देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है।
6 जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।

याकूब पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में लिखते हुए, जिन शब्दों को हम बोलते हैं उनकी सामर्थ और प्रभाव को प्रगट करने हेतु प्रतिमाओं का उपयोग करता है। जिन उपमाओं का वह उपयोग करता है उन पर विचार करें: घोड़ों के मुंह की लगाम, जहाज की पतवार, जंगल की आग। ताकतवर घोडे के मुंह में लगाम कसकर घुड़सवार उस पर काबू करता है और उसे इच्छित दिशा में ले जाता है। उसी तरह, हवाओं और तूफानों के मध्य भी, कप्तान द्वारा एक जहाज को छोटी सी पतवार के सहारे मार्गदर्शन किया जाता है। छोटी सी आग बड़े जंगल को भस्म कर देती है। बात यह है कि हमारे शब्द छोटे, निर्बल और महत्वहीन दिखाई दे सकते हैं। फिर पवित्र आत्मा चाहता है कि हम इस बात को जानें कि जिन शब्दों को हम बोलते हैं वे वास्तव में सामर्थी हैं, वे हमारे जीवन के पूरे क्रम को मार्गदर्शन कर सकते हैं, दिशा प्रदान कर सकते हैं और शासित कर सकते हैं।

वचन 6 में, याकूब बुरी जीभ, दुष्ट जीभ के बारे में लिखता है। बुरी जीभ “आग से जलती” रहती है या नरक से आने वाली दुष्टता से प्रेरित या प्रज्वलित होती है। यहां प्रस्तुत किए गए बुरी जीभ के प्रभाव पर विचार करें। बुरी जीभ व्यक्ति के सम्पूर्ण शरीर को या सम्पूर्ण अस्तित्व को (आत्मा, प्राण और शरीर) दूषित करती है। वह उस व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन क्रम पर असर डालती है, उसे प्रभावित करती है। बुरे शब्द हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को और हमारे जीवनों के पूरे क्रम को दूषित करते हैं और नाश कर देते हैं। अब हमारे पास अच्छी जीभ है तो क्या। ऐसी जीभ जो परमेश्वर के वचन की आग से “जलती रहती” है (परमेश्वर का वचन आग के समान है यिर्मयाह 23:29)। अच्छी जीभ जो परमेश्वर के वचन से प्रेरित होकर बोलती है और उसके वचन से पंक्तिबद्ध होती है। ऐसे वचन हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आशीष प्रदान करते हैं और हमारे जीवनों के पूरे क्रम को आशीष और उन्नति प्रदान करते हैं।

हमारे शब्द या वचन हमारे जीवनों के पूरे क्रम को मार्गदर्शन करते हैं, शासित करते हैं और दिशा प्रदान करते हैं। हमारे शब्द पूरे व्यक्तित्व को और हमारे जीवनों को पूरे क्रम को आशीष और उन्नति प्रदान करते हैं। वचन बोलें। विश्वास के वचन बोलें। आपके द्वारा बोले जाने वाले वचन आपके जीवन को आशीषित करने पाएं और उन्नति प्रदान करें।

68. लगातार विश्वास की भाषा बोलें

याकूब 3:7-12

7 क्योंकि हर प्रकार के वन-पशु, पक्षी, और रेंगनेवाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं।

8 परन्तु जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है।

9 इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं, श्राप देते हैं।

10 एक ही मुंह से धन्यवाद और श्राप दोनों निकलते हैं।

11 हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

12 क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलता है? हे मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

पवित्र आत्मा के द्वारा याकूब हमारे शब्दों में निरंतर अच्छा, सही, पवित्र और शुद्ध बने रहने के महत्व को सम्बोधित करता है। हमें हर समय अपने शब्दों पर नियंत्रण रखना चाहिए ताकि हम हमेशा जीवन और आशीष की बात बोलें। हमें दुचित्ते नहीं होना है कि कभी जीवन और आशीष की बात कहें, और उसके बाद मृत्यु और शाप की बात करें। हमेशा, हर समय, हर परिस्थिति में जीवन और आशीष की बात बोलें। उसी तरह, हमें कभी-कभार विश्वास को बोलकर, अन्य समयों में डर, संदेह और अविश्वास को नहीं बोलना चाहिए।

हम लगातार, हर समय, और हमेशा विश्वास को बोलते हैं। यदि हम लगातार अपने हृदय और मनों को परमेश्वर के वचन से भर देते हैं, तो हम ऐसा कर सकते हैं। यदि हम निरंतर अपने आपको परमेश्वर के वचनों से भर देते हैं, तो हम लगातार विश्वास के वचनों को बोलेंगे।

अपनी जीभ पर लगाम लगाएं। अपने आप को हर समय जीवन, आशीष और विश्वास बोलने के लिए प्रशिक्षित करें। लगातार अपने विश्वास को बोलें।

69. शैतान का सामना करें

याकूब 4:7

इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

हमें परमेश्वर के अधीन होना है और उसके बाद शैतान का सामना करना है। सामना करना या प्रतिकार करना शैतान हमारे सामने जो प्रस्तुत करता है उसके विरोध में खड़े होना और उसका विरोध करना है। जैसा कि हम नए नियम में देखते हैं, हम परमेश्वर का वचन बोलकर, यह कहकर कि "लिखा है", शैतान का सामना करते हैं। हम आत्मा की तलवार का इस्तेमाल करते हैं, और यीशु मसीह में जो अधिकार हमारे पास है उस अधिकार से आज्ञा के शब्दों को बोलते हैं। जबकि हम यह सोचते हैं कि परमेश्वर का वचन महत्वपूर्ण है, शैतान जो करने की कोशिश कर रहा है उसके प्रतिकार और आक्रामक विरोध के भाग के रूप में परमेश्वर का वचन कहना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

जब दुश्मन गलत और बुरे विचारों, कल्पनाओं, विवादों को और तर्क को आपके मन में डालता है, तब तुरंत उस बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है यह आपके मन के सामने लाएं। वैसे ही यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि शैतान द्वारा प्रस्तुत किए गए बुरे विचार के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है। हम कहते हैं 'लिखा है'।

ऐसा करते समय दृढ़ और आक्रामक हों। अपने विश्वास में दृढ़ होकर शैतान का सामना करें। अपने विश्वास को बोलें। जितनी बार वह वापस पलटकर आपके पास आता है उतनी बार अपने विश्वास को बोलते जाएं। शैतान जानने पाए कि आप उसे अपने जीवन में कदम रखने के लिए जगह नहीं देने वाले।

70. आशीष के वचनों को जारी करें

1 पतरस 3:8-12

8 निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो।
9 बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो; क्योंकि तुम
आशीष के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो।
10 क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और
अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।
11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूढ़े, और उसके यत्न में रहे।
12 क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती है, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु
बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।

आशीष लौटाने के तरीकों में से एक है, आशीष के वचन बोलना, तब भी जब आपको शाप दिया जाता है या आपके साथ अन्याय होता है। यीशु ने सिखाया, “जो तुम्हें शाप देते हैं उन्हें आशीष दो” (मत्ती 5:44)। इसलिए हम जानबूझकर उनके लिए और उन पर आशीष के वचन बोलते हैं, भले ही हमारे साथ अन्याय हुआ हो। यह चुनाव है जो हमें करना है। अपनी जीभ बंद रखने का चुनाव करें और उसे बुरे शब्द बोलने की अनुमति न दें। रुक जाएं। बल्कि आशीष के वचन बोलने का जानबूझकर चुनाव करें। परमेश्वर के सम्मुख जाएं और कहें ‘पिता, यीशु के नाम में, मैं फलां व्यक्ति पर आशीष बोलता हूं। उन्होंने भले ही मुझे चोट पहुंचाई होगी, मैं यीशु के नाम में उनके जीवनों पर आशीष बोलता हूं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनके साथ अच्छा ही हो। वे फलवंत और आशीषित हों।’

उन पर गुप्त रूप से आशीष जारी करने के बाद, निंदा न करें और दूसरों से यह न कहें कि उन्होंने आपके साथ कितनी नीचता की और उन्होंने आपके साथ कैसे अन्याय किया है या आपको चोट पहुंचाई है। अपनी जीभ को बुराई करने से रोको। आशीष जारी करते समय आपने आशीष को विरासत में पाने का या आशीष ग्रहण करने का स्थान प्राप्त किया है। प्रभु की आंखें आप पर लगी रहती हैं। वह सुनिश्चित करेगा कि आपको उत्तम जीवन प्राप्त हो और आप अच्छे दिनों को देख पाएं। हमेशा आशीष के वचनों को जारी करें। विश्वास से आशीष के वचन बोलें।

71. वचन विजय के लिए आपके विश्वास को जारी करते हैं

1 यूहन्ना 5:1,4

1 जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, और जो कोई उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है।

2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं!

3 और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।

4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हमने परमेश्वर से जन्म पाया है। हममें परमेश्वर का जीवन और स्वभाव है। हम उसके बेटे और बेटियां हैं। और क्योंकि हमने परमेश्वर से जन्म लिया है, इसलिए हम जयवन्त हैं। हम उन सारी बातों से भरपूर हैं जो संसार, शरीर और शैतान पर विजय के साथ जीने के लिए हमें आवश्यक है। और यह वचन स्पष्ट है कि परमेश्वर में अपने विश्वास के उपयोग के द्वारा हमने विजय पाई है। यदि हम जयवन्त विजयी जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें विश्वास में चलना है। हम अपनी स्वयं की इच्छा की सामर्थ से और अपनी बुद्धि की सामर्थ से विजयी और जयवन्त के रूप में जीवन नहीं बिताते। परमेश्वर ने कहा कि जिस तरह से हम संसार पर जय पाते हैं वह है विश्वास के द्वारा।

संपूर्ण पवित्र शास्त्र में देखे जाने वाले विश्वास के मुख्य सिद्धांतों में, एक यह है कि विश्वास बोलता है, जिसे हमने इस पुस्तक में अधोरेखित किया है। विश्वास शब्दों के द्वारा व्यक्त होता है। हमें विश्वास के शब्द या वचन बोलना है, ऐसे शब्द जो परमेश्वर में, उसके वचन में और जो कुछ यीशु मसीह ने हमारे लिए हासिल किया है उसमें हमारे विश्वास को व्यक्त करते हैं। ऐसा करना, उन मार्गों में से एक है जिनके द्वारा हम संसार पर, शरीर पर और शैतान पर जय पाते हैं और विजय के साथ जीते हैं।

आपके विश्वास को बोलें। विजय के साथ और जयवन्त के रूप में जीने की वह एक कुंजी है।

72. हम परमेश्वर के हैं, इसलिए हम जैसे परमेश्वर की ओर से बोलते हैं

1 यूहन्ना 4:4-6

4 हे बालको, तुम परमेश्वर के हो; और तुमने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुममें है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है।

5 वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं, और संसार उनकी सुनता है।

6 हम परमेश्वर के हैं; जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है। जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं।

प्रेरित यूहन्ना दो प्रकार के लोगों की तुलना कर रहा है। जो "संसार के" हैं और जो "परमेश्वर के" हैं। वह बताता है कि जो संसार के हैं, वे इस बात से पहचाने जाते हैं कि, "वे संसार की बातें बोलते हैं"। वे संसार की भाषा, संसारिक बातें बोलते हैं और संसार की आत्मा को प्रगट करते हैं। इसलिए संसार उन पर ध्यान देता है। परन्तु, हम जो "परमेश्वर के" हैं, अर्थ यह है कि हम "परमेश्वर के" लोगों के जैसे बोलते हैं और जो परमेश्वर को जानते हैं वे हमारे द्वारा कही जाने वाली बातों को सुनते हैं, समझते हैं, और उन पर ध्यान देते हैं।

हम "परमेश्वर के" हैं, इसलिए हम "परमेश्वर के" लोगों के समान बोलते हैं। हम भिन्न भाषा बोलते हैं। हम परमेश्वर के वचन की भाषा बोलते हैं। हम परमेश्वर के वचन के सत्य के अनुरूप बोलते हैं।

स्मरण रखें कि आप "परमेश्वर के" हैं। जब आप उन लोगों के आपपास रहते हैं जो "संसार के" हैं, तब आपको "संसार के" सदृश्य होने का और "संसार के" लोगों के समान बोलने का दबाव महसूस होता है। लेकिन आपको इस संसार के दबाव के अधीन नहीं होना है। आप परमेश्वर के हैं। आप जयवन्त हैं। हम भ्रम की आत्मा, इस युग की आत्मा, और उस आत्मा पर जय पाते हैं जो यीशु के विरोध में है। जो तुममें है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है। आपको इस संसार की भाषा से सहमत होने की या "संसार के" लोगों के समान बोलने की ज़रूरत नहीं है। आप अपने शब्दों को चुनते हैं। आप "परमेश्वर के" लोगों के समान बोलते हैं। आप परमेश्वर के वचन के अनुरूप बोलते हैं। आपके विश्वास को बोलें।

73. मेम्ने के लहू के द्वारा और अपनी गवाही के वचन के द्वारा जय पाते हैं

प्रकाशितवाक्य 12:11

और वे मेम्ने के लहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।

शैतान हमारा शत्रु है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं पराजित हो चुकी हैं और उन्हें निर्बल कर दिया गया है। अब उनके पास उनकी निर्बल दशा में झूठ, धोखा, दोषारोपण और डराने के द्वारा दिमागी खेल खेलने की योग्यता है। इसीलिए शैतान को भाइयों पर दोष लगाने वाला कहा जाता है, उसके आरोप हमारे मनों पर लगातार बोझिल होते हैं, इस प्रकार परमेश्वर के सामने वह हमारे मनों में हम पर दोष लगाता है। वह हमें परमेश्वर के सामने अयोग्य, दोषी और बिना प्रेम किया हुआ महसूस कराने की कोशिश कराता है।

प्रकाशितवाक्य 12 में, यूहन्ना एक सामर्थी कुंजी ढूंढ निकालता है कि हम विश्वासी उसके विरोध तथा उसके आरापों पर कैसे जय पाते हैं। हम मेम्ने के लहू से और हमारी गवाही के वचन से शैतान पर जय पाते हैं। यीशु के लहू ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उस पर हम विश्वास करते हैं और हमारी गवाही बोलते हैं। और घोषित करते हैं, अर्थात हम घोषित करते हैं कि यीशु के लहू ने व्यक्तिगत तौर पर हमारे लिए क्या किया है। हमें घोषणा करना, हमें अपनी गवाही का वचन बोलना है कि यीशु के लहू ने हमारे लिए क्या किया है। हमें अपने मुंह से यह घोषित करते हुए बोलना है कि यीशु ने उसके क्रूस के द्वारा हमारे लिए क्या पूरा किया है, और यह कि हम उसके द्वारा हासिल किए गए काम में विश्वास करते हैं। मेम्ने के लहू ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसकी हमारी घोषणा विरोधी को कुचल देती है। मसीह ने क्रूस के द्वारा आपके लिए जो कुछ किया है उसमें अपने विश्वास की घोषणा करें। अपने विश्वास को बोलें।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे। आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 0057213809
IFSC Code: CITI0000004
Bank: Citibank N.A., No. 5, M.G. Road, Bengaluru, Karnataka 560001

कृपया ध्यान दें: ऑल पीपल्स चर्च के पास एफसीआरए परमिट नहीं है और इस कारण केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार किए जा सकते हैं। अपना दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें **apcwo.org/give** *उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।*

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशन

A Church in Revival*
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks*
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change*
Code of Honor
Divine Favor*
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling*
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God*
God Is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife*
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses-Don't Take Them
Open Heavens*
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment*
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power*
The Wonderful Benefits of speaking in
Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different*
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पीडीएफ संस्करण विनामूल्य डाऊनलोड के लिए हमारी कलीसिया के वेबसाई apcwo**.org/publications** पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की आपकी विनामूल्य मुद्रित प्रति प्राप्त करने हेतु, **bookrequest@apcwo.org** पर ई-मेल भेजें।

केवल पी डी एफ के रूप में उपलब्ध

वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **(apcwo.org/sermons)** को भेंट दें।

सप्ताहांत स्कूल में भाग लें

बैंगलोर में होने वाले सप्ताहांत स्कूल, जीवन और सेवकाई के विशिष्ट क्षेत्रों में विश्वासियों को प्रशिक्षित और सुसज्जित करने हेतु तैयार किए गए हैं। इन्हें सुविधा के अनुसार शनिवार सुबह 9 से शाम 6 बजे तक संचालित किया जाता है। सप्ताहांत स्कूल सभी कलीसियाओं के और सभी डिनॉमिनेशन के उन सभी विश्वासियों के लिए हैं, जो प्रशिक्षण पाने और सेवकाई के लिए तैयार होने में रूचि रखते हैं। नीचे सप्ताहांत स्कूलों की सूची दी गई है जो इस समय आयोजित किए जा रहे हैं।

भविष्यद्वक्ता की सेवकाई का सप्ताहांत स्कूल

चंगाई और छुटकारे का सप्ताहांत स्कूल

आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण पर सप्ताहांत स्कूल

प्रार्थना और मध्यस्थी का सप्ताहांत स्कूल

आंतरिक स्वास्थ्य का सप्ताहांत स्कूल

जीवन-शैली सुसमाचार प्रचार का सप्ताहांत स्कूल

परमेश्वर कार्य कर रहा है पर सप्ताहांत स्कूल

शहरी मिशन और कलीसिया रोपण पर सप्ताहांत स्कूल

मसीही पक्ष समर्थन ¼ Christian Apologetics½ पर सप्ताहांत स्कूल

कृपया वर्तमान समय-सारणी और ऑन लाईन पंजीयन हेतु इस वेबसाईट को भेंट दें : **apcwo.org/weekendschool**

मसीही अगुवों की सभा का आयोजन करें

ऑल पीपल्स चर्च पासबानों, स्थानीय कलीसियाई अगुवों, मसीही संस्थाओं के अगुवों और मसीही सेवकाई में सेवारत अन्य लोगों के लिए आत्मा से अभिषिक्त सुसज्जीकरण एवं सहायता प्रदान करते हैं। अभिषिक्त शिक्षा, आत्मा की अगुवाई से प्रेरित सेवकाई एवं इम्पार्टेशन के अलावा, हमारी टीमें सहभागियों के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप और चर्चा करती हैं। प्रत्येक मसीही अगुवों की सभा खास तौर पर दो से तीन दिनों की होती है जो विशिष्ट विषयों पर केंद्रित होती हैं। सहभाग लेने वाले वहां से नवीनीकरण प्राप्त कर, सामर्थ पाकर एवं अधिक प्रभाव तथा प्रभावकारिता के लिए सुसज्जित होकर वहां से जाएंगे। मसीही अगुवों की सभाएं विशिष्ट तौर पर स्थानीय कलीसिया, मसीही सेवकाई, मिशन संस्था या कलीसियाओं के डिनॉमिनेशनल मुख्यालयों और पासबानों द्वारा अपने क्षेत्रों में या अपने नेटवर्क या डिनॉमिनेशन के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं। आयोजक संस्था सभा का खर्च तथा सहभागियों को निमंत्रित करने का खर्च वहन करेगी। ऑल पीपल्स चर्च अपनी सेवकाई टीम को स्थानीय अगुवों की महासभा में भाग लेने वाले सहभागियों की सेवा हेतु भेजेगा।

कुछ विषय जिनके सम्बंध में हमारी टीमें सामान्य रूप से सेवकाई प्रदान करती हैं:

बेदारी, आत्म-जागृति, और परमेश्वर के कार्य

उपस्थिति और महिमा

राज्य के निर्माता (परमेश्वर का राज्य और राज्य निर्माण)

समतल भूमि

परमेश्वर का भवन

प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई

चंगाई और छुटकारे की सेवकाई करना

आत्मा के वरदान

विवाह और परिवार

संतों को तैयार करना और व्यावसायिक स्थानों में परिवर्तन

उच्च क्षेत्र

अतिरिक्त जानकारी एवम् मसीही अगुवों की सभा के लिए विषयों की वर्तमान सूची हेतु, कृपया इस वेबसाईट को भेंट दें: apcwo.org/CLC

मसीही अगुवों की सभा की समय-सारणी एवं योजना के लिए कृपया हमें इस पते पर ईमेल करें: contact@apcwo.org

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4, 5; इब्रानियों 2:3, 4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: www.apcwo.org/locations या इस पते पर ई-मेल भेजें: contact@apcwo.org

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23)। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्ेरमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया - आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है - जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रे. काम 10:43)।

कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने मंे आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों मैं भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्ेरम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

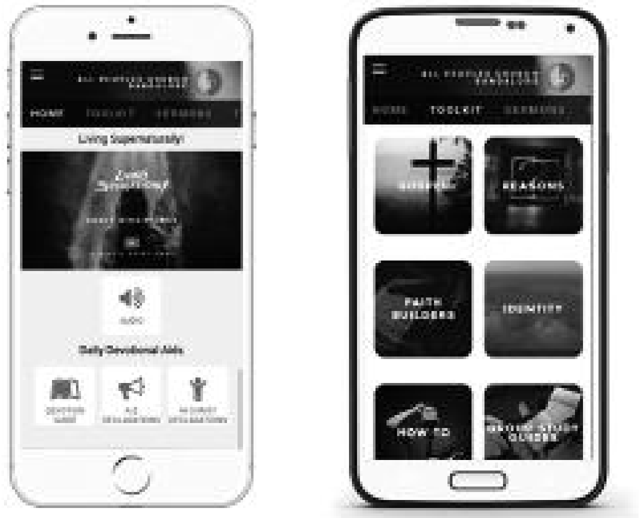

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

विनामूल्य ऐप डाऊनलोड करें

ऐप में या गुगल प्ले स्टोर में “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” ढूंढ़ें।

प्रतिदिन 5 मिनिट की वीडिओ के माध्यम से आराधना

प्रतिदिन बाइबल वाचन और प्रेयर गाईड

5 मिनिटों का उपदेश का सारांश

विश्व में उन्नति के लिए विभिन्न विषयों पर पवित्र शास्त्र की टूल किट तथा सुसमाचार सुनाने हेतु जानकारी

उपदेश, उपदेश की टिप्पणियों, टी. वी. कार्यक्रम, पुस्तकें, संगीत, और बहुत कुछ।

यदि यह आपको पसंद आता है, तो दूसरों को बताएं।

प्रभाव डालने हेतु निर्माण करें : यह दर्शन बांटें

निर्माण करें

बैंगलोर में स्थित ए पी सी वल्ड आऊटरीच ॲण्ड इक्विपिंग सेंटर
विभिन्न राष्ट्रों में स्थित मसीह की मण्डली की सेवा हेतु
विश्वस्तरीय अत्याधुनिक प्रशिक्षण केन्द्र और मिशन संस्थान होगा।
प्रभाव डालना

स्थानीय और विश्व स्तर पर, मसीही सेवकों की नई पीढ़ी को सुसज्जित करने, भेजने और सहायता करने हेतु, हम अग्रणी तंत्रविज्ञान और साधनों का लाभ उठाते हुए आत्मा से अभिषिक्त, बाइबल आधारित प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। इस सुविधा में निवासी और अनिवासी विद्यार्थियों के लिए बाइबल कॉलेज होगा जिसमें लाईव्ह और ऑफ-लाईन व्याख्यानों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा (डिस्टन्स लर्निंग) हेतु सहायता दी जाएगी और एक मीडिया सेंटर होगा ताकि सम्बंधित विश्व के लोगों तक पहुंचा जा सके।

इस सुविधा में आराधना केन्द्र, बाल तथा युवा केन्द्र और 24ग7 प्रार्थना केन्द्र का समावेश होगा।

हम आपको निमंत्रित करते हैं कि जैसे जैसे परमेश्वर अगुवाई तथा सामर्थ प्रदान करता है, आप इस दर्शन में किसी भी कीमत के रूप में योगदान दें और हमारे साथ प्रतिभागिता करें और प्रभाव डालने हेतु निर्माण करने में हमारी सहायता करें। बैंगलोर में स्थित ए पी सी वल्ड आऊटरीच ॲण्ड इक्विपिंग सेंटर हेतु तथा जारी बिल्ड टू इम्पैक्ट (प्रभव डालने हेतु निर्माण) प्रोजेक्ट के लिए अपने दान भेजते समय, कृपया निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करें:

Wire Transfer

खाते का नाम: **All Peoples Church Building Fund AC**
Account No: 520101021447450
IFSC Code: CORP0000656
Bank Name: Corporation Bank
Branch Name: R.T Nagar Branch, Bangalore

Cheques

All Peoples Church Building Fund AC के नाम में
चेक्स इस पते पर भेजें:
All Peoples Church,
#319, 2nd Floor, 7th Main, 2nd Block HRBR Layout,
Kalyan Nagar, Bangalore 560043, Karnataka, India

हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप भारत में स्थित बैंक से अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते में डाल सकते हैं। हमारे पास विदेशी भेंटों को स्वीकार करने की सुविधा नहीं है। आप अपने प्रश्नों के लिए इस पते पर ई-मेल भेजें: **buildtoimpact@apcwo.org**
प्रोजेक्ट के सम्बंध में और अन्य जानकारी के लिए इस स्थान को भेंट दें: apcwo.org/buildtoimpact

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं - सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ। एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

Theology and Christian Ministry (C.Th.) में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Theology and Christian Ministry (D.Th.) में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठमें दो वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम्यक्रम
Bachelor in Theology and Christian Ministry (B.Th.) में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

हर सप्ताह के दिन, सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9 से दोपहर 1 बजे तक कक्षाएं ली जाती हैं, विद्यार्थी, नौकरीपेशा लोग, और गृहिणियां सभी इन कक्षाओं में भाग ले सकते हैं और 1 बजे के बाद अपने काम पर जा सकते हैं। वहीं रहने की इच्छा रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग हॉस्टेल सुविधाएं हैं। विद्यार्थी हर सप्ताह दो से पांच बजे तक क्षेत्रीय कार्य, विशेष सेमिनारों में, दोपहर के समय में प्रार्थना और आराधना में समय व्यतीत करते हैं। दोपहर की सभाएं घर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक हैं। सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे सप्ताह के अंत मंे एक या उससे अधिक स्थानीय कलीसियाओं में सेवा करें।

कॉलेज, विभिन्न कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए, और आवेदन पत्र डाऊनलोड करने के लिए कृपया इस साईट को भेंट दें:
apcwo.org/biblecollege

एपीसी-बीसी मान्यता प्राप्त
नेशन्स एसोसिएशन फॉर थियोलॉजिकल
एक्रेडिटेशन (नाटा;
द्वारा मान्यता प्राप्त है

संपूर्ण पवित्र शास्त्र में परमेश्वर अपने लोगों को उसके वचन बोलने की आज्ञा देता है। हमारे हृदयों में विश्वास के साथ हमारे मुंह से निकलने वाले शब्दों के रूप में कहे गए उसके वचन उसकी रचनात्मक, आश्चर्यकर्म करने वाली सामर्थ को हमारे स्वाभाविक या प्राकृतिक क्षेत्र में जारी करते हैं। हमारे मुंह से निकलने वाले शब्दों के रूप में कहा गया उसका वचन दुश्मन के विरोध में हमारा हथियार बन जाता है।

हम हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य पर परमेश्वर का वचन बोलने के द्वारा हमारी दुनिया को आकार दे सकते हैं। हमें सभी परिस्थितियों में हर समय विश्वास से भरे शब्दों को बोलना सीखना है। विश्वास में बोलना पहाड़ या वर्तमान तूफान की भयानकता के अस्तित्व को इन्कार करना नहीं है। बल्कि विश्वास पहाड़ से बोलता है और मार्ग में बने रहने के उसके अधिकार का इन्कार करता है। विश्वास हवाओं से बोलता है और उपद्रव मचाने के उसके अधिकार को छीन लेता है, उसके बजाय उस शांति और नीरवता के लिए मार्ग बनता है जो परमेश्वर जारी करता है। विश्वास बीमारी से बोलता है और उसे छोड़ जाने के लिए और परमेश्वर की ओर से आने वाली चंगाई और स्वास्थ्य के लिए मार्ग बनाता है।

यह पुस्तक बाइबल की इस सच्चाई में आपको दृढ़ करेगी और हर समय, आपके विश्वास को बोलने हेतु आपको प्रेरित करेगी!